॥ दुर्गा सप्तशती ॥

अनुक्रमाणिका

1.	दुर्गा सप्तशती पाठ विधि	02	25.	सप्तशती न्यास	81
2.	ब्रह्मादि शाप विमोचनम्	04	26.	ऋग्वेदोक्तं देवी सूक्तम्	82
3.	देव्या कवचम्	06	27.	तन्त्रोक्तं देवी सूक्तम्	83
4.	अर्गला स्तोत्रम्	10	28.	प्रधानिकं रहस्यम्	85
5.	कीलकम्	12	29.	वैकृतिकं रहस्यम्	88
6.	वेदोक्तं रात्रि सूक्तम्	14	30.	मूर्ति रहस्यम्	91
7.	तन्त्रोक्तं रात्रि सूक्तम्	15	31.	क्षमा प्रार्थना	93
8.	देव्यथर्वशीर्षम्	16	32.	दुर्गा मानस पूजा	94
9.	नवार्ण विधि	19	33.	दुर्गा द्वात्रिंशन्नाम माला	97
10.	सप्तशती न्यास	21	34.	देव्यपराध क्षमापन स्तोत्रम्	98
11.	प्रथमो अध्याय	22	35.	सिद्ध कुंजिका स्तोत्रम्	100
12.	द्वितीयो अध्याय	29	36.	सप्तशती के सिद्ध सम्पुट मंत्र	102
13.	तृतीयो अध्याय	35	37.	दुर्गा जी की आरती	111
14.	चतुर्थो अध्याय	39	38.	अम्बा जी की आरती	112
15.	पंचमो अध्याय	44	39.	अम्बा जी की आरती	113
16.	षष्ठो अध्याय	51	40.	दुर्गा अष्टोत्तरशत नाम स्तोत्रम्	114
17.	सप्तमो अध्याय	53	41.	दुर्गा अष्टोत्तरशत नाम	116
18.	अष्टमो अध्याय	56	42.	सप्तश्लोकी दुर्गा	117
19.	नवमो अध्याय	61	43.	महिषासुर मर्दिनि स्तोत्रम्	118
20.	दशमो अध्याय	65	44.	भवान्यष्टकम्	121
21.	एकादशो अध्याय	68	45.	शतचण्डी प्रयोग	122
22.	द्वादशो अध्याय	73	46.	नव,शत,सहस्त्र,लक्षचण्डी हवन प्रयोग	126
23.	त्रयोदशो अध्याय	77	47.	सप्तशती मन्त्र हवन विधानम्	127
24.	उपसंहार	79	48.	दुर्गा सम्पूट पाठ विधि	130

॥ श्री दुर्गा सप्तशती संपूर्ण पाठ विधि ॥

- पवित्रीकरण — **ॐ पवित्रः अपवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपिवा ।**
  यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाह्यभ्यन्तर शुचिः॥
- आसन शुद्धि — **पृथ्विति मंत्रस्य मेरुपृष्ठः ग षिः सुतलं छन्दः**
  कूर्मोदेवता आसने विनियोगः ॥
- पृथ्वी पूजन — **ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।**
  त्वंच धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥ पृथिव्यै नमः आधारशक्तये नमः
- आचमन — **ॐ ऐं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ।**
  - **ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ।**
  - **ॐ क्लीं शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ।**
  - **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ।**
- पवित्री धारण — **पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ।**
- संकल्प — ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः । ॐ नमः परमात्मने, श्री पुराण-पुरुषोत्तमस्य श्री विष्णो-राज्ञया प्रवर्त-मानस्याद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीय-परार्द्धे श्री श्वेत-वाराह-कल्पे वैवस्वत-मन्वन्तरे-अष्टाविंशति-तमे कलियुगे प्रथम-चरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत-ब्रह्मावर्तैकदेशे पुण्य-प्रदेशे बौद्धावतारे वर्तमाने यथा-नाम-संवत्सरे अमुकायने महा-मांगल्य-प्रदे मासानाम् उत्तमे अमुक-मासे, अमुक-पक्षे, अमुक-तिथौ, अमुक-वासरान्वितायाम्, अमुक-नक्षत्रे, अमुक-राशि-स्थिते सूर्ये, अमुकामुक-राशि स्थितेषु चन्द्र-भौम-बुध-गुरु-शुक्र-शनिषु सत्सु शुभे-योगे शुभ-करणे एवं गुण-विशेषण-विशिष्टायां शुभ-पुण्य-तिथौ सकल-शास्त्र श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल-प्राप्ति-कामः अमुक-गोत्रोत्पन्नः अमुक-नाम अहं ममात्मनः सपुत्र-स्त्री-बान्धवस्य श्री नवदुर्गानुग्रहतो ग्रह-कृत, राज-कृत, सर्व-विध-पीडा-निवृत्ति पूर्वकं नैरुज्य-दीर्घायुः पुष्टि-धन-धान्य-समृद्ध्यर्थं श्री नवदुर्गा प्रसादेन सर्वापन्निवृत्ति सर्वाभीष्ट-फलावाप्ति धर्मार्थ-काम-मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्धि द्वारा श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी महासरस्वती देवता प्रीत्यर्थं शापोद्धार-पुरस्परं कवच-अर्गला-कीलक पाठ- वेदतन्त्रोक्त रात्रिसूक्त-पाठ देव्यथर्वशीर्ष-पाठ न्यास-विधि सहित नवार्ण-जप सप्तशती-न्यास-ध्यान सहित, चरित्र-सम्बन्धि-विनियोग-न्यास-ध्यान पूर्वकं च 'मार्कण्डेय उवाच ॥ सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः।' इत्याद्यारभ्य 'सावर्णिर्भविता मनुः' इत्यन्तं दुर्गा-सप्तशती-पाठं तदन्ते न्यास-विधि-सहित नवार्णमन्त्र जपं वेद-तन्त्रोक्त-देवी-सूक्त पाठं रहस्यत्रयपठनं शापोद्धारादिकं च किरष्ये / करिष्यामि ।

- पुस्तक पूजा — अब पंचोपचार की विधि से पुस्तक की पूजा करें।
  - **ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।**
    नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥
  - **ध्यात्वा देवीं पञ्चपूजां कृत्वा योन्या प्रणम्य च।**
    आधारं स्थाप्य मूलेन स्थापयेत्तत्र पुस्तकम्॥

- शापोद्धार — इसके बाद शापोद्धार करना चाहिए।
  - **'ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्रां क्रीं चण्डिकादेव्यै शापनाशानुग्रहं कुरु कुरु स्वाहा।**
  - इस मंत्र का आदि और अन्त में सात बार जप करें। यह शापोद्धार मंत्र कहलाता है।

- उत्कीलन मन्त्र — इसके अनन्तर उत्कीलन मन्त्र का जाप किया जाता है।
  - **ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशति चण्डिके उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा।**
  - इसका जप आदि और अन्त में इक्कीस-इक्कीस बार होता है।

- मृत-संजीवनी — इसके बाद मृतसंजीवनी करना चाहिए।
  - **ॐ ह्रीं ह्रीं वं वं ऐं ऐं मृतसंजीवनि विद्ये मृतमुत्थापयोत्थापय क्रीं ह्रीं ह्रीं वं स्वाहा।**
  - इसके जप के पश्चात् आदि और अन्त में सात-सात बार मृतसंजीवनी विद्या का जाप करना चाहिए।

- शाप-विमोचन मंत्र — मारीचकल्प के अनुसार सप्तशती-शापविमोचन का मन्त्र यह है।
  - **ॐ श्रीं श्रीं क्लीं हूं ॐ ऐं क्षोभय मोहय उत्कीलय उत्कीलय उत्कीलय ठं ठं।**
  - इस मन्त्र का आरंभ में ही १०८ बार जाप करना चाहिए। पाठ के अन्त में नहीं।

॥ ब्रह्मादि शाप विमोचनम् ॥

- चण्डिका शाप विमोचन मंत्र के पाठ को करने से देवी की पूजा में की गयी किसी भी प्रकार त्रुटि (भूल) से मिला श्राप खत्म हो जाता है। इस शाप विमोचन मन्त्र का आरंभ में ही पाठ करना चाहिए।

- विनियोग ॐ अस्य श्री चण्डिकाया। ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र शाप विमोचन मन्त्रस्य। वसिष्ठ-नारद संवाद। सामवेदाधिपति। ब्रह्माण ऋषयः। सर्वैश्वर्यकारिणी श्रीदुर्गा देवता। चरित्र-त्रयं बीजं। ह्री शक्तिः। त्रिगुणात्म स्वरूप चण्डिका शाप विमुक्तौ मम संकल्पित कार्य सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

  - **ॐ (ह्रीं) रीं रेतःस्वरूपिण्यै मधुकैटभ-मर्दिन्यै।**
    ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥ १॥
  - **ॐ श्रीं बुद्धि-स्वरूपिण्यै महिषासुर-सैन्य-नाशिन्यै।**
    ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥ २॥
  - **ॐ रं रक्त-स्वरूपिण्यै महिषासुर-मर्दिन्यै।**
    ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥ ३॥
  - **ॐ क्षुं क्षुधा-स्वरूपिण्यै देव-वन्दितायै।**
    ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥ ४॥
  - **ॐ छां छाया-स्वरूपिण्यै दूत-संवादिन्यै।**
    ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥ ५॥
  - **ॐ शं शक्ति-स्वरूपिण्यै धूम्रलोचन-घातिन्यै**
    ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥ ६॥
  - **ॐ तृं तृषा-स्वरूपिण्यै चण्ड-मुण्ड वध-कारिण्यै।**
    ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥ ७॥
  - **ॐ क्षां क्षान्ति-स्वरूपिण्यै रक्त-बीज वध-कारिण्यै।**
    ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥ ८॥
  - **ॐ जां जाति-स्वरूपिण्यै निशुम्भ वध-कारिण्यै।**
    ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥ ९॥
  - **ॐ लं लज्जा-स्वरूपिण्यै शुम्भ वध-कारिण्यै।**
    ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥१०॥

- ॐ शां शान्ति-स्वरूपिण्यै देव-स्तुत्यै ।
  ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥११॥
- ॐ श्रं श्रद्धा-स्वरूपिण्यै सकल-फल-दात्र्यै ।
  ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥१२॥
- ॐ कां कान्ति-स्वरूपिण्यै राज-वर-प्रदायै ।
  ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥१३॥
- ॐ मां मातृ-स्वरूपिण्यै अनर्गल-महिम-सहितायै ।
  ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥१४॥
- ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै सं सर्वैश्वर्य-कारिण्यै ।
  ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥१५॥
- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिवायै अभेद्य-कवच-स्वरूपिण्यै
  ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥१६॥
- ॐ क्रीं काल्यै कालि ह्रीं फट् स्वाहायै ऋग्वेद-स्वरूपिण्यै ।
  ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥१७॥
- ॐ ऐं ह्री क्लीं महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती ।
  स्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः ॥ ॥१८॥
- इत्येवं हि महामन्त्रान् पठित्वा परमेश्वर ।
  चण्डीपाठं दिवा रात्रौ कुर्यादेव न संशयः ॥ ॥१९॥
- एवं मन्त्रं न जानाति चण्डीपाठं करोति यः ।
  आत्मानं चैव दातारं क्षीणं कुर्यान्न संशयः ॥ ॥२०॥

॥ इति रुद्रयामले ब्रह्मादि शाप विमोचनम् समाप्तम् ॥

- इस प्रकार शापोद्धार करने के अनन्तर अन्तर्मातृका बहिर्मातृका आदि न्यास करें ।
- देवी का ध्यान करके रहस्य में बताए अनुसार नौ कोष्ठों वाले यन्त्र में महालक्ष्मी आदि का पूजन करें ।
- दुर्गा पाठ के छः मुख्य अंग है । कवच, अर्गला, कीलक, प्राधानिक रहस्य, वैकृतिक रहस्य, मूर्ति रहस्य ।
- चिदम्बर संहिता में पहले अर्गला, फिर कीलक तथा अन्त में कवच पढ़ने का विधान है ।
- योगरत्नावली में पाठ का क्रम इससे भिन्न है । उसमें कवच को बीज, अर्गला को शक्ति तथा कीलक को कीलक संज्ञा दी गई है । यहाँ इसी क्रम का अनुसरण किया गया है ।

॥ अथ श्री देव्याः कवचम् ॥

- **विनियोग** ॐ अस्य श्रीचण्डी कवचस्य ब्रह्मा ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । चामुण्डा देवता । अङ्गन्यासोक्तमातरो बीजम् । दिग्बन्ध देवतास्तत्त्वम् । श्री जगदम्बा प्रीत्यर्थे सप्तशती पाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः।

- **ॐ नमश्चण्डिकायै**
- **मार्कण्डेय उवाच**
- ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम् ।
  यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह ॥ ॥ १॥
- **ब्रह्मोवाच**
- अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्व-भूतोपकारकम् ।
  देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने ॥ ॥ २॥
- प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी ।
  तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥ ॥ ३॥
- पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च ।
  सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम् ॥ ॥ ४॥
- नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः ।
  उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना ॥ ॥ ५॥
- अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे ।
  विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः ॥ ॥ ६॥
- न तेषां जायते किंचिद शुभं रणसंकटे ।
  नापदं तस्य पश्यामि शोक दुःख भयं न हि ॥ ॥ ७॥
- यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते ।
  ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः ॥ ॥ ८॥
- प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना ।
  ऐन्द्री गजसमारुढा वैष्णवी गरुडासना ॥ ॥ ९॥
- माहेश्वरी वृषारुढा कौमारी शिखि वाहना ।
  लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया ॥ ॥१०॥
- श्वेत-रुप-धरा देवी ईश्वरी वृषवाहना ।
  ब्राह्मी हंस-समारुढा सर्वा भरण भूषिता ॥ ॥११॥

- इत्येता मातरः सर्वाः सर्व योग समन्विताः ।
  नाना भरण शोभाढ्या नाना रत्नो पशोभिताः ॥ ॥१२॥
- दृश्यन्ते रथमारुढा देव्यः क्रोध-समाकुलाः ।
  शङ्खं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम् ॥ ॥१३॥
- खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च ।
  कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्ग मायुध मुत्तमम् ॥ ॥१४॥
- दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च ।
  धारयन्त्या युधानीत्थं देवानां च हिताय वै ॥ ॥१५॥
- नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोर पराक्रमे ।
  महाबले महोत्साहे महाभय विनाशिनि ॥ ॥१६॥
- त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनि ।
  प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्या मग्निदेवता ॥ ॥१७॥
- दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्ग धारिणी ।
  प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी ॥ ॥१८॥
- उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्यां शूलधारिणी ।
  ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेद धस्ताद् वैष्णवी तथा ॥ ॥१९॥
- एवं दश दिशो रक्षे च्चामुण्डा शववाहना ।
  जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः ॥ ॥२०॥
- अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता ।
  शिखामुद्योतिनि रक्षे दुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता ॥ ॥२१॥
- मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद् यशस्विनी ।
  त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके ॥ ॥२२॥
- शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी।
  कपोलौ कालिका रक्षेत् कर्णमूले तु शांकरी ॥ ॥२३॥
- नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका ।
  अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती ॥ ॥२४॥
- दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु चण्डिका ।
  घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके ॥ ॥२५॥
- कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्वमङ्गला ।
  ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी ॥ ॥२६॥

- नीलग्रीवा बहि:कण्ठे नलिकां नलकूबरी ।
  स्कन्धयो: खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्र-धारिणी ॥ ॥२७॥
- हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च ।
  नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत् कुक्षौ रक्षेत् कुलेश्वरी ॥ ॥२८॥
- स्तनौ रक्षेन्महादेवी मन: शोक विनाशिनी।
  हृदये ललिता देवी उदरे शूल धारिणी ॥ ॥२९॥
- नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा ।
  पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिष वाहिनी ॥ ॥३०॥
- कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी ।
  जङ्घे महाबला रक्षेत् सर्व-काम-प्रदायिनी ॥ ॥३१॥
- गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी ।
  पादाङ्गुलीषु श्री रक्षेत् पादा-धस्तल-वासिनी ॥ ॥३२॥
- नखान् दंष्ट्रा कराली च केशांश्चैवोर्ध्व केशिनी ।
  रोम कूपेषु कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा ॥ ॥३३॥
- रक्त-मज्जा-वसा-मांसान् यस्थि मेदांसि पार्वती ।
  अन्त्राणि काल रात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी ॥ ॥३४॥
- पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडा मणिस्तथा ।
  ज्वालामुखी नखज्वाला मभेद्या सर्वसंधिषु ॥ ॥३५॥
- शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा ।
  अहंकारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी ॥ ॥३६॥
- प्राणापानौ तथा व्यान मुदानं च समानकम् ।
  वज्रहस्ता च मे रक्षेत् प्राणं कल्याण शोभना ॥ ॥३७॥
- रसे रुपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी ।
  सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन् नारायणी सदा ॥ ॥३८॥
- आयू रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी ।
  यश: कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी ॥ ॥३९॥
- गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत् पशून्मे रक्ष चण्डिके ।
  पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी ॥ ॥४०॥
- पन्थानं सुपथा रक्षेन् मार्गं क्षेमकरी तथा ।
  राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वत: स्थिता ॥ ॥४१॥

- रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु।
  तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी ॥ ॥४२॥
- पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः।
  कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति ॥ ॥४३॥
- तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः।
  यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।
  परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान् ॥ ॥४४॥
- निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्व पराजितः।
  त्रैलोक्ये तु भवेत् पूज्यः कवचेनावृतः पुमान् ॥ ॥४५॥
- इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम्।
  यः पठेत् प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः ॥ ॥४६॥
- दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्व पराजितः।
  जीवेद् वर्षशतं साग्रमप मृत्यु विवर्जितः॥ ॥४७॥
- नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूता-विस्फोट-कादयः।
  स्थावरं जङ्गमं चैव कृत्रिमं चापि यद्विषम् ॥ ॥४८॥
- अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले।
  भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः ॥ ॥४९॥
- सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा।
  अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः ॥ ॥५०॥
- ग्रह-भूत-पिशाचाश्च यक्ष-गन्धर्व-राक्षसाः।
  ब्रह्म-राक्षस-वेताला: कूष्माण्डा भैरवादयः ॥ ॥५१॥
- नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते।
  मानोन्नतिर्भवेद् राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम् ॥ ॥५२॥
- यशसा वर्धते सोऽपि कीर्तिं मण्डित भूतले।
  जपेत् सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा ॥ ॥५३॥
- यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैल वन काननम्।
  तावत्तिष्ठति मेदिन्यां संततिः पुत्र पौत्रिकी ॥ ॥५४॥
- देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम्।
  प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामाया प्रसादतः ॥ ॥५५॥
- लभते परमं रुपं शिवेन सह मोदते ॥ ॐ ॥ ॥५६॥

॥ इति देव्याः कवचं सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ अर्गला स्तोत्रम् ॥

- **विनियोग** ॐ अस्य श्री अर्गला स्तोत्र मन्त्रस्य । विष्णु र्ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । श्री महालक्ष्मीर्देवता । श्री जगदम्बा प्रीत्यर्थे सप्तशती पाठांगत्वेन जपे विनियोगः ।

  - **ॐ नमश्चण्डिकायै**
  - **मार्कण्डेय उवाच**
  - **ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ।**
    दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥ ॥ १॥
  - **जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि ।**
    जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते ॥ ॥ २॥
  - **मधु-कैटभ विद्र विविधातृ वरदे नमः ।**
    रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥ ३॥
  - **महिषासुर निर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः ।**
    रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥ ४॥
  - **रक्त-बीज वधे देवि चण्ड-मुण्ड विनाशिनि ।**
    रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥ ५॥
  - **शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि ।**
    रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥ ६॥
  - **वन्दिताङ्घ्रि युगे देवि सर्व-सौभाग्य दायिनि ।**
    रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥ ७॥
  - **अचिन्त्य रूप चरिते सर्व-शत्रु विनाशिनि ।**
    रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥ ८॥
  - **नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे ।**
    रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥ ९॥
  - **स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके व्याधि नाशिनि ।**
    रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥१०॥
  - **चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः ।**
    रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥११॥

- देहि सौभाग्य मारोग्यं देहि मे परमं सुखम् ।
  रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥१२॥
- विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बल मुच्चकै:।
  रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥१३॥
- विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम् ।
  रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥१४॥
- सुरा-सुर शिरो रत्न निघृष्ट चरणेऽम्बिके ।
  रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥१५॥
- विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु ।
  रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥१६॥
- प्रचण्ड दैत्य दर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे ।
  रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥१७॥
- चतुर्भुजे चतुर्वक्त्र संसुते परमेश्वरि ।
  रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥१८॥
- कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके ।
  रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥१९॥
- हिमाचल सुतानाथ संस्तुते परमेश्वरि ।
  रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥२०॥
- इन्द्राणी पतिसद्भाव पूजिते परमेश्वरि ।
  रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥२१॥
- देवि प्रचण्ड दोर्दण्ड दैत्यदर्प विनाशिनि ।
  रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥२२॥
- देवि भक्तजनोद्दाम दत्ता नन्दो दयेऽम्बिके ।
  रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥२३॥
- पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानु सारिणीम् ।
  तारिणि दुर्ग संसार सागरस्य कुलोद्भवाम् ॥ ॥२४॥
- इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः ।
  स तु सप्तशती संख्या वरमाप्नोति सम्पदाम् ॥ ॥२५॥

॥ इति देव्या अर्गलास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ कीलकम् ॥

- **विनियोग** ॐ अस्य श्री कीलक मन्त्रस्य शिव ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । श्री महा सरस्वती देवता । श्री जगदम्बा प्रीत्यर्थे सप्तशती पाठांगत्वेन जपे विनियोगः ।

  - **ॐ नमश्चण्डिकायै**
  - **मार्कण्डेय उवाच**
  - ॐ विशुद्ध ज्ञान देहाय त्रिवेदी दिव्य चक्षुषे ।
    श्रेयःप्राप्ति निमित्ताय नमः सोमार्ध धारिणे ॥ ॥ १॥
  - सर्व मेत द्विजानीयान् मन्त्राणामभि कीलकम् ।
    सोऽपि क्षेम-मवाप्नोति सततं जाप्यतत्परः ॥ ॥ २॥
  - सिद्ध्यन्त्युच् चाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यपि ।
    एतेन स्तुवतां देवीं स्तोत्र मात्रेण सिद्ध्यति ॥ ॥ ३॥
  - न मन्त्रो नौषधं तत्र न किञ्चि दपि विद्यते ।
    विना जाप्येन सिद्ध्येत सर्व-मुच्चाट-नादिकम् ॥ ॥ ४॥
  - समग्राण्यपि सिद्ध्यन्ति लोक-शङ्का-मिमां हरः ।
    कृत्वा निमन्त्रया-मास सर्व-मेव-मिदं शुभम् ॥ ॥ ५॥
  - स्तोत्रं वै चण्डिका यास्तु तच्च गुप्तं चकार सः ।
    समाप्तिर्न च पुण्यस्य तां यथा-वन् निमन्त्रणाम् ॥ ॥ ६॥
  - सोऽपि क्षेम-मवाप्नोति सर्वमेव न संशयः ।
    कृष्णायां वा चतुर्दश्याम् अष्टम्यां वा समाहितः ॥ ॥ ७॥
  - ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसीदति ।
    इत्थं रूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम् ॥ ॥ ८॥
  - यो निष्कीलां विधायैनां नित्यं जपति संस्फुटम् ।
    स सिद्धः स गणः सोऽपि गन्धर्वो जायते नरः ॥ ॥ ९॥
  - न चैवाप्यटतस्तस्य भयं क्वापीह न जायते ।
    नाप-मृत्यु-वशं याति मृतो मोक्षमाप्नुयात् ॥ ॥१०॥

- ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत न कुर्वाणो विनश्यति ।
  ततो ज्ञात्वैव सम्पन्नमिदं प्रारभ्यते बुधैः ॥ ॥११॥

- सौभाग्यादि च यत्किञ्चिद् दृश्यते ललनाजने ।
  तत्सर्वं तत्प्रसादेन तेन जाप्यमिदं शुभम् ॥ ॥१२॥

- शनैस्तु जप्य मानेऽस्मिन् स्तोत्रे सम्पत्ति रुच्चकैः।
  भवत्येव समग्रापि ततः प्रारभ्यमेव तत् ॥ ॥१३॥

- ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्यरोग्य सम्पदः ।
  शत्रुहानिः परो मोक्षः स्तूयते सा न किं जनैः ॥ ॥१४॥

॥ इति देव्याः कीलक स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ वेदोक्तं रात्रिसूक्तम् ॥

- **विनियोग** ॐ रात्रीत्याद्यष्टर्चस्य सूक्तस्य कुशिकः सौभरो रात्रिर्वा भारद्वाजो ऋषिः । रात्रिर्देवता । गायत्री छन्दः । देवी माहात्म्य पाठे विनियोगः।

- **ॐ रात्री व्यख्यदायती पुरुत्रा देव्यक्षभिः ।**
  विश्वार अधि श्रियोऽधित ॥ ॥ १॥

- **ओर्वप्रा अमर्त्यानिवतो देव्युद्वतः ।**
  ज्योतिषा बाधते तमः ॥ ॥ २॥

- **निरु स्वसारमस्कृतोषसं देव्यायती ।**
  अपेदु हासते तमः ॥ ॥ ३॥

- **सा नो अद्य यस्या वयं नि ते यामन्नविक्ष्महि ।**
  वृक्षे न वसतिं वयः ॥ ॥ ४॥

- **नि ग्रामासो अविक्षत नि पद्वन्तो नि पक्षिणः ।**
  नि श्येनासश्चिदर्थिनः ॥ ॥ ५॥

- **यावया वृक्यं वृकं यवय स्तेनमूर्म्ये ।**
  अथा नः सुतरा भव ॥ ॥ ६॥

- **उप मा पेपिशत्तमः कृष्णं व्यक्तमस्थित ।**
  उष ऋणेव यातय ॥ ॥ ७॥

- **उप ते गा इवाकरं वृणीष्व दुहितर्दिवः ।**
  रात्रि स्तोमं न जिग्युषे ॥ ॥ ८॥

॥ इति ऋग्वेदोक्तं रात्रिसूक्तं समाप्तम् ॥

॥ अथ तन्त्रोक्तं रात्रि सूक्तम् ॥

- ॐ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थिति-संहार-कारिणीम् ।
  निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥ ॥ १॥

• **ब्रह्मोवाच** त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका ।
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता ॥ ॥ २॥

- अर्धमात्रा स्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः।
  त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा ॥ ॥ ३॥
- त्वयैतद् धार्यते विश्वं त्वयैतत् सृज्यते जगत् ।
  त्वयैतत् पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ॥ ॥ ४॥
- विसृष्टौ सृष्टिरुपां त्वं स्थितिरूपा च पालने ।
  तथा संहृति-रूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ॥ ॥ ५॥
- महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः ।
  महामोहा च भवती महादेवी महासुरी ॥ ॥ ६॥
- प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रय विभाविनी ।
  कालरात्रि-र्महारात्रि-र्मोहरात्रिश्च दारुणा ॥ ॥ ७॥
- त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोध लक्षणा ।
  लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च ॥ ॥ ८॥
- खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ।
  शङ्खिनी चापिनी बाण भुशुण्डी परिघायुधा ॥ ॥ ९॥
- सौम्या सौम्य तराशेष-सौम्येभ्यस्त्वति सुन्दरी ।
  परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ॥ ॥१०॥
- यच्च किञ्चित् क्वचिद्वस्तु सदसद्वा खिलात्मिके ।
  तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा ॥ ॥११॥
- यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत् पात्यत्ति यो जगत् ।
  सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतु मिहेश्वरः ॥ ॥१२॥
- विष्णुः शरीर ग्रहण महमीशान एव च ।
  कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत् ॥ ॥१३॥
- सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता ।
  मोहयैतौ दुराधर्षा वसुरौ मधुकैटभौ ॥ ॥१४॥
- प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयता मच्युतो लघु ।
  बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥ ॥१५॥

॥ इति रात्रिसूक्तम् समाप्तम् ॥

॥ श्री देव्यथर्वशीर्षम् ॥

- ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थु: कासि त्वं महादेवीति ॥ ॥ १॥

- साब्रवीत् - अहं ब्रह्मस्वरूपिणी ।
  मत्त: प्रकृति पुरुषात्मकं जगत् । शून्यं चाशून्यं च ॥ ॥ २॥

- अहमानन्दा-नानन्दौ । अहं विज्ञाना-विज्ञाने । अहं ब्रह्मा-ब्रह्मणी वेदितव्ये ।
  अहं पञ्चभूतान्य पञ्चभूतानि । अहमखिलं जगत् ॥ ॥ ३॥

- वेदोऽहम-वेदोऽहम् । विद्याहम-विद्याहम् । अजाहमनजाहम् ।
  अधश्चोमर्ध्वं च तिर्यक्चाहम् ॥ ॥ ४॥

- अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि । अहमादित्यै रुत विश्वदेवै: ।
  अहं मित्रा वरुणा वुभौ बिभर्मि । अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ ॥ ॥ ५॥

- अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि ।
  अहं विष्णु मुरुक्रमं ब्रह्माण मुत प्रजापतिं दधामि ॥ ॥ ६॥

- अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते ।
  अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् ।
  अहं सुवे पितर-मस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्त: समुद्रे ।
  य एवं वेद । स दैवीं सम्पद माप्नोति ॥ ॥ ७॥

- ते देवा अब्रुवन्

- नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नम:।
  नम: प्रकृत्यै भद्रायै नियता: प्रणता: स्म ताम् ॥ ॥ ८॥

- तामग्नि वर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्म-फलेषु जुष्टाम् ।
  दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्या महेऽसुरान्ना शयित्र्यै ते नम: ॥ ॥ ९॥

- देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वारूपा: पशवो वदन्ति ।
  सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु ॥ ॥१०॥

- कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्द मातरम् ।
  सरस्वती मदितिं दक्षदुहितरं नमाम: पावनां शिवाम् ॥ ॥११॥

- महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि ।
  तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥ ॥१२॥

- अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव ।
  तां देवा अन्व जायन्त भद्रा अमृत बन्धवः ॥ ॥१३॥

- कामो योनिः कमला वज्र-पाणिर्गुहा हसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः ।
  पुनर्गुहा सकला मायया च पुरूच्यैषा विश्व माता दिविद्योम् ॥ ॥१४॥

- एषाऽऽत्मशक्तिः । एषा विश्व-मोहिनी । पाशाङ्कुश धनुर्बाणधरा ।
  एषा श्रीमहाविद्या । य एवं वेद स शोकं तरति ॥ ॥१५॥

- नमस्ते अस्तु भगवति मातरस्मान् पाहि सर्वतः ॥ ॥१६॥

- सैषाष्टौ वसवः । सैषैकादश रुद्राः । सैषा द्वादशादित्याः ।
  सैषा विश्वेवदेवाः सोमपा असोमपाश्च ।
  सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाचा यक्षाः सिद्धाः ।
  सैषा सत्त्व-रजस्तमांसि । सैषा ब्रह्म-विष्णु-रुद्र रूपिणी ।
  सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः । सैषा ग्रह-नक्षत्र ज्योतींषि ।
  कला काष्ठादि कालरूपिणी । तामहं प्रणौमि नित्यम् ॥

- पापापहारिणीं देवीं भुक्ति-मुक्ति प्रदायिनीम् ।
  अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शिवाम् ॥ ॥१७॥

- वियदीकार संयुक्तं वीतिहोत्र समन्वितम् ।
  अर्धेन्दु लसितं देव्या बीजं सर्वार्थ साधकम् ॥ ॥१८॥

- एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः शुद्ध चेतसः ।
  ध्यायन्ति परमानन्द मया ज्ञानाम्बुराशयः ॥ ॥१९॥

- वाङ्माया ब्रह्मसूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्र-समन्वितम् ।
  सूर्योऽवाम श्रोत्र-बिन्दु संयुक्तष्टात्तृतीयकः।
  नारायणेन सम्मिश्रो वायुश्चाधरयुक् ततः ।
  विच्चे नवार्ण कोऽर्णः स्यान्महदा नन्ददायकः ॥ ॥२०॥

- हृत्पुण्डरीक मध्यस्थां प्रातःसूर्य समप्रभाम् ।
  पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदा भय हस्तकाम् ।
  त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे ॥ ॥२१॥

- नमामि त्वां महादेवीं महा-भय विनाशिनीम् ।
  महादुर्ग प्रशमनीं महाकारुण्य रूपिणीम् ॥ ॥२२॥

- यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मा-दुच्यते अज्ञेया ।
  यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मा-दुच्यते अनन्ता ।
  यस्या लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्मा-दुच्यते अलक्ष्या ।
  यस्या जननं नोपलभ्यते तस्मा-दुच्यते अजा ।
  एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मा-दुच्यते एका ।
  एकैव विश्व-रूपिणी तस्मा-दुच्यते नैका ।
  अत एवोच्यते अज्ञेयानन्ता लक्ष्या जैका नैकेति ॥ ॥२३॥

- मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी ।
  ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्य साक्षिणी ।
  यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता ॥ ॥२४॥

- तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचार विघातिनीम् ।
  नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णव तारिणीम् ॥ ॥२५॥

- इदमथर्वशीर्षं योऽधीते स पञ्चाथर्वशीर्ष जप-फल माप्नोति ।
  इदमथर्वशीर्ष मज्ञात्वा योऽर्चां स्थापयति - शतलक्षं प्रजप्त्वापि
  सोऽर्चासिद्धिं न विन्दति । शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः।

- दशवारं पठेद् यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते ।
  महा दुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः ॥ ॥२६॥

- सायम-धीयानो दिवस कृतं पापं नाशयति ।
  प्रातर-धीयानो रात्रि कृतं पापं नाशयति ।
  सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति ।
  निशीथे तुरीय सन्ध्यायां जप्त्वा वाक् सिद्धिर्भवति ।
  नूतनायां प्रतिमायां जप्त्वा देवता सांनिध्यं भवति ।
  प्राण प्रतिष्ठायां जप्त्वा प्राणानां प्रतिष्ठा भवति ।
  भौमाश्विन्यां महादेवी संनिधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति ।
  स महामृत्युं तरति य एवं वेद । इत्युपनिषत् ॥

॥ इति श्रीदेव्यथर्वशीर्षम् सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ नवार्ण विधिः ॥

इस प्रकार रात्रिसूक्त और देव्यथर्वशीर्ष का पाठ करने के पश्चात् निम्नांकित रूपसे नवार्णमन्त्र के विनियोग, न्यास और ध्यान आदि करें।

- **विनियोगः** ॐ अस्य श्री नवार्ण मन्त्रस्य। ब्रह्म-विष्णु-रुद्रा ऋषयः। गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि। श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः। ऐं बीजम्। ह्रीं शक्तिः। क्लीं कीलकम्। श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

- **ऋष्यादिन्यासः**
  - ब्रह्म-विष्णु-रुद्र ऋषिभ्यो नमः। शिरसि (सिर)।
  - गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः। मुखे (मुख)।
  - महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताभ्यो नमः। हृदि (हृदय)।
  - ऐं बीजाय नमः। गुह्ये (गुदा)।
  - ह्रीं शक्तये नमः। पादयोः (दोनों चरण)।
  - क्लीं कीलकाय नमः। नाभौ (नाभि)।
  - ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। इस मूलमन्त्र से हाथों की शुद्धि करें।

- **करन्यासः**
  - ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। (दोनों हाथों की तर्जनी अंगुलियों से दोनों अंगूठों का स्पर्श)
  - ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। (दोनों हाथों की तर्जनी अंगुलियों से दोनों तर्जनी का स्पर्श)
  - ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः। (अंगूठों से मध्यमा अंगुलियों का स्पर्श)
  - ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः। (अंगूठों से अनामिका अंगुलियों का स्पर्श)
  - ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः। (अंगूठों से कनिष्ठिका अंगुलियों का स्पर्श)
  - ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। (हथेलियों और उनके पृष्ठभागों का परस्पर स्पर्श)

- **हृदयादिन्यासः**
  - ॐ ऐं हृदयाय नमः। (दाहिने हाथ की पाँचों अंगुलियों से हृदय का स्पर्श)
  - ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। (सिर का स्पर्श)
  - ॐ क्लीं शिखायै वषट्। (शिखा का स्पर्श)
  - ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्। (दाहिने हाथ की अंगुलियों से बायें कंधे का और बायें हाथ की अंगुलियों से दायें कंधे का साथ ही स्पर्श)
  - ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्। (दाहिने हाथ की अंगुलियों के अग्रभाग से दोनों नेत्रों और ललाट के मध्यभाग का स्पर्श)
  - ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।

- अक्षर न्यासः

1. ॐ ऐं नमः। शिखायाम्।
2. ॐ ह्रीं नमः। दक्षिणनेत्रे।
3. ॐ क्लीं नमः। वामनेत्रे।
4. ॐ चां नमः। दक्षिणकर्णे।
5. ॐ मुं नमः। वामकर्णे।
6. ॐ डां नमः। दक्षिणनासापुटे।
7. ॐ यैं नमः। वामनासापुटे।
8. ॐ विं नमः। मुखे।
9. ॐ च्चें नमः। गुह्ये।

- दिङ्न्यासः फिर प्रत्येक दिशा में चुटकी बजाते हुए न्यास करें-

1. ॐ ऐं प्राच्यै नमः।
2. ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः।
3. ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः।
4. ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः।
5. ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः।
6. ॐ क्लीं वायव्यै नमः।
7. ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः।
8. ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः।
9. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः।
10. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।

- ध्यानम्

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥ ॥१॥

- **अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥ ॥२॥
- **घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्॥ ॥३॥

- माला प्रार्थना फिर "ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः" इस मन्त्र से माला की पूजा करके प्रार्थना करें-
  - ॐ मां माले महामाये सर्व शक्ति स्वरूपिणि।
    चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥
  - ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
    जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥
  - ॐ अक्ष-मालाधि-पतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्व-मन्त्रार्थ-साधिनि साधय-साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा।
  - इसके बाद "ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे" इस मन्त्र का १०८ बार जप करें।
  - गुह्याति गुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
    सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत् प्रसादान् महेश्वरि॥

॥ सप्तशती न्यासः ॥

तदनन्तर सप्तशती के विनियोग, न्यास और ध्यान करने चाहिये। न्यास की प्रणाली पूर्ववत् है-

- विनियोगः — प्रथम मध्यमोत्तरचरित्राणां ब्रह्म-विष्णु-रुद्रा ऋषयः। श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः । गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छंन्दांसि । नन्दाशाकम्भरीभीमाः शक्तयः । रक्तदन्तिका दुर्गाभ्रामर्यो बीजानि। अग्निवायुसूर्यास्तत्त्वानि। ऋग्यजुःसामवेदा ध्यानानि। सकल कामना सिद्धये। श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

  - **ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।**
    शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ॥ — अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
  - **ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।**
    घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥ — तर्जनीभ्यां नमः।
  - **ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।**
    भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ — मध्यमाभ्यां नमः।
  - **ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।**
    यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥ — अनामिकाभ्यां नमः।
  - **ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।**
    करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥ — कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
  - **ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।**
    भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ — करतलकरपृष्ठाभ्यां।

- हृदयादिन्यासः
  - **ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा ..... ॥** — हृदयाय नमः।
  - **ॐ शूलेन पाहि नो देवि ..... ॥** — शिरसे स्वाहा।
  - **ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च ..... ॥** — शिखायै वषट्।
  - **ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि ..... ॥** — कवचाय हुम्।
  - **ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि ..... ॥** — नेत्रत्रयाय वौषट्।
  - **ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे ..... ॥** — अस्त्राय फट्।

- ध्यानम्

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेवितां।
हस्तैश्च क्रगदासिखेटविशिखांश्चाप्पं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥

॥ श्री दुर्गासप्तशती - प्रथमोऽध्याय: (१) ॥

मेधा ऋषिका राजा सुरथ और समाधि को भगवती की महिमा बताते हुए
मधु-कैटभ वध का प्रंसग सुनाना।

- विनियोगः ॐ प्रथमचरित्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। महाकाली देवता। गायत्री छन्दः। नन्दा शक्तिः। रक्तदन्तिका बीजम्। अग्निस्तत्त्वम्। ऋग्वेदः स्वरूपम्। श्री महाकाली प्रीत्यर्थे प्रथम चरित्रजपे विनियोगः।

- ध्यानम्

ॐ खड्गं चक्र गदेषु चाप परिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रि नयनां सर्वाङ्ग भूषावृताम्।
नीलाश्मद्युति मास्य पाद दशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

- ॐ नमश्चण्डिकायै
- **"ॐ ऐं" मार्कण्डेय उवाच॥** **॥ १॥**
- **सावर्णिः सूर्य-तनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः।**
  निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद् गदतो मम॥ **॥ २॥**
- **महा माया नुभावेन यथा मन्वन्तराधिपः।**
  स बभूव महाभागः सावर्णि स्तनयो रवेः॥ **॥ ३॥**
- **स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्वं चैत्र वंश समुद्भवः।**
  सुरथो नाम राजाभूत् समस्ते क्षिति-मण्डले॥ **॥ ४॥**
- **तस्य पालयतः सम्यक् प्रजाः पुत्रा निवौरसान्।**
  बभूवुः शत्रवो भूपाः कोला विध्वं सिनस्तदा॥ **॥ ५॥**
- **तस्य तैरभवद् युद्ध-मति-प्रबल दण्डिनः।**
  न्यूनैरपि स तैर्युद्धे कोला-विध्वंसिभिर्जितः॥ **॥ ६॥**
- **ततः स्वपुर मायातो निज-देशाधिपोऽभवत्।**
  आक्रान्तः स महाभागस्तैस्तदा प्रबलारिभिः॥ **॥ ७॥**
- **अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्य दुरात्मभिः।**
  कोशो बलं चापहृतं तत्रापि स्वपुरे ततः॥ **॥ ८॥**

- ततो मृगयाव्याजेन हृतस्वाम्यः स भूपतिः ।
  एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनम् ॥ ॥ ९॥
- स तत्राश्रम-मद्राक्षीद् द्विजवर्यस्य मेधसः ।
  प्रशान्तश्वा-पदाकीर्णं मुनि-शिष्यो-पशोभितम् ॥ ॥१०॥
- तस्थौ कंचित् स-कालं च मुनिना तेन सत्कृतः ।
  इतश्चेतश्च विचरंस्तस्मिन्मुनि-वराश्रमे ॥ ॥११॥
- सोऽचिन्तयत्तदा तत्र ममत्वा कृष्ट-चेतनः ।
  मत्पूर्वैः पालितं पूर्वं मया हीनं पुरं हि तत् ॥ ॥१२॥
- मद्भृत्यैस्तैरसद्वृत्तैर्धर्मतः पाल्यते न वा ।
  न जाने स प्रधानो मे शूरहस्ती सदामदः ॥ ॥१३॥
- मम वैरिवशं यातः कान् भोगानु-पलप्स्यते ।
  ये ममानुगता नित्यं प्रसाद धन भोजनैः ॥ ॥१४॥
- अनुवृत्तिं ध्रुवं तेऽद्य कुर्वन्त्यन्य महीभृताम् ।
  असम्यग्व्य-शीलैस्तैः कुर्वद्भिः सततं व्ययम् ॥ ॥१५॥
- संचितः सोऽतिदुःखेन क्षयं कोशो गमिष्यति ।
  एतच्चान्यच्च सततं चिन्तया-मास पार्थिवः ॥ ॥१६॥
- तत्र विप्रा श्रमाभ्याशे वैश्यमेकं ददर्श सः ।
  स पृष्टस्तेन कस्त्वं भो हेतुश्चा गमनेऽत्र कः ॥ ॥१७॥
- सशोक इव कस्मात्त्वं दुर्मना इव लक्ष्यसे ।
  इत्याकर्ण्य वचस्तस्य भूपतेः प्रणयोदितम् ॥ ॥१८॥
- प्रत्युवाच स तं वैश्यः प्रश्रया-वनतो नृपम् ॥ ॥१९॥
- वैश्य उवाच ॥ ॥२०॥
- समाधिर्नाम वैश्योचऽ हमुत्पन्नो धनिनां कुले ॥ ॥२१॥
- पुत्रदारैर्निरस्तश्च धन-लोभाद साधुभिः ।
  विहीनश्च धनैर्दारैः पुत्रैरादाय मे धनम् ॥ ॥२२॥
- वनमभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चाप्त बन्धुभिः ।
  सोऽहं न वेद्मि पुत्राणां कुशला कुशलात्मिकाम् ॥ ॥२३॥

- प्रवृत्तिं स्वजनानां च दाराणां चात्र संस्थितः।
  किं नु तेषां गृहे क्षेम-मक्षेमं किं नु साम्प्रतम् ॥ ॥२४॥
- कथं ते किं नु सद्वृत्ता दुर्वृत्ताः किं नु मे सुताः ॥ ॥२५॥
- राजोवाच ॥ ॥२६॥
- यैर्निरस्तो भवाँल्लुब्धैः पुत्र-दारादि भिर्धनैः ॥ ॥२७॥
- तेषु किं भवतः स्नेह-मनुबध्नाति मानसम् ॥ ॥२८॥
- वैश्य उवाच ॥ ॥२९॥
- एवमेतद्यथा प्राह भवानस्मद्गतं वचः ॥ ॥३०॥
- किं करोमि न बध्नाति मम निष्ठुरतां मनः ।
  यैः संत्यज्य पितृस्नेहं धनलुब्धैर्निराकृतः ॥ ॥३१॥
- पति-स्वजनहार्दं च हार्दि तेष्वेव मे मनः ।
  किमेतन्नाभि जानामि जानन्नपि महामते ॥ ॥३२॥
- यत्प्रेम प्रवणं चित्तं विगुणेष्वपि बन्धुषु ।
  तेषां कृते मे निःश्वा सो दौर्मनस्यं च जायते ॥ ॥३३॥
- करोमि किं यन्न मनस्तेष्व प्रीतिषु निष्ठुरम् ॥ ॥३४॥
- मार्कण्डेय उवाच ॥ ॥३५॥
- ततस्तौ सहितौ विप्र तं मुनिं समुपस्थितौ ॥ ॥३६॥
- समाधिर्नाम वैश्योऽसौ स च पार्थिव सत्तमः ।
  कृत्वा तु तौ यथान्यायं यथार्हं तेन संविदम् ॥ ॥३७॥
- उपविष्टौ कथाः काश्चिच्चक्रतुर्वैश्य पार्थिवौ ॥ ॥३८॥
- राजोवाच ॥ ॥३९॥
- भगवंस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत् ॥ ॥४०॥
- दुःखाय यन्मे मनसः स्वचित्ता-यत्ततां विना ।
  ममत्वं गत-राज्यस्य राज्याङ्गेष्व खिलेष्वपि ॥ ॥४१॥
- जानतोऽपि यथाज्ञस्य किमेतन्मुनिसत्तम ।
  अयं च निकृतः पुत्रैर्दारैर्भृत्यैस् तथोज्झितः ॥ ॥४२॥
- स्वजनेन च संत्यक्तस्तेषु हार्दी तथाप्यति ।
  एवमेष तथाहं च द्वावप्यत्यन्त दुःखितौ ॥ ॥४३॥

- दृष्टदोषेऽपि विषये ममत्वा कृष्टमानसौ ।
  तत्किमेतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि ॥ ॥४४॥
- ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता ॥ ॥४५॥
- ऋषिरुवाच ॥ ॥४६॥
- ज्ञान-मस्ति समस्तस्य जन्तोर्विषय गोचरे ॥ ॥४७॥
- विषयश्च महाभाग याति चैवं पृथक् पृथक् ।
  दिवान्धाः प्राणिनः केचिद्रात्रावन्धास्तथापरे ॥ ॥४८॥
- केचिद्दिवा तथा रात्रौ प्राणिनस् तुल्यदृष्टयः ।
  ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किं तु ते न हि केवलम् ॥ ॥४९॥
- यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशु-पक्षि मृगादयः ।
  ज्ञानं च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृग पक्षिणाम् ॥ ॥५०॥
- मनुष्याणां च यत्तेषां तुल्य-मन्य-त्तथोभयोः ।
  ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान् पतङ्गाञ्छावचञ्चुषु ॥ ॥५१॥
- कणमोक्षा दृतान्मोहात् पीड्यमानानपि क्षुधा ।
  मानुषा मनुजव्याघ्र साभिलाषाः सुतान् प्रति ॥ ॥५२॥
- लोभात् प्रत्युपकाराय नन्वेतान् किं न पश्यसि ।
  तथापि ममतावर्त्ते मोहगर्ते निपातिताः ॥ ॥५३॥
- महामाया प्रभावेण संसारस्थिति कारिणा ।
  तन्नात्र विस्मयः कार्यो योगनिद्रा जगत्पतेः ॥ ॥५४॥
- महामाया हरेश्चै:षा तया सम्मोह्यते जगत् ।
  ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ॥ ॥५५॥
- बलादा-कृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ।
  तया विसृज्यते विश्वं जगदेतच्चराचरम् ॥ ॥५६॥ शर्करा
- सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये ।
  सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी ॥ ॥५७॥
- संसार बन्ध-हेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी ॥ ॥५८॥
- राजोवाच ॥ ॥५९॥

- भगवन् का हि सा देवी महामायेति यां भवान् ॥ ॥६०॥
- ब्रवीति कथमुत्पन्ना सा कर्मास्याश्च किं द्विज ।
  यत्प्रभावा च सा देवी यत्स्वरूपा यदुद्भवा ॥ ॥६१॥
- तत्सर्वं श्रोतु-मिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मविदां वर ॥ ॥६२॥
- ऋषिरुवाच ॥ ॥६३॥
- नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम् ॥ ॥६४॥
- तथापि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम ।
  देवानां कार्य-सिद्ध्यर्थं माविर्भवति सा यदा ॥ ॥६५॥
- उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याप्यभि-धीयते ।
  योगनिद्रां यदा विष्णुर्जगत्येकार्ण-वीकृते ॥ ॥६६॥
- आस्तीर्य शेषमभजत् कल्पान्ते् भगवान् प्रभुः।
  तदा द्वावसुरौ घोरौ विख्यातौ मधुकैटभौ ॥ ॥६७॥ कमलगट्टा
- विष्णु-कर्ण-मलोद्भूतो हन्तुं ब्रह्माण-मुद्यतौ ।
  स नाभिकमले विष्णोः स्थितो ब्रह्मा प्रजापतिः॥ ॥६८॥
- दृष्ट्वा तावसुरौ चोग्रौ प्रसुप्तं च जनार्दनम् ।
  तुष्टाव योगनिद्रां तामेकाग्र-हृदयस्थितः ॥ ॥६९॥
- विबोधनार्थाय हरेर्हरि-नेत्र-कृतालयाम् ।
  निद्रां भगवतीं विष्णो-रतुलां तेजसः प्रभुः ॥ ॥७१॥
- ब्रह्मोवाच ॥ ॥७२॥
- त्वं स्वाहा त्वं स्वधां त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका ॥७३॥
- सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता ।
  अर्ध-मात्रा-स्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः ॥ ॥७४॥
- त्वमेव संध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा ।
  त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत् सृज्यते जगत् ॥ ॥७५॥
- त्वयैतत् पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते् च सर्वदा ।
  विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थिति-रूपा च पालने ॥ ॥७६॥
- तथा संहृति-रूपान्तो जगतोऽस्य जगन्मये ।
  महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः ॥ ॥७७॥

- महामोहा च भवती महादेवी महासुरी ।
  प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रय विभाविनी ॥ ॥७८॥
- कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा ।
  त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोध-लक्षणा ॥ ॥७९॥
- लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च ।
  खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥ ॥८०॥
- शङ्खिनी चापिनी बाण-भुशुण्डी-परिघायुधा ।
  सौम्या सौम्य-तराशेष-सौम्येभ्यस्त्वति-सुन्दरी ॥ ॥८१॥
- परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वेरी ।
  यच्च किंचित् क्वचिद्वस्तु सद-सद्वा-खिलात्मिके ॥ ॥८२॥
- तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा ।
  यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत् ॥ ॥८३॥
- सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतु-मिहेश्वरः ।
  विष्णुः शरीर-ग्रहण-महमीशान एव च ॥ ॥८४॥
- कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत् ।
  सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता ॥ ॥८५॥
- मोहयैतौ दुराधर्षा-वसुरौ मधुकैटभौ ।
  प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयता मच्युतो लघु ॥ ॥८६॥
- बोधश्च क्रियता-मस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥ ॥८७॥
- ऋषिरुवाच ॥ ॥८८॥
- एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा ॥ ॥८९॥
- विष्णोः प्रबोध-नार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ ।
  नेत्रास्य नासिका-बाहु हृदयेभ्यस्त-थोरसः ॥ ॥९०॥
- निर्गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽ व्यक्त-जन्मनः ।
  उत्तस्थौ च जगन्नाथस् तया मुक्तो जनार्दनः ॥ ॥९१॥
- एकार्णवेऽ हिशयनात्ततः स ददृशे च तौ ।
  मधुकैटभो दुरात्माना वतिवीर्य पराक्रमौ ॥ ॥९२॥

- क्रोध-रक्तेक्षणावत्तुं ब्रह्माणं जनितोद्यमौ ।
  समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान् हरिः ॥ ॥९३॥
- पञ्च-वर्ष-सहस्राणि बाहु-प्रहरणो विभुः ।
  तावप्यति-बलोन्मत्तौ महामाया विमोहितौ ॥ ॥९४॥
- उक्तवन्तौ वरोऽस्मत्तो व्रियता-मिति केशवम् ॥ ॥९५॥
- श्रीभगवानुवाच ॥ ॥९६॥
- भवेतामद्य मे तुष्टौ मम वध्या वुभावपि ॥ ॥९७॥
- किमन्येन वरेणात्र एतावद्धि वृतं मम ॥ ॥९८॥
- ऋषिरुवाच ॥ ॥९९॥
- वञ्चिताभ्या-मिति तदा सर्व-मापोमयं जगत् ॥ ॥१००॥ कर्पूर
- विलोक्य ताभ्यां गदितो भगवान् कमलेक्षणः ।
  आवां जहि न यत्रोर्वी सलिलेन परिप्लुता ॥ ॥१०१॥ कमलगट्टा
- ऋषिरुवाच ॥ ॥१०२॥
- तथेत्युक्त्वा भगवता शङ्ख-चक्र-गदा-भृता ।
  कृत्वा चक्रेण वै च्छिन्ने जघने शिरसी तयोः ॥ ॥१०३॥ गुग्गुल
- एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम् ।
  प्रभावमस्या देव्यास्तु भूयः श्रृणु वदामि ते ॥ ऐं ॐ ॥१०४॥

॥ इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये मधु-कैटभ वधो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥१॥
॥ उवाच १४, अर्धश्लोकाः २४, श्लोकाः ६६, एवमादितः ॥१०४॥

- लज्जा पुष्टि स्तथा... ८० इत्यारभ्य सोऽपि निद्रावशं नीतः... ८४ यावन् पञ्चभिर्मन्त्रै र्हवनं न करणीयम् तत्तत् परिवर्ते ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे स्वाहा" इति मूलेन पञ्चाहुतयो देया ।
- अध्यायान्ते "मधुपुष्पद्वारा" ॐ नमो देव्यै महादेव्यै... ॐ सांगायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै वाग्भव बीजाधिष्ठातृ महाकाल्यै नमः स्वाहा । इति स्रुचपुरितं सस्रुवेण च हस्ताभ्यां एकाहुत्यार्देया ।
  इति प्रथम अध्याय विशेष हवनम् ॥

॥ श्री दुर्गासप्तशती - द्वितीयोऽध्यायः (२) ॥

देवताओं के तेज से देवी का प्रादुर्भाव और महिषासुर की सेना का वध

- विनियोगः ॐ मध्यमचरित्रस्य विष्णुर्ऋषिः । महालक्ष्मीर्देवता । उष्णिक् छन्दः । शाकम्भरी शक्तिः । दुर्गा बीजम् । वायुस्तत्त्वम् । यजुर्वेदः स्वरूपम् । श्री महालक्ष्मी प्रीत्यर्थं मध्यमचरित्र जपे विनियोगः ।

- ध्यानम्

ॐ अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम् ।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥

- **"ॐ ह्रीं" ऋषिरुवाच ॥** ॥ १॥
- **देवासुरमभूद्युद्धं पूर्णमब्द-शतं पुरा ।**
  महिषेऽ सुराणा-मधिपे देवानां च पुरन्दरे ॥ ॥ २॥
- **तत्रासुरैर्महावीर्यैर्देवसैन्यं पराजितम् ।**
  जित्वा च सकलान् देवा-निन्द्रोऽभून्महिषासुरः ॥ ॥ ३॥
- **ततः पराजिता देवाः पद्मयोनिं प्रजापतिम् ।**
  पुरस्कृत्य गतास्तत्र यत्रेश-गरुडध्वजौ ॥ ॥ ४॥
- **यथावृत्तं तयोस्तद्वन् महिषा-सुर-चेष्टितम् ।**
  त्रिदशाः कथया-मासुर्देवाभि-भव-विस्तरम् ॥ ॥ ५॥
- **सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां यमस्य वरुणस्य च ।**
  अन्येषां चाधिकारान् स स्वय-मेवाधि-तिष्ठति ॥ ॥ ६॥
- **स्वर्गा-न्निरा-कृताः सर्वे तेन देवगणा भुवि ।**
  विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना ॥ ॥ ७॥
- **एतद्वः कथितं सर्व-ममरारि-विचेष्टितम् ।**
  शरणं वः प्रपन्नाः स्मो वधस्तस्य विचिन्त्यताम् ॥ ॥ ८॥
- **इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः ।**
  चकार कोपं शम्भुश्च भ्रुकुटी-कुटि-लाननौ ॥ ॥ ९॥

- ततोऽतिकोप पूर्णस्य चक्रिणो वदनात्ततः ।
  निश्चिक्राम महत्तेजो ब्रह्मणः शंकरस्य च ॥ ॥१०॥

- अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः ।
  निर्गतं सुमहत्तेजस् तच्चैक्यं समगच्छत ॥ ॥११॥

- अतीव तेजसः कूटं ज्वलन्त-मिव पर्वतम् ।
  ददृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वाला-व्याप्त-दिगन्तरम् ॥ ॥१२॥

- अतुलं तत्र तत्तेजः सर्व-देव-शरीरजम् ।
  एकस्थं तदभून्नारी व्याप्त-लोकत्रयं त्विषा ॥ ॥१३॥

- यदभूच्छाम्भवं तेजस् तेनाजायत तन्मुखम् ।
  याम्येन चाभवन् केशा बाहवो विष्णु तेजसा ॥ ॥१४॥

- सौम्येन स्तनयोर्युग्मं मध्यं चैन्द्रेण चाभवत् ।
  वारुणेन च जङ्घोरू नितम्बस् तेजसा भुवः ॥ ॥१५॥

- ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तदङ्गुल्योऽर्क तेजसा ।
  वसूनां च कराङ्गुल्यः कौबेरेण च नासिका ॥ ॥१६॥

- तस्यास्तु दन्ताः सम्भूताः प्राजापत्येन तेजसा ।
  नयन-त्रितयं जज्ञे तथा पावक तेजसा ॥ ॥१७॥

- भ्रुवौ च संध्ययोस्तेजः श्रवणा-वनिलस्य च ।
  अन्येषां चैव देवानां सम्भवस्-तेजसां शिवा ॥ ॥१८॥

- ततः समस्त देवानां तेजो-राशि समुद्भवाम् ।
  तां विलोक्य मुदं प्रापुर-मरा महिषार्दिताः ॥ ॥१९॥

- शूलं शूलाद्वि-निष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाक-धृक् ।
  चक्रं च दत्तवान् कृष्णः समुत्पाद्य स्व-चक्रतः ॥ ॥२०॥

- शङ्खं च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः ।
  मारुतो दत्तवांश्चापं बाण-पूर्णे तथेषुधी ॥ ॥२१॥

- वज्रमिन्द्रः समुत्पाद्य कुलिशा-दमराधिपः ।
  ददौ तस्यै सहस्राक्षो घण्टा-मैरा-वताद् गजात् ॥ ॥२२॥

- काल-दण्डा द्यमो दण्डं पाशं चाम्बु-पतिर्ददौ ।
  प्रजापतिश्चाक्षमालां ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम् ॥ ॥२३॥

- समस्त-रोम-कूपेषु निज-रश्मीन् दिवाकरः ।
  कालश्च दत्तवान् खड्गं तस्याश्चर्म च निर्मलम् ॥ ॥२४॥

- क्षीरो-दश्चामलं हार-मजरे च तथाम्बरे ।
  चूडामणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि च ॥ ॥२५॥

- अर्धचन्द्रं तथा शुभ्रं केयूरान् सर्वबाहुषु ।
  नूपुरौ विमलौ तद्वद् ग्रैवेयकमनुत्तमम् ॥ ॥२६॥

- अङ्गुलीय-करत्नानि समस्तास्वङ्गुलीषु च ।
  विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुं चाति-निर्मलम् ॥ ॥२७॥

- अस्त्राण्यनेक-रूपाणि तथाभेद्यं च दंशनम् ।
  अम्लान-पङ्कजां मालां शिरस्युरसि चापराम् ॥ ॥२८॥ कर्पूर

- अददज्जलधिस्तस्यै पङ्कजं चाति-शोभनम् ।
  हिमवान् वाहनं सिंहं रत्नाचनि विविधानि च ॥ ॥२९॥

- ददाव-शून्यं सुरया पानपात्रं धनाधिपः ।
  शेषश्चन सर्व-नागेशो महा-मणि विभूषितम् ॥ ॥३०॥

- नागहारं ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवी-मिमाम् ।
  अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणै-रायुधैस्तथा ॥ ॥३१॥

- सम्मानिता ननादोच्चैः साट्टहासं मुहुर्मुहुः ।
  तस्या नादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितं नभः ॥ ॥३२॥

- अमा-यताति-महता प्रतिशब्दो महानभूत् ।
  चुक्षुभुः सकला लोकाः समुद्राश्च चकम्पिरे ॥ ॥३३॥

- चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्च महीधराः ।
  जयेति देवाश्च मुदा तामूचुः सिंह-वाहिनीम् ॥ ॥३४॥

- तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां भक्ति-नम्रात्म-मूर्तयः ।
  दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं त्रैलोक्य-ममरारयः॥ ॥३५॥

- सन्नद्धा-खिल-सैन्यास्ते समुत्तस्थु-रुदा-युधाः ।
  आः किमेतदिति क्रोधा-दाभाष्य महिषासुरः ॥ ॥३६॥

- अभ्यधावत तं शब्द-मशेषै-रसुरैर्वृतः ।
  स ददर्श ततो देवीं व्याप्त-लोकत्रयां त्विषा ॥ ॥३७॥

- पादा-क्रान्त्या नतभुवं किरीटो-ल्लिखिताम्बराम् ।
  क्षोभिता-शेष-पातालां धनुर्ज्यानि:स्वनेन ताम् ॥ ॥३८॥
- दिशो भुज-सहस्रेण समन्ताद् व्याप्य संस्थिताम् ।
  तत: प्रववृते युद्धं तया देव्या सुरद्विषाम् ॥ ॥३९॥
- शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मुक्तैरादीपित-दिगन्तरम् ।
  महिषा-सुर-सेनानीश्चिधक्षुराख्यो महासुर: ॥ ॥४०॥
- युयुधे चामरश्चान्यैश्चतुरङ् गबलान्वित: ।
  रथाना-मयुतै: षड्भिरुदग्राख्यो महासुर: ॥ ॥४१॥
- अयुध्यता-युतानां च सहस्रेण महाहनु: ।
  पञ्चाशद्भिश्च नियुतै-रसिलोमा महासुर: ॥ ॥४२॥
- अयुतानां शतै: षड्भिर्बाष्कलो युयुधे रणे ।
  गज-वाजि-सहस्रौघैरनेकै: परिवारित: ॥ ॥४३॥
- वृतो रथानां कोट्या च युद्धे तस्मिन्न युध्यत ।
  बिडालाख्योऽ युतानां च पञ्चाशद्भिरथायुतै: ॥ ॥४४॥
- युयुधे संयुगे तत्र रथानां परिवारित: ।
  अन्ये च तत्रा-युतशो रथनागहयैर्वृता: ॥ ॥४५॥
- युयुधु: संयुगे देव्या सह तत्र महासुरा: ।
  कोटि-कोटि सहस्रैस्तु रथानां दन्तिनां तथा ॥ ॥४६॥
- हयानां च वृतो युद्धे तत्राभून् महिषासुर: ।
  तोमरैर्भिन्दि-पालैश्च शक्तिभिर्मुसलैस्तथा ॥ ॥४७॥
- युयुधु: संयुगे देव्या खड्गै: परशुपट्टिशै: ।
  केचिच्च चिक्षिपु: शक्ती: केचित्पाशांस्तथापरे ॥ ॥४८॥
- देवीं खड्ग प्रहारैस्तु ते तां हन्तुं प्रचक्रमु: ।
  सापि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका ॥ ॥४९॥
- लीलयैव प्रचिच्छेद निज-शस्त्रास्त्र वर्षिणी ।
  अनायस्ता-ननना देवी स्तूयमाना सुरर्षिभि: ॥ ॥५०॥
- मुमोचा-सुर-देहेषु शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी ।
  सोऽपि क्रुद्धो धुतसटो देव्या वाहन केसरी ॥ ॥५१॥

- चचारा-सुर-सैन्येषु वनेष्विव हुताशनः ।
  निःश्वारसान् मुमुचे यांश्च युध्यमाना रणेऽम्बिका ॥ ॥५२॥

- त एव सद्यः सम्भूता गणाः शत-सहस्रशः ।
  युयुधुस्ते परशुभिर्भिन्दि-पालासिपट्टिशैः ॥ ॥५३॥

- नाशयन्तोऽ सुरगणान् देवी-शक्त्युपबृंहिताः ।
  अवादयन्त पटहान् गणाः शङ्खांस्तथापरे ॥ ॥५४॥

- मृदङ्गांश्च तथैवान्ये तस्मिन् युद्ध-महोत्सवे ।
  ततो देवी त्रिशूलेन गदया शक्ति वृष्टिभिः ॥ ॥५५॥

- खड्गादिभिश्चय शतशो निजघान महासुरान् ।
  पातयामास चैवान्यान् घण्टा-स्वन विमोहितान् ॥ ॥५६॥

- असुरान् भुवि पाशेन बद्ध्वा चान्यान-कर्षयत् ।
  केचिद् द्विधा कृतास्तीक्ष्णैः खड्ग-पातैस्तथापरे ॥ ॥५७॥

- विपोथिता निपातेन गदया भुवि शेरते ।
  वेमुश्चा केचिद्रुधिरं मुसलेन भृशं हताः ॥ ॥५८॥

- केचिन्निपतिता भूमौ भिन्नाः शूलेन वक्षसि ।
  निरन्तराः शरौघेण कृताः केचिद्रणाजिरे ॥ ॥५९॥

- श्येना-नुकारिणः प्राणान् मुमुचुस्त्रि-दशार्दनाः ।
  केषांचिद् बाहवश्छिन्नाश्छिन्नग्रीवास्तथापरे ॥ ॥६०॥ सरसौं

- शिरांसि पेतुरन्येषा-मन्ये मध्ये विदारिताः ।
  विच्छिन्न जङ्घास्त्वपरे पेतुरुर्व्यां महासुराः ॥ ॥६१॥

- एकबाह्वक्षिचरणाः केचिद्देव्या द्विधा कृताः।
  छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिताः पुनरुत्थिताः॥ ॥६२॥

- कबन्धा युयुधुर्देव्या गृहीत-परमायुधाः ।
  ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्यलयाश्रिताः ॥ ॥६३॥

- कबन्धाश्छिन्न-शिरसिः खड्ग-शक्त्यृष्टि-पाणयः ।
  तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः ॥ ॥६४॥

- पातितै रथनागाश्वैर-सुरैश्च वसुन्धरा ।
  अगम्या साभवतत्र यत्राभूत्स महारणः ॥ ॥६५॥

- **शोणीतौघा महानद्य: सद्यस्तत्र प्रसुस्रुवु: ।**
  मध्ये चा सुर-सैन्यस्य वारणा-सुर-वाजिनाम् ॥ **॥६६॥**

- **क्षणेन तन्महासैन्य-मसुराणां तथाम्बिका ।**
  निन्ये क्षयं यथा वह्नि-स्तृण-दारु-महाचयम् ॥ **॥६७॥** राई

- **स च सिंहो महानाद मुत्सृजन् धुतकेसर: ।**
  शरीरेभ्योऽ मरारीणाम सूनिव विचिन्वति ॥ **॥६८॥**

- **देव्या गणैश्चर तैस्तत्र कृतं युद्धं महासुरै: ।**
  यथैषां तुतुषुर्देवा: पुष्प-वृष्टि-मुचो दिवि ॥ॐ॥ **॥६९॥** विल्वपत्र

॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये महिषा-सुर-सैन्य-वधो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥
उवाच १, श्लोकाः ६८, एवम् ६९, एवमादितः ॥१७३॥

- अध्यायान्ते "गुग्गुलेन" ॐ नमोदैव्यै ... ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै मायाबीजाधिष्ठात्र्यै महालक्ष्म्यै स्वाहा । एकैवाहुतिः देया ।
  इति द्वितीय अध्याय विशेष हवनम् ॥

॥ श्री दुर्गासप्तशती - तृतीयोऽध्यायः (३) ॥

सेनापतियों सहित महिषासुर का वध

- **ध्यानम्** ॐ उद्यद्भानु सहस्र कान्ति मरुण क्षौमां शिरो-मालिकां,
रक्ता-लिप्त-पयोधरां जपवटीं विद्याम-भीतिं वरम् ।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्र-विलसद्वक्त्रा-रविन्दश्रियं,
देवीं बद्ध-हिमांशु-रत्न-मुकुटां वन्देऽ रविन्द स्थिताम् ॥

- ॐ ऋषिरुवाच ॥ ॥ १॥
- निहन्यमानं तत्सैन्यमवलोक्य महासुरः ।
सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद्ययौ योद्धुमथाम्बिकाम् ॥ ॥ २॥
- स देवीं शरवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः ।
यथा मेरुगिरेः श्रृङ्गं तोयवर्षेण तोयदः ॥ ॥ ३॥
- तस्यच्छित्त्वा ततो देवी लीलयैव शरोत्करान् ।
जघान तुरगान् बाणैर्यन्तारं चैव वाजिनाम् ॥ ॥ ४॥
- चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजं चाति-समुच्छ्रितम् ।
विव्याध चैव गात्रेषु छिन्न-धन्वा-नमाशुगैः ॥ ॥ ५॥
- सच्छिन्न-धन्वा विरथो हताश्वो हत-सारथिः ।
अभ्यधावत तां देवीं खड्ग-चर्म-धरोऽ सुरः ॥ ॥ ६॥
- सिंहमाहत्य खड्गेन तीक्ष्ण-धारेण मूर्धनि ।
आजघान भुजे सव्ये देवी-मप्यति-वेगवान् ॥ ॥ ७॥
- तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य पफाल नृप-नन्दन ।
ततो जग्राह शूलं स कोपा-दरुण-लोचनः ॥ ॥ ८॥
- चिक्षेप च ततस्तत्तु भद्रकाल्यां महासुरः ।
जाज्वल्यमानं तेजोभी रवि-बिम्ब-मिवाम्बरात् ॥ ॥ ९॥
- दृष्ट्वा तदा-पतच्छूलं देवी शूल-ममुञ्चत ।
तच्छूलं शतधा तेन नीतं स च महासुरः ॥ ॥१०॥

- हते तस्मिन् महावीर्ये महिषस्य चमूपतौ ।
  आजगाम गजारूढश्चाहमरस्त्रिदशार्दनः ॥ ॥११॥
- सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ देव्यास्तामम्बिका द्रुतम् ।
  हुंकाराभि-हतां भूमौ पातयामास निष्प्रभाम् ॥ ॥१२॥
- भग्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा क्रोध-समन्वितः ।
  चिक्षेप चामरः शूलं बाणैस्तदपि साच्छिनत् ॥ ॥१३॥
- ततः सिंहः समुत्पत्य गजकुम्भान्तरे स्थितः ।
  बाहु-युद्धेन युयुधे तेनोच्चैस्त्रि-दशारिणा ॥ ॥१४॥
- युद्ध्यमानौ ततस्तौ तु तस्मान्-नागान्महीं गतौ ।
  युयुधातेऽति-संरब्धौ प्रहारै-रति-दारुणैः ॥ ॥१५॥
- ततो वेगात् खमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा ।
  कर-प्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक्कृतम् ॥ ॥१६॥
- उदग्रश्चे रणे देव्या शिला-वृक्षादिभिर्हतः ।
  दन्त-मुष्टि-तलैश्चैव करालश्च निपातितः ॥ ॥१७॥
- देवी क्रुद्धा गदापातैश्चूर्णयामास चोद्धतम् ।
  वाष्कलं भिन्दिपालेन बाणैस्ताम्रं तथान्धकम् ॥ ॥१८॥
- उग्रास्य-मुग्रवीर्यं च तथैव च महा-हनुम् ।
  त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी ॥ ॥१९॥
- बिडालस्या-सिना कायात्-पातयामास वै शिरः ।
  दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ शरैर्निन्ये यमक्षयम् ॥ ॥२०॥ निम्बू
- एवं संक्षीयमाणे तु स्वसैन्ये महिषासुरः ।
  माहिषेण स्वरूपेण त्रासयामास तान् गणान् ॥ ॥२१॥
- कांश्चित्तुण्ड-प्रहारेण खुर-क्षेपैस्तथापरान् ।
  लाङ्गूलताडितांश्चान्याञ्छृङ्गाभ्यां च विदारितान् ॥ ॥२२॥
- वेगेन कांश्चिद-परान्नादेन भ्रमणेन च ।
  निःश्वास-पवने-नान्यान् पातयामास भूतले ॥ ॥२३॥
- निपात्य प्रमथानीक-मभ्य-धावत सोऽसुरः ।
  सिंहं हन्तुं महादेव्याः कोपं चक्रे ततोऽम्बिका ॥ ॥२४॥

- सोऽपि कोपान्-महावीर्यः खुर-क्षुण्ण-महीतलः ।
  शृङ्गाभ्यां पर्वतानुच्चांश्चिक्षेप च ननाद च ॥ ॥२५॥
- वेग-भ्रमण-विक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्यत ।
  लाङ्गू-लेना-हतश्चाब्धिः प्लावयामास सर्वतः ॥ ॥२६॥
- धुत-शृङ्ग-विभिन्नाश्च खण्डं खण्डं ययुर्घनाः ।
  श्वासा-निलास्ताः शतशो निपेतुर्नभसोऽ चलाः ॥ ॥२७॥
- इति क्रोध-समाध्मात-मापतन्तं महासुरम् ।
  दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं तद्वधाय तदाकरोत् ॥ ॥२८॥
- सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तं बबन्ध महासुरम् ।
  तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महामृधे ॥ ॥२९॥
- ततः सिंहोऽ भवत्सद्यो यावत्तस्याम्बिका शिरः ।
  छिनत्ति तावत्पुरुषः खड्ग-पाणि-रदृश्यत ॥ ॥३०॥
- तत एवाशु पुरुषं देवी चिच्छेद सायकैः ।
  तं खड्ग-चर्मणा सार्धं ततः सोऽभून्-महागजः ॥ ॥३१॥
- करेण च महासिंहं तं चकर्ष जगर्ज च ।
  कर्षतस्तु करं देवी खड्गेन निरकृन्तत ॥ ॥३२॥
- ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुरास्थितः ।
  तथैव क्षोभया-मास त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥ ॥३३॥
- ततः क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पान-मुत्तमम् ।
  पपौ पुनः पुनश्चैव जहा-सारुण-लोचना ॥ ॥३४॥ गुड, दुध
- ननर्द चासुरः सोऽपि बल-वीर्य-मदोद्धतः ।
  विषाणाभ्यां च चिक्षेप चण्डिकां प्रति भूधरान् ॥ ॥३५॥
- सा च तान् प्रहितांस्तेन चूर्णयन्ती शरोत्करैः ।
  उवाच तं मदोद्धूत-मुख-रागा-कुलाक्षरम् ॥ ॥३६॥
- देव्युवाच ॥ ॥३७॥
- गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्-पिबाम्यहम् ।
  मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः ॥ ॥३८॥ मधु

- **ऋषिरुवाच ॥** ॥३९॥
- **एव-मुक्त्वा समुत्पत्य साऽऽरूढा तं महासुरम् ।**
  पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूले-नैनम-ताडयत् ॥ ॥४०॥
- **ततः सोऽपि पदाऽऽक्रान्तस्तया निजमुखात्ततः ।**
  अर्ध-निष्क्रान्त एवासीद् देव्या वीर्येण संवृतः ॥ ॥४१॥
- **अर्धनिष्क्रान्त एवासौ युध्यमानो महासुरः ।**
  तया महासिना देव्या शिरश्छित्त्वा निपातितः ॥ ॥४२॥ लौकी
- **ततो हाहाकृतं सर्वं दैत्यसैन्यं ननाश तत् ।**
  प्रहर्षं च परं जग्मुः सकला देवता-गणाः ॥ ॥४३॥
- **तुष्टु-वुस्तां सुरा देवीं सह दिव्यैर्महर्षिभिः ।**
  जगुर्गन्धर्व-पतयो ननृतुश्चाप्-सरोगणाः ॥ॐ॥ ॥४४॥ पान, सोपारी

॥ इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये महिषासुर वधो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥३॥
॥ उवाच ३, श्लोकाः ४१, एवम् ४४, एवमादितः॥२१७॥

- अध्यायान्ते माष दधि गुग्गुल पायस सहिता ॐ नमोदेव्यै... ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा । एकैवाहुतिः देया । इति तृतीय अध्याय हवन विधानम् ॥

॥ श्री दुर्गासप्तशती - चतुर्थोऽध्यायः (४) ॥

इन्द्रादि देवताओं द्वारा देवी की स्तुति

- ध्यानम्

ॐ कालाभ्राभां कटा-क्षैर-रिकुल-भयदां मौलि-बद्धेन्दुरेखां,
शङ्खं चक्रं कृपाणं त्रिशिख-मपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम् ।
सिंहस्कन्धाधि-रूढां त्रिभुवन-मखिलं तेजसा पूरयन्तीं,
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदश-परिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः ॥

- ॐ ऋषिरुवाच ॥ ॥ १॥
- शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये,
तस्मिन्दुरात्मनि सुरारि-बले च देव्या ।
तां तुष्टुवुः प्रणति-नम्र-शिरो-धरांसा
वाग्भिः प्रहर्ष-पुलकोद्-गमचारु-देहाः ॥ ॥ २॥
- देव्या यया ततमिदं जगदात्म-शक्त्या
निश्शेष-देव-गण-शक्ति समूह-मूर्त्या ।
तामम्बिका-मखिल-देव-महर्षि-पूज्यां
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः ॥ ॥ ३॥ केला
- यस्याः प्रभाव-मतुलं भगवाननन्तो
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च ।
सा चण्डिका-खिल-जगत् परिपालनाय
नाशाय चाशु-भभयस्य मतिं करोतु ॥ ॥ ४॥
- या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्व-लक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ।
श्रद्धा सतां कुलजन प्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ॥ ॥ ५॥
- किं वर्णयाम तव रूप-मचिन्त्य-मेतत्,
किं चाति-वीर्य-मसुर-क्षयकारि भूरि ।
किं चाहवेषु चरितानि तवाद्भुतानि,
सर्वेषु देव्य-सुरदेव-गणादि-केषु ॥ ॥ ६॥

- हेतुः समस्त-जगतां त्रिगुणापि दोषै-
  र्न ज्ञायसे हरिहरादि-भिरप्य पारा ।
  सर्वा-श्रया-खिल-मिदं जगदंशभूत-
  मव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्व-माद्या ॥ ॥ ७॥ बिल्वफल

- यस्याः समस्त-सुरता समुदी-रणेन
  तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि ।
  स्वाहासि वै पितृ-गणस्य च तृप्तिहेतु-
  रुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च ॥ ॥ ८॥ श्वेत चन्दन

- या मुक्ति-हेतु-रविचिन्त्य महाव्रता त्व-
  मभ्यस्यसे सुनियतेन्-द्रिय-तत्त्वसारैः ।
  मोक्षार्थि-भिर्मुनिभिरस्त-समस्त-दोषै-
  र्विद्यासि सा भगवती परमा हि देवि ॥ ॥ ९॥

- शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधान-
  मुद्गी-थरम्य-पद-पाठवतां च साम्नाम् ।
  देवी त्रयी भगवती भव-भावनाय
  वार्ता च सर्व-जगतां परमार्ति-हन्त्री ॥ ॥१०॥

- मेधासि देवि विदिता-खिल-शास्त्र-सारा
  दुर्गासि दुर्ग-भव-सागर-नौरसङ्गा ।
  श्रीः कैटभारि-हृदयैक-कृताधि-वासा
  गौरी त्वमेव शशि-मौलि-कृत-प्रतिष्ठा ॥ ॥११॥ कर्पूर

- ईषत्सहास-ममलं परि-पूर्ण-चन्द्र-
  बिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्तम् ।
  अत्यद्भुतं प्रहृत-मात्तरुषा तथापि
  वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ॥ ॥१२॥

- दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रुकुटी-कराल-
  मुद्यच्छ-शाङ्क-सदृशच्छवि यन्न सद्यः ।
  प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं
  कैर्जीव्यते हि कुपितान्-तकदर्शनेन ॥ ॥१३॥

- देवि प्रसीद परमा भवती भवाय
  सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि ।
  विज्ञातमे-तदधुनैव यदस्तमेत-
  न्नीतं बलं सुविपुलं महिषा-सुरस्य ॥ ॥१४॥

- ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां
  तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः ।
  धन्यास्त एव निभृतात्मज-भृत्यदारा
  येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ॥ ॥१५॥

- धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्मा-
  ण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति ।
  स्वर्गं प्रयाति च ततो भवती प्रसादा-
  ल्लोक-त्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन ॥ ॥१६॥

- दुर्गे स्मृता हरसि भीति-मशेष-जन्तोः
  स्वस्थैः स्मृता मति-मतीव शुभां ददासि ।
  दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या
  सर्वो-पकार-करणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता ॥ ॥१७॥

- एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते
  कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम् ।
  संग्राम-मृत्यु-मधिगम्य दिवं प्रयान्तु
  मत्वेति नून-महितान् विनिहंसि देवि ॥ ॥१८॥

- दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म
  सर्वा-सुरा-नरिषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम् ।
  लोकान् प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता
  इत्थं मतिर्भवति तेष्वपि तेऽति-साध्वी ॥ ॥१९॥

- खड्ग-प्रभा-निकर-विस्फुरणैस्तथोग्रैः
  शूलाग्र-कान्ति-निवहेन दृशोऽ सुराणाम् ।
  यन्नागता विलयमं-शुम-दिन्दु-खण्ड-
  योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत् ॥ ॥२०॥

- दुर्वृत्त-वृत्त-शमनं तव देवि शीलं
  रूपं तथै-तद-विचिन्त्य-मतुल्य-मन्यैः ।
  वीर्यं च हन्तृ हृत-देव-पराक्रमाणां
  वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम् ॥ ॥२१॥

- केनोपमा भवतु तेऽस्य परा-क्रमस्य
  रूपं च शत्रु-भय-कार्यति-हारि कुत्र ।
  चित्ते कृपा समर-निष्ठुरता च दृष्टा
  त्वय्येव देवि वरदे भुवन-त्रयेऽपि ॥ ॥२२॥

- त्रैलोक्य-मे-तदखिलं रिपुना-शनेन
  त्रातं त्वया समर-मूर्धनि तेऽपि हत्वा ।
  नीता दिवं रिपुगणा भयमप्य-पास्त-
  मस्माकमुन्-मदसुरारिभवं नमस्ते ॥ ॥२३॥ सीताफल

- शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ।
  घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥ ॥२४॥

- प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ।
  भ्रामणे-नात्म-शूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ ॥२५॥

- सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ।
  यानि चात्यर्थ-घोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥ ॥२६॥

- खड्ग-शूल-गदादीनि यानि चास्त्राणी तेऽम्बिके ।
  कर-पल्लव-सङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥ ॥२७॥

- एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः ।
  अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानु-लेपनैः ॥ ॥२९॥ रक्त चन्दन

- भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैस्तु धूपिता ।
  प्राह प्रसाद-सुमुखी समस्तान् प्रणतान् सुरान् ॥ ॥३०॥ गुग्गुल

- देव्युवाच ॥ ॥३१॥

- व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽ भिवाञ्छितम् ॥ ॥३२॥

- देवा ऊचुः ॥ ॥३३॥

- भगवत्या कृतं सर्वं न किंचिदव-शिष्यते ॥ ॥३४॥

- **यदयं निहतः शत्रु-रस्माकं महिषासुरः ।**
  यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि ॥ **॥३५॥**

- **संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः ।**
  यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्य-मलानने ॥ **॥३६॥**

- **तस्य वित्तर्द्धिविभवैर्धन-दारादि-सम्पदाम् ।**
  वृद्धयेऽस्मत् प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके ॥ **॥३७॥**

- **ऋषिरुवाच ॥** **॥३८॥**

- **इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथाऽऽत्मनः ।**
  तथेत्युक्त्वा भद्रकाली बभूवान्तर्हिता नृप ॥ **॥३९॥**

- **इत्येतत् कथितं भूप सम्भूता सा यथा पुरा ।**
  देवी देव-शरीरेभ्यो जगत्त्रय-हितैषिणी ॥ **॥४०॥**

- **पुनश्च गौरी-देहात्सा समुद्भूता यथा-भवत् ।**
  वधाय दुष्ट-दैत्यानां तथा शुम्भ-निशुम्भयोः ॥ **॥४१॥**

- **रक्षणाय च लोकानां देवाना-मुप-कारिणी ।**
  तच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातं यथावत्-कथयामि ते ॥ह्रीं ॐ॥ **॥४२॥** तिल, मधु, गुग्गुल

॥ इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये शक्रादिस्तुतिर्नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥
॥ उवाच ५, अर्धश्लोकौः २, श्लोकाः ३५, एवम् ४२, एवमादितः ॥२५९॥

- चतुर्थाध्याये तु प्रथम मन्त्रादारभ्य " खड्गशूल गदादीनि... २७ मन्त्र पर्यन्तं पायसेन वा यवागुना (गेहु का हलुवा) आहुतिर्विधानं वर्तते ।

- शूलेन पाहि नो... २४ आरभ्य खड्ग शूल गदादीनि... २७ पर्यन्तं चतुर्भिर्मन्त्रैर्हवनं न करणीयम् तत्तत्परिवर्ते ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे स्वाहा" इति मूलेन चतुर्आहुतयो देया ।

- अध्यायान्ते घृत पायस यवागुभिः (गेहु का हलुवा) ॐ नमो देव्यै... ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै त्रिवर्णात्मिकायै त्रिशक्त्यै महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा । इति एकाहुतिः देया ।
  इति चतुर्थ अध्याय हवन विधानम् ॥

॥ श्री दुर्गासप्तशती - पञ्चमोऽध्यायः (५) ॥

देवताओं द्वारा देवी की स्तुति, चण्ड-मुण्डके मुख से अम्बिका के रूप की प्रशंसा सुनकर शुम्भ का उनके पास दूत भेजना और दूत का निराश लौटना

- विनियोगः ॐ अस्य श्री उत्त रचरित्रस्य रूद्र ऋषिः । महासरस्वती देवता । अनुष्टुप् छन्दः । भीमा शक्तिः । भ्रामरी बीजम् । सूर्यस्तत्त्वम् । सामवेदः स्वरूपम् । महासरस्वती प्रीत्यर्थे उत्तर चरित्र पाठे विनियोगः ।

- ध्यानम् **ॐ घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुसले चक्रं धनुः सायकं,**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतां-शुतुल्य-प्रभाम् ।
गौरी-देह-समुद्भवां त्रिजगता-माधार-भूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वती-मनु-भजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम् ॥

- **ॐ क्लीं" ऋषिरुवाच ॥** ॥ १॥
- **पुरा शुम्भ-निशुम्भा-भ्याम-सुराभ्यां शचीपतेः ।**
त्रैलोक्यं यज्ञभागाश्च हृता मद-बला-श्रयात् ॥ ॥ २॥
- **तावेव सूर्यतां तद्वदधिकारं तथैन्दवम् ।**
कौबेरमथ याम्यं च चक्राते वरुणस्य च ॥ ॥ ३॥
- **तावेव पवनर्द्धिं च चक्रतुर्वह्निकर्म च ।**
ततो देवा विनिर्धूता भ्रष्टराज्याः पराजिताः ॥ ॥ ४॥
- **हृताधिकारास्त्रि-दशास्ताभ्यां सर्वे निराकृताः ।**
महासुराभ्यां तां देवीं संस्मरन्त्य-पराजिताम् ॥ ॥ ५॥
- **तयास्माकं वरो दत्तो यथाऽऽपत्सु स्मृता-खिलाः ।**
भवतां नाशयिष्यामि तत्क्षणात्-परमापदः ॥ ॥ ६॥
- **इति कृत्वा मतिं देवा हिमवन्तं नगेश्वरम् ।**
जग्मुस्तत्र ततो देवीं विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः ॥ ॥ ७॥
- **देवा ऊचुः ॥** ॥ ८॥
- **नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।**
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ ॥ ९॥ हलुवा

- रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः ।
  ज्योत्स्नायै चेन्दु-रूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥ ॥१०॥ आंवला

- कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः ।
  नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥ ॥११॥ भोजपत्र

- दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्व-कारिण्यै ।
  ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥ ॥१२॥

- अति-सौम्याति-रौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः ।
  नमो जगत्-प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥ ॥१३॥

- या देवी सर्वभूतेषु विष्णु-मायेति शब्दिता ।
  नमस्तस्यै ॥१४॥ नमस्तस्यै ॥१५॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥१६॥

- या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभि-धीयते ।
  नमस्तस्यै ॥१७॥ नमस्तस्यै ॥१८॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥१९॥

- या देवी सर्वभूतेषु बुद्धि-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै ॥२०॥ नमस्तस्यै ॥२१॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥२२॥

- या देवी सर्वभूतेषु निद्रा-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै ॥२३॥ नमस्तस्यै ॥२४॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥२५॥

- या देवी सर्वभूतेषु क्षुधा-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै ॥२६॥ नमस्तस्यै ॥२७॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥२८॥

- या देवी सर्वभूतेषु-च्छाया-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै ॥२९॥ नमस्तस्यै ॥३०॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥३१॥

- या देवी सर्वभूतेषु शक्ति-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै ॥३२॥ नमस्तस्यै ॥३३॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥३४॥

- या देवी सर्वभूतेषु तृष्णा-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै ॥३५॥ नमस्तस्यै ॥३६॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥३७॥

- या देवी सर्वभूतेषु क्षान्ति-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै ॥३८॥ नमस्तस्यै ॥३९॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥४०॥

- या देवी सर्वभूतेषु जाति-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै ॥४१॥ नमस्तस्यै ॥४२॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥४३॥

- या देवी सर्वभूतेषु लज्जा-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै ॥४४॥ नमस्तस्यै ॥४५॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥४६॥

- या देवी सर्वभूतेषु शान्ति-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै ॥४७॥ नमस्तस्यै ॥४८॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥४९॥

- या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धा-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै ॥५०॥ नमस्तस्यै ॥५१॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥५२॥

- या देवी सर्वभूतेषु कान्ति-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै ॥५३॥ नमस्तस्यै ॥५४॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ ॥५५॥

- या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मी-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै ॥५६॥ नमस्तस्यै ॥५७॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥५८॥

- या देवी सर्वभूतेषु वृत्ति-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै ॥५९॥ नमस्तस्यै ॥६०॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥६१॥

- या देवी सर्वभूतेषु स्मृति-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै ॥६२॥ नमस्तस्यै ॥६३॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥६४॥

- या देवी सर्वभूतेषु दया-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै ॥६५॥ नमस्तस्यै ॥६६॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥६७॥

- या देवी सर्वभूतेषु तुष्टि-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै ॥६८॥ नमस्तस्यै ॥६९॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥७०॥

- या देवी सर्वभूतेषु मातृ-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै ॥७१॥ नमस्तस्यै ॥७२॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥७३॥

- या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्ति-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै ॥७४॥ नमस्तस्यै ॥७५॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥७६॥

- इन्द्रियाणा-मधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या ।
  भूतेषु सततं तस्यै व्याप्ति-देव्यै नमो नमः ॥ ॥७७॥

- चिति-रूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत् ।
  नमस्तस्यै ॥७८॥ नमस्तस्यै ॥७९॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥८०॥

- स्तुता सुरैः पूर्व-मभीष्ट-संश्रया-
  त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता ।
  करोतु सा नः शुभ-हेतु-रीश्वरी
  शुभानि भद्राण्य-भिहन्तु चापदः ॥ ॥८१॥

- या साम्प्रतं चोद्धत-दैत्य-तापितै-
  रस्माभि-रीशा च सुरैर्नमस्यते ।
  या च स्मृता तत्-क्षणमेव हन्ति नः
  सर्वापदो भक्ति-विनम्र-मूर्तिभिः ॥ ॥८२॥

- ऋषिरुवाच ॥ ॥८३॥

- एवं स्तवादि-युक्तानां देवानां तत्र पार्वती ।
  स्नातु-मभ्या-ययौ तोये जाह्नव्या नृपनन्दन ॥ ॥८४॥

- साब्रवीत्तान् सुरान् सुभ्रूर्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का ।
  शरीर-कोशतश्चास्याः समुद्भूता-ब्रवीच्छिवा ॥ ॥८५॥

- स्तोत्रं ममैतत् क्रियते शुम्भ-दैत्य-निराकृतैः ।
  देवैः समेतैः समरे निशुम्भेन पराजितैः ॥ ॥८६॥

- शरीर-कोशाद्यत्तस्याः पार्वत्या निःसृताम्बिका ।
  कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते ॥ ॥८७॥

- तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णा-भूत्सापि पार्वती ।
  कालिकेति समाख्याता हिमाचल-कृताश्रया ॥ ॥८८॥

- ततोऽम्बिकां परं रूपं बिभ्राणां सुमनोहरम् ।
  ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुम्भ-निशुम्भयोः ॥ ॥८९॥

- ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता अतीव सुमनोहरा ।
  काप्यास्ते स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम् ॥ ॥९०॥

- नैव तादृक् क्वचिद्रूपं दृष्टं केनचिदुत्तमम् ।
  ज्ञायतां काप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरेश्वर ॥ ॥९१॥

- स्त्रीरत्न-समतिचार्वङ्गी द्योतयन्ती दिशस्त्विषा ।
  सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र तां भवान् द्रष्टुमर्हति ॥ ॥९२॥

- यानि रत्नानि मणयो गजा-श्वादीनि वै प्रभो ।
  त्रैलोक्ये तु समस्तानि साम्प्रतं भान्ति ते गृहे ॥ ॥९३॥
- ऐरावत: समानीतो गजरत्नं पुरन्दरात् ।
  पारिजात-तरुश्चायं तथैवोच्चै:श्रवा हय: ॥ ॥९४॥
- विमानं हंस-संयुक्त-मेतत्-तिष्ठति तेऽङ्गणे ।
  रत्नभूत-मिहानीतं यदासीद्वेधसोऽद्भुतम् ॥ ॥९५॥
- निधिरेष महापद्म: समानीतो धनेश्वरात् ।
  किञ्जल्किनीं ददौ चाब्धिर्माला-मम्लान-पङ्कजाम् ॥ ॥९६॥ कमलगट्टा
- छत्रं ते वारुणं गेहे काञ्चनस्रावि तिष्ठति ।
  तथायं स्यन्दनवरो य: पुराऽऽसीत्-प्रजापते: ॥ ॥९७॥
- मृत्योरुत्-क्रान्तिदा नाम शक्तिरीश त्वया हृता ।
  पाश: सलिल-राजस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे ॥ ॥९८॥
- निशुम्भस्याब्धि-जाताश्च समस्ता रत्नजातय: ।
  वह्निरपि ददौ तुभ्य-मग्नि-शौचे च वाससी ॥ ॥९९॥
- एवं दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्या-हृतानि ते ।
  स्त्री-रत्न-मेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते ॥ ॥१००॥
- ऋषिरुवाच ॥ ॥१०१॥
- निशम्येति वच: शुम्भ: स तदा चण्ड-मुण्डयो: ।
  प्रेषया-मास सुग्रीवं दूतं देव्या महासुरम् ॥ ॥१०२॥
- इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्मम ।
  यथा चाभ्येति सम्प्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु ॥ ॥१०३॥
- स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोद्देशेऽति-शोभने ।
  सा देवी तां तत: प्राहश्लक्ष्णं मधुरया गिरा ॥ ॥१०४॥
- दूत उवाच ॥ ॥१०५॥
- देवि दैत्येश्वर: शुम्भ-स्त्रैलोक्ये परमेश्वर: ।
  दूतोऽहं प्रेषितस्तेन त्वत्सकाश-मिहागत: ॥ ॥१०६॥
- अव्या-हताज्ञ: सर्वासु य: सदा देवयोनिषु ।
  निर्जिता-खिल-दैत्यारि: स यदाह श्रृणुष्व तत् ॥ ॥१०७॥

- मम त्रैलोक्य-मखिलं मम देवा वशानुगाः ।
  यज्ञ-भागानहं सर्वानुपाश्नामि पृथक् पृथक् ॥ ॥१०८॥
- त्रैलोक्ये वर-रत्नानि मम वश्यान्यशेषतः ।
  तथैव गजरत्नंर च हृत्वा देवेन्द्र-वाहनम् ॥ ॥१०९॥
- क्षीरो-दमथ-नोद्भूत-मश्वरत्नं ममामरैः ।
  उच्चैःश्रवससंज्ञं तत्-प्रणिपत्य समर्पितम् ॥ ॥११०॥
- यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेषू-रगेषु च ।
  रत्न-भूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने ॥ ॥१११॥
- स्त्रीरत्न-भूतां त्वां देवि लोके मन्यामहे वयम् ।
  सा त्वमस्मानु-पागच्छ यतो रत्न भुजो वयम् ॥ ॥११२॥
- मां वा ममानुजं वापि निशुम्भ-मुरु-विक्रमम् ।
  भज त्वं चञ्चला-पाङ्गि रत्न-भूतासि वै यतः ॥ ॥११३॥
- परमैश्वर्य-मतुलं प्राप्स्यसे मत्परिग्रहात् ।
  एतद् बुद्ध्या समालोच्य मत्परिग्रहतां व्रज ॥ ॥११४॥
- ऋषिरुवाच ॥ ॥११५॥
- इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तःस्मिता जगौ ।
  दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत् ॥ ॥११६॥
- देव्युवाच ॥ ॥११७॥
- सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किञ्चित्त्व-योदितम् ।
  त्रैलोक्याधि-पतिः शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृशः ॥ ॥११८॥
- किं त्वत्र यत्प्रतिज्ञातं मिथ्या तत्क्रियते कथम् ।
  श्रूयतामल्प-बुद्धित्वात्-प्रतिज्ञा या कृता पुरा ॥ ॥११९॥
- यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति ।
  यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति ॥ ॥१२०॥ काजल
- तदागच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महासुरः ।
  मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणिं गृह्णातु मे लघु ॥ ॥१२१॥ हिंगुल
- दूत उवाच ॥ ॥१२२॥

- अवलिप्तासि मैवं त्वं देवि ब्रूहि ममाग्रतः ।
  त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेदग्रे शुम्भ-निशुम्भयोः ॥ ॥१२३॥
- अन्येषामपि दैत्यानां सर्वे देवा न वै युधि ।
  तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि किं पुनः स्त्री त्वमेकिका ॥ ॥१२४॥
- इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुर्येषां न संयुगे ।
  शुम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यसि सम्मुखम् ॥ ॥१२५॥
- सा त्वं गच्छ मयै-वोक्ता पार्श्वं शुम्भ-निशुम्भयोः ।
  केशा-कर्षण-निर्धूत-गौरवा मा गमिष्यसि ॥ ॥१२६॥
- देव्युवाच ॥ ॥१२७॥
- एवमेतद् बली शुम्भो निशुम्भश्चायति-वीर्यवान् ।
  किं करोमि प्रतिज्ञा मे यदना-लोचिता पुरा ॥ ॥१२८॥
- स त्वं गच्छ मयोक्तं ते यदेतत्-सर्वमादृतः ।
  तदाचक्ष्वा-सुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु तत् ॥ॐ॥ ॥१२९॥ पान, सोपारी, गन्ना

॥ इति श्री मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये देव्या दूतसंवादो नाम पञ्चमोऽध्यायः॥५॥
॥ उवाच ९, त्रिपान्मन्त्राः ६६, श्लोकाः ५४, एवम् १२९, एवमादितः॥३८८॥

- अध्यायान्ते श्वेतचन्दन कुंकुम बिल्वपत्रोपरि ॐ नमो देव्यै महादेव्यै... ॐ सांगायै सपरिवारायै सशतिकायै सायुधायै सवाहनायै विष्णुमायादि चतुर्विंशति देव्यैसरस्वत्यै नमः स्वाहा ।
  एकाहुतिः देया ।
  इति पंचमो अध्याय हवन विधानम् ॥

॥ श्री दुर्गासप्तशती - षष्ठोऽध्यायः (६) ॥

धूम्रलोचन-वध

- **ध्यानम्**

ॐ नागा-धीश्वसर-विष्टरां फणि-फणोत्तंसोरु-रत्नावली-
भास्वद्देहलतां दिवाक-रनिभां नेत्रत्रयोद्भासिताम् ।
माला-कुम्भ-कपाल-नीर-जकरां चन्द्रार्धचूडां परां
सर्वज्ञेश्वर-भैरवाङ्क-निलयां पद्मावतीं चिन्तये ॥

- "ॐ" ऋषिरुवाच ॥ ॥ १॥
- इत्याकर्ण्य वचो देव्याः स दूतोऽमर्ष-पूरितः ।
समाचष्ट समागम्य दैत्य-राजाय विस्तरात् ॥ ॥ २॥
- तस्य दूतस्य तद्वाक्य-माकर्ण्या-सुरराट् ततः ।
सक्रोधः प्राह दैत्याना-मधिपं धूम्र-लोचनम् ॥ ॥ ३॥
- हे धूम्र-लोचनाशु त्वं स्वसैन्य-परिवारितः ।
तामानय बलाद् दुष्टां केशा-कर्षण-विह्वलाम् ॥ ॥ ४॥ गुग्गुल
- तत्परित्राणदः कश्चिद्यदि वोत्तिष्ठतेऽपरः ।
स हन्तव्योऽमरो वापि यक्षो गन्धर्व एव वा ॥ ॥ ५॥
- ऋषिरुवाच ॥ ॥ ६॥
- तेनाज्ञप्तस्ततः शीघ्रं स दैत्यो धूम्रलोचनः ।
वृतः षष्ट्या सहस्राणा-मसुराणां द्रुतं ययौ ॥ ॥ ७॥
- स दृष्ट्वा तां ततो देवीं तुहिनाचल-संस्थिताम् ।
जगादोच्चैः प्रयाहीति मूलं शुम्भ-निशुम्भयोः ॥ ॥ ८॥
- न चेत्-प्रीत्याद्य भवती मद्भर्तार-मुपैष्यति ।
ततो बलान्नयाम्येष केशा-कर्षण-विह्वलाम् ॥ ॥ ९॥
- देव्युवाच ॥ ॥१०॥
- दैत्येश्वरेण प्रहितो बलवान् बल-संवृतः ।
बलान्नयसि मामेवं ततः किं ते करोम्यहम् ॥ ॥११॥
- ऋषिरुवाच ॥ ॥१२॥
- इत्युक्तः सोऽभ्य-धावत्ता-मसुरो धूम्र-लोचनः ।
हुंकारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका ततः ॥ ॥१३॥ निम्बू

- अथ क्रुद्धं महासैन्य-मसुराणां तथाम्बिका ।
  ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णैस्तथा शक्ति-परश्वधैः ॥ ॥१४॥
- ततो धुतसटः कोपात्कृत्वा नादं सुभैरवम् ।
  पपाता-सुर-सेनायां सिंहो देव्याः स्ववाहनः ॥ ॥१५॥
- कांश्चित् कर-प्रहारेण दैत्यानास्येन चापरान् ।
  आक्रम्य चाधरेणान्यान् स जघान महासुरान् ॥ ॥१६॥
- केषांचित्-पाटयामास नखैः कोष्ठानि केसरी ।
  तथा तल-प्रहारेण शिरांसि कृतवान् पृथक् ॥ ॥१७॥
- विच्छिन्न-बाहु-शिरसः कृतास्तेन तथापरे ।
  पपौ च रुधिरं कोष्ठा-दन्येषां धुत-केसरः ॥ ॥१८॥ केशर
- क्षणेन तद्बलं सर्वं क्षयं नीतं महात्मना ।
  तेन केसरिणा देव्या वाहने-नाति-कोपिना ॥ ॥१९॥ राई
- श्रुत्वा तमसुरं देव्या निहतं धूम्र-लोचनम् ।
  बलं च क्षयितं कृत्स्नं देवी-केसरिणा ततः ॥ ॥२०॥ लोहबान
- चुकोप दैत्याधि-पतिः शुम्भः प्रस्फुरिताधरः ।
  आज्ञा-पया-मास च तौ चण्ड-मुण्डौ महासुरौ ॥ ॥२१॥
- हे चण्ड हे मुण्ड बलैर्बहुभिः परिवारितौ ।
  तत्र गच्छत गत्वा च सा समानीयतां लघु ॥ ॥२२॥
- केशेष्वा-कृष्य बद्ध्वा वा यदि वः संशयो युधि ।
  तदा-शेषा-युधैः सर्वैरसुरैर्विनिहन्यताम् ॥ ॥२३॥ भोजपत्र
- तस्यां हतायां दुष्टायां सिंहे च विनि-पातिते ।
  शीघ्रमागम्यतां बद्ध्वा गृहीत्वा तामथाम्बिकाम् ॥ॐ॥ ॥२४॥ गन्ना, केनर पुष्प

॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शुम्भनिशुम्भसेनानीधूम्रलोचनवधो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥६॥
॥ उवाच ४, श्लोकाः २०, एवम् २४, एवमादितः ॥४१२॥

- अध्यायान्ते "कूष्माण्ड" ॐ नमो देव्यै ... ॐ सांगायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै धूम्राक्ष्यै शक्त्यै नमः स्वाहा । एकाहुतिः देया ।
  इति षष्ठम् अध्याय हवन विधानम् ॥

॥ अथ श्रीदुर्गासप्तशती - सप्तमोऽध्यायः (७) ॥

चण्ड और मुण्ड का वध

- **ध्यानम्** ॐ ध्यायेयं रत्नपीठे शुक-कल-पठितं शृण्वतीं श्याम-लाङ्गीं,
न्यस्तै-काङ्घ्रिं सरोजे शशि-शकल-धरां वल्लकीं वादयन्तीम् ।
कह्लारा-बद्ध-मालां नियमित-विलस-च्चोलिकां रक्त-वस्त्रां
मातङ्गीं शङ्ख-पात्रां मधुर-मधु-मदां चित्रकोद्भासिभालाम् ॥

- "ॐ" ऋषिरुवाच ॥ ॥ १॥
- आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याश्चण्ड-मुण्ड-पुरोगमाः ।
चतुरङ्ग-बलोपेता ययुरभ्यु-द्यता-युधाः ॥ ॥ २॥
- ददृशुस्ते ततो देवी-मीषद्धासां व्यवस्थिताम् ।
सिंहस्यो-परि शैलेन्द्र-शृङ्गे महति काञ्चने ॥ ॥ ३॥
- ते दृष्ट्वा तां समादातु-मुद्यमं चक्रु-रुद्यताः ।
आकृष्ट-चापासिधरास्तथान्ये तत्समीपगाः ॥ ॥ ४॥
- ततः कोपं चकारोच्चै-रम्बिका तानरीन् प्रति ।
कोपेन चास्या वदनं मषी-वर्णम-भूत्तदा ॥ ॥ ५॥ कस्तूरी, कज्जल
- भ्रुकुटी-कुटिला-त्तस्या ललाट-फलका-द्द्रुतम् ।
काली कराल-वदना विनिष्क्रान्तासि-पाशिनी ॥ ॥ ६॥
- विचित्र-खट्वाङ्ग-धरा नर-माला-विभूषणा ।
द्वीपिचर्म-परीधाना शुष्क-मांसाति-भैरवा ॥ ॥ ७॥
- अति-विस्तार-वदना जिह्वा-ललन-भीषणा ।
निमग्ना-रक्त-नयना नादा-पूरित-दिङ्मुखा ॥ ॥ ८॥
- सा वेगे-नाभि-पतिता घातयन्ती महासुरान् ।
सैन्ये तत्र सुरारीणा-मभक्षयत तद्बलम् ॥ ॥ ९॥
- पार्ष्णिग्राहाङ्कुश-ग्राहियोध-घण्टा-समन्वितान् ।
समा-दायैक-हस्तेन मुखे चिक्षेप वारणान् ॥ ॥१०॥

- तथैव योधं तुरगै रथं सारथिना स ह ।
  निक्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्वयन्त्यति-भैरवम् ॥ ॥११॥
- एकं जग्राह केशेषु ग्रीवाया-मथ चापरम् ।
  पादे-नाक्रम्य चैवान्य-मुरसान्य-मपोथयत् ॥ ॥१२॥
- तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथासुरैः ।
  मुखेन जग्राह रुषा दशनैर्मथितान्यपि ॥ ॥१३॥
- बलिनां तद् बलं सर्व-मसुराणां दुरात्मनाम् ।
  ममर्दा-भक्ष-यच्चान्यान-न्यांश्चा-ताड-यत्तथा ॥ ॥१४॥
- असिना निहताः केचित्-केचित्-खट्वाङ्ग-ताडिताः ।
  जग्मुर्विनाश-मसुरा दन्ता-ग्राभि-हतास्तथा ॥ ॥१५॥
- क्षणेन तद् बलं सर्व-मसुराणां निपातितम् ।
  दृष्ट्वा चण्डोऽभि-दुद्राव तां काली-मति-भीषणाम् ॥१६॥
- शरवर्षैर्महाभीमैर्भीमाक्षीं तां महासुरः ।
  छादया-मास चक्रैश्च मुण्डः क्षिप्तैः सहस्रशः ॥ ॥१७॥
- तानि चक्राण्य-नेकानि विश-मानानि तन्मुखम् ।
  बभुर्यथार्कबिम्बानि सुबहूनि घनोदरम् ॥ ॥१८॥
- ततो जहासातिरुषा भीमं भैरव-नादिनी ।
  काली-कराल-वक्त्रान्तर्दुर्दर्श दशनोज्ज्वला ॥ ॥१९॥
- उत्थाय च महासिं हं देवी चण्डम-धावत ।
  गृहीत्वा चास्य केशेषु शिरस्ते-नासि-नाच्छिनत् ॥ ॥२०॥ केला
- अथ मुण्डोऽभ्य-धावत्तां दृष्ट्वा चण्डं निपा-तितम् ।
  तमप्यपात-यद्भूमौ सा खड्गाभि-हतं रुषा ॥ ॥२१॥
- हतशेषं ततः सैन्यं दृष्ट्वा चण्डं निपा-तितम् ।
  मुण्डं च सुमहावीर्यं दिशो भेजे भयातुरम् ॥ ॥२२॥
- शिरश्चण्डस्य काली च गृहीत्वा मुण्डमेव च ।
  प्राह प्रचण्डाट्टहास-मिश्र-मभ्येत्य चण्डिकाम् ॥ ॥२३॥ निम्बू
- मया तवात्रोपहृतौ चण्डमुण्डौ महापशू ।
  युद्धयज्ञे स्वयं शुम्भं निशुम्भं च हनिष्यसि ॥ ॥२४॥

- **ऋषिरुवाच ॥** **॥२५॥**
- **तावानीतौ ततो दृष्ट्वा चण्ड-मुण्डौ महासुरौ ।**
  उवाच कालीं कल्याणी ललितं चण्डिका वचः ॥ **॥२६॥** कमलगट्टा
- **यस्मा-च्चण्डं च मुण्डं च गृहीत्वा त्वमुपा-गता ।**
  चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवि भविष्यसि ॥ॐ॥ **॥२७॥** चिरौंजी

॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये चण्डमुण्डवधो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥७॥
॥ उवाच २, श्लोकाः २५, एवम् २७, एवमादितः ॥४३९॥

- अध्यायान्ते चिरञ्जिबीजैः सिता (शर्करा) बादाम लज्जावन्तिपुष्पैः "ॐ नमो देव्यै ... ॐ सांगायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै कर्पूरबीजाधिष्ठात्र्यै काली चामुण्डा देव्यै नमः स्वाहा । एकाहुतिः देया ।
  इति सप्तम् अध्याय हवन विधानम् ॥

॥ श्री दुर्गासप्तशती - अष्टमोऽध्यायः (८) ॥

रक्तबीज-वध

- **ध्यानम्**

ॐ अरुणां करुणा-तरङ्गिताक्षीं
धृत-पाशाङ्कुश-बाण-चाप-हस्ताम् ।
अणि-मादि-भिरा-वृतां मयूखै-
रह-मित्येव विभावये भवानीम् ॥

- "ॐ" ऋषिरुवाच ॥ ॥ १॥
- चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनि-पातिते ।
बहुलेषु च सैन्येषु क्षयितेष्व-सुरेश्वरः ॥ ॥ २॥
- ततः कोप-पराधीन-चेताः शुम्भः प्रतापवान् ।
उद्योगं सर्व-सैन्यानां दैत्या-नामादि-देश ह ॥ ॥ ३॥
- अद्य सर्व-बलैर्दैत्याः षड-शीति-रुदायुधाः ।
कम्बूनां चतुर-शीतिर्निर्यान्तु स्वबलैर्वृताः ॥ ॥ ४॥
- कोटि-वीर्याणि पञ्चाशद-सुराणां कुलानि वै ।
शतं कुलानि धौम्राणां निर्गच्छन्तु ममाज्ञया ॥ ॥ ५॥
- कालका दौर्हृद मौर्याः कालकेयास्-तथासुराः ।
युद्धाय सज्जा निर्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम ॥ ॥ ६॥
- इत्या-ज्ञाप्या-सुरपतिः शुम्भो भैरव-शासनः ।
निर्जगाम महासैन्य-सहस्रैर्बहुभिर्वृतः ॥ ॥ ७॥
- आयान्तं चण्डिका दृष्ट्वा तत्सैन्य-मति-भीषणम् ।
ज्यास्वनैः पूरयामास धरणी-गगनान्तरम् ॥ ॥ ८॥
- ततः सिंहो महानाद-मतीव कृतवान् नृप ।
घण्टा-स्वनेन तन्नाद-मम्बिका चोपबृंहयत् ॥ ॥ ९॥
- धनुर्ज्यासिंह-घण्टानां नादा-पूरित-दिङ्मुखा ।
निनादैर्भीषणैः काली जिग्ये विस्तारितानना ॥ ॥१०॥

- तं निनाद-मुपश्रुत्य दैत्य-सैन्यैश्चतुर्दिशम् ।
  देवी सिंहस्तथा काली सरोषैः परिवारिताः ॥ ॥११॥

- एतस्मिन्-नन्तरे भूप विनाशाय सुरद्विषाम् ।
  भवाया-मर-सिंहाना-मति-वीर्य-बलान्विताः ॥ ॥१२॥

- ब्रह्मेश-गुह-विष्णूनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः ।
  शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्-चण्डिकां ययुः ॥ ॥१३॥

- यस्य देवस्य यद्रूपं यथा-भूषण-वाहनम् ।
  तद्वदेव हि तच्छक्तिरसुरान् योद्धुमाययौ ॥ ॥१४॥

- हंस-युक्त-विमानाग्रे साक्ष-सूत्र-कमण्डलुः ।
  आयाता ब्रह्मणः शक्तिर्ब्रह्माणी साभि-धीयते ॥ ॥१५॥

- माहेश्वरी वृषा-रूढा त्रिशूल-वर-धारिणी ।
  महा-हिवलया प्राप्ता चन्द्र-रेखा-विभूषणा ॥ ॥१६॥

- कौमारी शक्ति-हस्ता च मयूर-वर-वाहना ।
  योद्धु-मभ्या-ययौ दैत्यानम्बिका गुह-रूपिणी ॥ ॥१७॥

- तथैव वैष्णवी शक्तिर्गरुडोपरि संस्थिता ।
  शङ्ख-चक्र-गदा-शाङ्र्ग-खड्ग-हस्ताभ्यु-पाययौ ॥ ॥१८॥

- यज्ञ-वाराह-मतुलं रूपं या बिभ्रतो हरेः ।
  शक्तिः साप्या-ययौ तत्र वाराहीं बिभ्रती तनुम् ॥ ॥१९॥

- नारसिंही नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपुः ।
  प्राप्ता तत्र सटा-क्षेप-क्षिप्त-नक्षत्र-संहतिः ॥ ॥२०॥

- वज्र-हस्ता तथैवैन्द्री गज-राजो-परि स्थिता ।
  प्राप्ता सहस्र-नयना यथा शक्रस्तथैव सा ॥ ॥२१॥

- ततः परिवृतस्ताभि-रीशानो देव-शक्तिभिः ।
  हन्यन्ता-मसुराः शीघ्रं मम प्रीत्याऽऽह चण्डिकाम् ॥ ॥२२॥

- ततो देवी-शरीरात्तु विनिष्-क्रान्ताति-भीषणा ।
  चण्डिका-शक्ति-रत्युग्रा शिवा-शत-निनादिनी ॥ ॥२३॥

- सा चाह धूम्र-जटिल-मीशानम-पराजिता ।
  दूत त्वं गच्छ भगवन् पार्श्वं शुम्भ-निशुम्भयोः ॥ ॥२४॥

- ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च दानवा-वति-गर्वितौ ।
  ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धाय समु-पस्थिताः ॥ ॥२५॥
- त्रैलोक्य-मिन्द्रो लभतां देवाः सन्तु हविर्भुजः ।
  यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितु-मिच्छथ ॥ ॥२६॥
- बला-वले-पादथ चेद्-भवन्तो युद्ध-काङ्क्षिणः ।
  तदा-गच्छत तृप्यन्तु मच्छिवाः पिशितेन वः ॥ ॥२७॥
- यतो नियुक्तो दौत्येन तया देव्या शिवः स्वयम् ।
  शिव-दूतीति लोकेऽस्मिंस्ततः सा ख्याति-मागता ॥ ॥२८॥
- तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वा-ख्यातं महासुराः ।
  अमर्षा-पूरिता जग्मुर्यत्र कात्यायनी स्थिता ॥ ॥२९॥
- ततः प्रथम-मेवाग्रे शरशक्त्यृष्टि-वृष्टिभिः ।
  ववर्षु-रुद्ध-तामर्षास्तां देवी-ममरारयः ॥ ॥३०॥
- सा च तान् प्रहितान् बाणाञ्छूल-शक्ति-परश्वधान् ।
  चिच्छेद लीलयाऽऽध्मात-धनुर्मुक्तैर्महेषुभिः ॥ ॥३१॥
- तस्या-ग्रतस्-तथा काली शूल-पात-विदारितान् ।
  खट्वाङ्ग-पोथितांश्-चारीन् कुर्वती व्यचरत्तदा ॥ ॥३२॥
- कमण्डलु-जलाक्षेप-हतवीर्यान् हतौजसः ।
  ब्रह्माणी चाकरोच्-छत्रून् येन येन स्म धावति ॥ ॥३३॥
- माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण वैष्णवी ।
  दैत्याञ्जघान कौमारी तथा शक्त्याति-कोपना ॥ ॥३४॥
- ऐन्द्री-कुलिश-पातेन शतशो दैत्य-दानवाः ।
  पेतुर्विदारिताः पृथ्व्यां रुधि-रौघ-प्रवर्षिणः ॥ ॥३५॥
- तुण्ड-प्रहार-विध्वस्ता दंष्ट्रा-ग्रक्षत-वक्षसः ।
  वाराह-मूर्त्या न्यपतंश्-चाक्रेण च विदारिताः ॥ ॥३६॥
- नखैर्विदारितांश्-चान्यान् भक्षयन्ती महासुरान् ।
  नारसिंही चचाराजौ नादा-पूर्ण-दिगम्बरा ॥ ॥३७॥
- चण्डाट्टहासै-रसुराः शिव-दूत्यभि-दूषिताः ।
  पेतुः पृथिव्यां पतितांस्तांश्-चखादाथ सा तदा ॥ ॥३८॥

- इति मातृगणं क्रुद्धं मर्दयन्तं महासुरान् ।
  दृष्ट्वाभ्यु-पायैर्विविधैर्नेशुर्देवारि-सैनिकाः ॥ ॥३९॥ सरसौं

- पलायन-परान् दृष्ट्वा दैत्यान् मातृ-गणार्दितान् ।
  योद्धु-मभ्या-ययौ क्रुद्धो रक्त-बीजो महासुरः ॥ ॥४०॥

- रक्तबिन्दुर्यदा भूमौ पतत्-यस्य शरीरतः ।
  समुत्-पतति मेदिन्यां तत्-प्रमाणस्-तदासुरः ॥ ॥४१॥ लाल चन्दन

- युयुधे स गदा-पाणि-रिन्द्र-शक्त्या महासुरः ।
  ततश्-चैन्द्री स्व-वज्रेण रक्त-बीज-मता-डयत् ॥ ॥४२॥

- कुलिशेना-हतस्याशु बहु सुस्राव शोणितम् ।
  समुत्तस्थुस्ततो योधास्-तद्रूपास्तत्-पराक्रमाः ॥ ॥४३॥

- यावन्तः पतितास्तस्य शरीराद्रक्त-बिन्दवः ।
  तावन्तः पुरुषा जातास्-तद्वीर्य-बल-विक्रमाः ॥ ॥४४॥

- ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्त-सम्भवाः ।
  समं मातृ-भिरत्युग्र-शस्त्र-पाताति-भीषणम् ॥ ॥४५॥

- पुनश्च वज्र-पातेन क्षत-मस्य शिरो यदा ।
  ववाह रक्तं पुरुषास्ततो जाताः सहस्रशः ॥ ॥४६॥

- वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणाभि-जघान ह ।
  गदया ताडया-मास ऐन्द्री तम-सुरेश्वरम् ॥ ॥४७॥

- वैष्णवी-चक्र-भिन्नस्य रुधि-रस्राव-सम्भवैः ।
  सहस्रशो जगद्व्याप्तं तत्प्रमाणैर्महासुरैः ॥ ॥४८॥

- शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथासिना ।
  माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्तबीजं महासुरम् ॥ ॥४९॥

- स चापि गदया दैत्यः सर्वा एवाहनत् पृथक् ।
  मातृः कोप-समा-विष्टो रक्तबीजो महासुरः ॥ ॥५०॥

- तस्या-हतस्य बहुधा शक्ति-शूलादि-भिर्भुवि ।
  पपात यो वै रक्तौ-घस्ते-नासञ्छतशोऽसुराः ॥ ॥५१॥

- तैश्चासुरासृक्-सम्भूतै-रसुरैः सकलं जगत् ।
  व्याप्त-मासी-त्ततो देवा भय-माजग्-मुरुत्तमम् ॥ ॥५२॥

- तान् विषण्णान् सुरान् दृष्ट्वा चण्डिका प्राह सत्वरा ।
  उवाच कालीं चामुण्डे विस्तीर्णं वदनं कुरु ॥ ॥५३॥
- मच्छस्त्र-पात-सम्भूतान् रक्त-बिन्दून्-महासुरान् ।
  रक्तबिन्दोः प्रतीच्छ त्वं वक्त्रे-णानेन वेगिना ॥ ॥५४॥
- भक्षयन्ती चर रणे तदुत्पन्नान्-महासुरान् ।
  एवमेष क्षयं दैत्यः क्षीणरक्तो गमिष्यति ॥ ॥५५॥
- भक्ष्यमाणास्-त्वया चोग्रा न चोत्-पत्स्यन्ति चापरे ।
  इत्युक्त्वा तां ततो देवी शूलेनाभि-जघान तम् ॥ ॥५६॥ लाल चन्दन
- मुखेन काली जगृहे रक्त-बीजस्य शोणितम् ।
  ततोऽसावा-जघानाथ गदया तत्र चण्डिकाम् ॥ ॥५७॥ लाल चन्दन
- न चास्या वेदनां चक्रे गदा-पातोऽल्पि-कामपि ।
  तस्या-हतस्य देहात्तु बहु सुस्राव शोणितम् ॥ ॥५८॥
- यतस्-ततस्-तद्वक्त्रेण चामुण्डा सम्-प्रतीच्छति ।
  मुखे समुद्गता येऽस्या रक्त-पातान्-महासुराः ॥ ॥५९॥
- तांश्चखादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम् ।
  देवी शूलेन वज्रेण बाणै-रसिभिर्ऋष्टिभिः ॥ ॥६०॥ गन्ना
- जघान रक्तबीजं तं चामुण्डा-पीत-शोणितम् ।
  स पपात महीपृष्ठे शस्त्र-सङ्घ-समाहतः ॥ ॥६१॥ लाल चन्दन
- नीरक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः ।
  ततस्ते हर्ष-मतुल-मवा-पुस्त्रिदशा नृप ॥ ॥६२॥ निम्बू
- तेषां मातृगणो जातो ननर्ता-सृङ्मदोद्धतः ॥ॐ॥ ॥६३॥

॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये रक्तबीजवधो नामाष्टमोऽध्यायः ॥८॥
॥ उवाच १, अर्धश्लोकः १, श्लोकाः ६१, एवम् ६३, एवमादितः ॥५०२॥

- अध्यायान्ते रक्त चन्दन "मधु" ॐ नमोदेव्यै ... ॐ सांगायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै अष्टमातृसहितायै रक्ताक्ष्यैदेव्यै नमः स्वाहा । एकाहुतिः देया ।
  इति अष्टम अध्याय हवन विधानम् ॥

॥ श्री दुर्गासप्तशती - नवमोऽध्यायः (९) ॥

निशुम्भ-वध

- **ध्यानम्** ॐ बन्धू-ककाञ्च-ननिभं रुचि-राक्ष-मालां,
पाशाङ्-कुशौ च वरदां निज-बाहु-दण्डैः ।
बिभ्राण-मिन्दु-शकला-भरणं त्रिनेत्र-
मर्धाम्बिके-शम-निशं वपुरा-श्रयामि ॥

- "ॐ" राजोवाच ॥ ॥ १॥
- विचित्र-मिद-माख्यातं भगवन् भवता मम ।
देव्याश्-चरित-माहात्म्यं रक्त-बीज-वधाश्रितम् ॥ ॥ २॥ निम्बु
- भूयश्-चेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते ।
चकार शुम्भो यत्कर्म निशुम्भश्-चातिकोपनः ॥ ॥ ३॥
- ऋषिरुवाच ॥ ॥ ४॥
- चकार कोप-मतुलं रक्तबीजे निपातिते ।
शुम्भा-सुरो निशुम्भश्च हते-ष्वन्येषु चाहवे ॥ ॥ ५॥
- हन्यमानं महासैन्यं विलोक्या-मर्ष-मुद्-वहन् ।
अभ्यधावन्-निशुम्भोऽथ मुख्यया-सुर-सेनया ॥ ॥ ६॥
- तस्याग्रतस्-तथा पृष्ठे पार्श्व-योश्च महासुराः ।
संदष्टौष्ठ-पुटाः क्रुद्धा हन्तुं देवी-मुपाययुः ॥ ॥ ७॥
- आजगाम महावीर्यः शुम्भोऽपि स्व-बलैर्वृतः ।
निहन्तुं चण्डिकां कोपात्-कृत्वा युद्धं तु मातृभिः ॥ ॥ ८॥
- ततो युद्ध-मती-वासीद्-देव्या शुम्भ-निशुम्भयोः ।
शर-वर्ष-मती-वोग्रं मेघयो-रिव वर्षतोः ॥ ॥ ९॥
- चिच्छेदास्-ताञ्छरांस्-ताभ्यां चण्डिका स्व-शरोत्करैः ।
ताडया-मास चाङ्गेषु शस्त्रौ-घैर-सुरेश्वरौ ॥ ॥१०॥
- निशुम्भो निशितं खड्गं चर्म चादाय सुप्रभम् ।
अताडयन्-मूर्ध्नि सिंहं देव्या वाहन-मुत्तमम् ॥ ॥११॥

- ताडिते वाहने देवी क्षुर-प्रेणासि-मुत्तमम् ।
  निशुम्भस्याशु चिच्छेद चर्म चाप्यष्ट-चन्द्रकम् ॥ ॥१२॥
- छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्तिं चिक्षेप-सोऽसुरः ।
  तामप्यस्य द्विधा चक्रे चक्रेणाभि-मुखा-गताम् ॥ ॥१३॥
- कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ शूलं जग्राह दानवः ।
  आयातं मुष्टि-पातेन देवी तच्चाप्य-चूर्णयत् ॥ ॥१४॥
- आविध्याथ गदां सोऽपि चिक्षेप चण्डिकां प्रति ।
  सापि देव्या त्रिशूलेन भिन्ना भस्मत्व-मागता ॥ ॥१५॥
- ततः परशु-हस्तं तमायान्तं दैत्य-पुङ्गवम् ।
  आहत्य देवी बाणौघै-रपातयत भूतले ॥ ॥१६॥ कथा
- तस्मिन्-निपतिते भूमौ निशुम्भे भीम-विक्रमे ।
  भ्रातर्यतीव संक्रुद्धः प्रययौ हन्तु-मम्बिकाम् ॥ ॥१७॥
- स रथस्थस्-तथात्युच्चैर्-गृहीत-परमायुधैः ।
  भुजै-रष्टाभि-रतुलैर्-व्याप्याशेषं बभौ नभः ॥ ॥१८॥
- तमायान्तं समा-लोक्य देवी शङ्खम-वादयत् ।
  ज्याशब्दं चापि धनुषश्-चकारातीव दुःसहम् ॥ ॥१९॥
- पूरयामास ककुभो निज-घण्टा-स्वनेन च ।
  समस्त-दैत्य-सैन्यानां तेजो-वध-विधायिना ॥ ॥२०॥ केशर
- ततः सिंहो महानादैस्-त्याजितेभ-महामदैः ।
  पूरयामास गगनं गां तथैव दिशो दश ॥ ॥२१॥
- ततः काली समुत्-पत्य गगनं क्ष्मा-मताडयत् ।
  कराभ्यां तन्नि-नादेन प्राक्-स्वनास्ते ति-रोहिताः ॥ ॥२२॥
- अट्टा-ट्टहास-मशिवं शिवदूती चकार ह ।
  तैः शब्दै-रसुरास्त्रेसुः शुम्भः कोपं परं ययौ ॥ ॥२३॥
- दुरात्मंस्-तिष्ठ तिष्ठेति व्याज-हाराम्-बिका यदा ।
  तदा जयेत्य-भिहितं देवैराकाश-संस्थितैः ॥ ॥२४॥
- शुम्भे-नागत्य या शक्तिर्-मुक्ता ज्वालाति-भीषणा ।
  आयान्ती वह्नि-कूटाभा सा निरस्ता महोल्-कया ॥ ॥२५॥

- सिंहनादेन शुम्भस्य व्याप्तं लोक-त्रयान्तरम् ।
  निर्घातनि:स्वनो घोरो जित-वान-वनीपते ॥ ॥२६॥

- शुम्भ-मुक्ता-ञ्छरान्-देवी शुम्भस्-तत्-प्रहिताञ्छरान् ।
  चिच्छेद स्व-शरै-रुग्रै: शत-शोऽथ सहस्रश: ॥ ॥२७॥

- तत: सा चण्डिका क्रुद्धा शूले-नाभि-जघान तम् ।
  स तदाभि-हतो भूमौ मूर्च्छितो निपपात ह ॥ ॥२८॥

- ततो निशुम्भ: सम्प्राप्य चेतनामात्तकार्मुक: ।
  आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा ॥ ॥२९॥

- पुनश्च कृत्वा बाहू-नाम-युतं दनुजेश्वर: ।
  चक्रा-युधेन दितिजश्- छादयामास चण्डिकाम् ॥ ॥३०॥

- ततो भगवती क्रुद्धा दुर्गा दुर्गार्ति-नाशिनी ।
  चिच्छेद तानि चक्राणि स्वशरै: सायकांश्च तान् ॥ ॥३१॥

- ततो निशुम्भो वेगेन गदा-मादाय चण्डिकाम् ।
  अभ्य-धावत वै हन्तुं दैत्य-सेना-समावृत: ॥ ॥३२॥

- तस्या-पतत एवाशु गदां चिच्छेद चण्डिका ।
  खड्गेन शित-धारेण स च शूलं समाददे ॥ ॥३३॥

- शूल-हस्तं समायान्तं निशुम्भ-मम-रार्दनम् ।
  हृदि विव्याध शूलेन वेगा-विद्धेन चण्डिका ॥ ॥३४॥

- भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयान्नि: सृतोऽपर: ।
  महाबलो महावीर्यस्-तिष्ठेति पुरुषो वदन् ॥ ॥३५॥ निम्बु

- तस्य निष्क्रामतो देवी प्रहस्य स्वन-वत्तत: ।
  शिरश्-चिच्छेद खड्गेन ततोऽसाव-पतद्भुवि ॥ ॥३६॥ जौ, गुग्गल, जीरा

- तत: सिंहश्चखादोग्रं दंष्ट्रा-क्षुण्ण-शिरोधरान् ।
  असुरांस्-तांस्-तथा काली शिवदूती तथापरान् ॥ ॥३७॥

- कौमारी-शक्ति-निर्भिन्ना: केचिन्-नेशुर्महासुरा: ।
  ब्रह्माणी-मन्त्र-पूतेन तोयेनान्ये निराकृता: ॥ ॥३८॥

- माहेश्वरी-त्रिशूलेन भिन्ना: पेतुस्-तथापरे ।
  वाराही-तुण्ड-घातेन केचिच्-चूर्णी-कृता भुवि ॥ ॥३९॥

- **खण्डं खण्डं च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः ।**
  वज्रेण चैन्द्री-हस्ताग्र-विमुक्तेन तथापरे ॥ **॥४०॥**

- **केचिद्विने-शुरसुराः केचिन्-नष्टा महाहवात् ।**
  भक्षिताश्चापरे काली शिवदूती मृगाधिपैः ॥ॐ॥ **॥४१॥** पान, सोपारी, बेल

॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये निशुम्भवधो नाम नवमोऽध्यायः ॥९॥
॥ उवाच २, श्लोयकाः ३९, एवम् ४१, एवमादितः ॥५४३॥

- अध्यायान्ते "बीजौरा जावंत्रि" ॐ नमो देव्यै ... ॐ सांगायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै भैरव्यै देव्यैनमः स्वाहा । एकाहुतिः देया ।
  इति नवम् अध्याय हवन विधानम् ॥

॥ श्री दुर्गासप्तशती - दशमोऽध्यायः (१०) ॥

शुम्भ-वध

- **ध्यानम्** ॐ उत्तप्त-हेम-रुचिरां रवि-चन्द्र-वह्नि-
नेत्रां धनुश्शरयुताङ्-कुश-पाश-शूलम् ।
रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिव-शक्ति-रूपां
कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्-दुलेखाम् ॥

- "ॐ" ऋषिरुवाच ॥ ॥ १॥
- निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा भ्रातरं प्राण-सम्मितम् ।
हन्य-मानं बलं चैव शुम्भः क्रुद्धोऽब्रवीद्वचः ॥ ॥ २॥ केशर
- बलावले-पाद्युष्टे त्वं मा दुर्गे गर्वमावह ।
अन्यासां बल-माश्रित्य युद्ध्यसे याति-मानिनी ॥ ॥ ३॥
- देव्युवाच ॥ ॥ ४॥
- एकैवाहं जगत्-यत्र द्वितीया का ममापरा ।
पश्यैता दुष्ट मय्येव विशन्-त्यो मद्वि-भूतयः ॥ ॥ ५॥
- ततः समस्तास्ता देव्यो ब्रह्माणी-प्रमुखा लयम् ।
तस्या देव्यास्तनौ जग्मु-रेकै-वासी-त्तदाम्बिका ॥ ॥ ६॥
- देव्युवाच ॥ ॥ ७॥
- अहं विभूत्या बहुभि-रिह रूपैर्यदास्थिता ।
तत्संहृतं मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव ॥ ॥ ८॥
- ऋषिरुवाच ॥ ॥ ९॥
- ततः प्रववृते युद्धं देव्याः शुम्भस्य चोभयोः ।
पश्यतां सर्व-देवाना-मसुराणां च दारुणम् ॥ ॥१०॥
- शरवर्षैः शितैः शस्त्रैस्-तथास्त्रैश्-चैव दारुणैः ।
तयोर्-युद्ध-मभूद्भूयः सर्वलोक-भयङ्करम् ॥ ॥११॥
- दिव्या-न्यस्त्राणि शतशो मुमुचे यान्य-थाम्बिका ।
बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्-तत्प्रतीघात-कर्तृभिः ॥ ॥१२॥

- मुक्तानि तेन चास्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी ।
  बभञ्ज लील-यैवोग्र हु*ङ्कारो-च्चारणा-दिभिः ॥ ॥१३॥
- ततः शर-शतैर्देवी-माच्छादयत सोऽसुरः ।
  सापि तत्कुपिता देवी धनुश्-चिच्छेद चेषुभिः ॥ ॥१४॥
- छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रस्-तथा शक्ति-मथा-ददे ।
  चिच्छेद देवी चक्रेण तामप्यस्य करे स्थिताम् ॥ ॥१५॥
- ततः खड्ग-मुपादाय शत-चन्द्रं च भानुमत् ।
  अभ्य-धावत्तदा देवीं दैत्या-नामधि-पेश्वरः ॥ ॥१६॥
- तस्या-पतत एवाशु खड्गं चिच्छेद चण्डिका ।
  धनुर्मुक्तैः शितैर्बाणैश्-चर्म चार्क-करा-मलम् ॥ ॥१७॥
- हताश्वः स तदा दैत्यश्-छिन्न-धन्वा विसारथिः ।
  जग्राह मुद्गरं घोर-मम्बिका-निधनोद्यतः ॥ ॥१८॥
- चिच्छेदा-पततस्-तस्य मुद्गरं निशितैः शरैः ।
  तथापि सोऽभ्य-धावत्तां मुष्टि-मुद्यम्य वेगवान् ॥ ॥१९॥
- स मुष्टिं पातया-मास हृदये दैत्य-पुङ्गवः।
  देव्यास्तं चापि सा देवी तलेनोरस्य-ताडयत् ॥ ॥२०॥
- तल-प्रहाराभि-हतो निपपात महीतले ।
  स दैत्यराजः सहसा पुनरेव तथोत्थितः ॥ ॥२१॥
- उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैर्देवीं गगन-मास्थितः ।
  तत्रापि सा निराधारा युयुधे तेन चण्डिका ॥ ॥२२॥
- नियुद्धं खे तदा दैत्यश्-चण्डिका च परस्परम् ।
  चक्रतुः प्रथमं सिद्ध-मुनि-विस्मय-कारकम् ॥ ॥२३॥
- ततो नियुद्धं सुचिरं कृत्वा तेनाम्बिका सह ।
  उत्पात्य भ्रामया-मास चिक्षेप धरणी-तले ॥ ॥२४॥
- स क्षिप्तो धरणीं प्राप्य मुष्टि-मुद्यम्य वेगित : ।
  अभ्य-धावत दुष्टात्मा चण्डिका-निधनेच्छया ॥ ॥२५॥
- तमायान्तं ततो देवी सर्व-दैत्य-जनेश्वरम् ।
  जगत्यां पातया-मास भित्त्वा शूलेन वक्षसि ॥ ॥२६॥ केला

- **स गतासु: पपातोर्व्यां देवी-शूलाग्र-विक्षत: ।**
  चालयन् सकलां पृथ्वीं साब्धि-द्वीपां सपर्वताम् ॥ **॥२७॥** भोजपत्र
- **तत: प्रसन्न-मखिलं हते तस्मिन् दुरात्मनि ।**
  जगत्-स्वास्थ्य-मतीवाप निर्मलं चाभवन्नभ: ॥ **॥२८॥**
- **उत्पात-मेघा: सोल्का ये प्रागासंस्ते शमं ययु: ।**
  सरितो मार्ग-वाहिन्यस्-तथा-संस्तत्र पातिते ॥ **॥२९॥**
- **ततो देवगणा: सर्वे हर्ष-निर्भर-मानसा:।**
  बभूवुर्निहते तस्मिन् गन्धर्वा ललितं जगु: ॥ **॥३०॥**
- **अवादयंस्-तथैवान्ये ननृतुश्-चाप्-सरोगणा: ।**
  ववु: पुण्यास्तथा वाता: सुप्रभोऽभूद्दिवाकर: ॥ **॥३१॥**
- **जज्वलुश्चाग्नय: शान्ता: शान्ता दिग्जनितस्वना: ॥ॐ॥** **॥३२॥** जौ, बेल, कमलगट्टा

॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शुम्भवधो नाम दशमोऽध्याय: ॥१०॥
॥ उवाच ४, अर्धश्लोक: १, श्लोका: २७, एवम् ३२, एवमादित: ॥५७५॥

- अध्यायान्ते "कस्तूरी" ॐ नमो देव्यै ... ॐ सांगायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै सिंहासनाधिष्ठात्र्यै त्रिशूलधारिण्यै देव्यै नम: स्वाहा । एकाहुति: देया ।
  इति दशम् अध्याय हवन विधानम् ॥

॥ श्री दुर्गासप्तशती - एकादशोऽध्यायः (११) ॥

देवताओं द्वारा देवी की स्तुति तथा देवी द्वारा देवताओं को वरदान

- **ध्यानम्** ॐ बालर-विद्युति-मिन्दु-किरीटां, तुङ्ग-कुचां नयन-त्रय-युक्ताम् ।
  स्मेर-मुखीं वरदाङ्-कुश-पाशा, भीति-करां प्रभजे भुवनेशीम् ॥

- "ॐ" ऋषिरुवाच ॥ ॥ १॥
- देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे
  सेन्द्राः सुरा वह्नि-पुरो-गमास्ताम् ।
  कात्यायनीं तुष्टु-वुरिष्ट-लाभाद्
  विकाशि-वक्त्राब्ज-विकाशि-ताशाः ॥ ॥ २॥
- देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
  प्रसीद मातर्-जगतोऽ खिलस्य ।
  प्रसीद विश्वे-श्वरि पाहि विश्वं
  त्वमीश्वरी देवि चरा-चरस्य ॥ ॥ ३॥
- आधार-भूता जगतस्-त्वमेका
  महीस्वरूपेण यतः स्थितासि ।
  अपां स्वरूपस्-थितया त्वयैत-
  दाप्यायते कृत्स्न-मलङ्घ्य-वीर्ये ॥ ॥ ४॥
- त्वं वैष्णवी शक्त-रनन्त-वीर्या
  विश्ववस्य बीजं परमासि माया ।
  सम्मोहितं देवि समस्त-मेतत्
  त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्ति-हेतुः ॥ ॥ ५॥ निम्बू
- विद्याः समस्तास्-तव देवि भेदाः
  स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु ।
  त्वयैकया पूरित-मम्ब-यैतत्
  का ते स्तुतिः स्तव्य-परा परोक्तिः ॥ ॥ ६॥
- सर्वभूता यदा देवी स्वर्ग-मुक्ति प्रदायिनी ।
  त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः ॥ ॥ ७॥

- सर्वस्य बुद्धि-रूपेण जनस्य हृदि संस्थिते ।
  स्वर्गाप-वर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ॥ ८॥
- कला-काष्ठादि-रूपेण परिणाम-प्रदायिनि ।
  विश्वस्यो-परतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ॥ ९॥
- सर्व-मङ्गल-मंङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ-साधिके ।
  शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ॥१०॥
- सृष्टि-स्थिति-विनाशानां शक्ति-भूते सनातनि ।
  गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ॥११॥
- शरणा-गत-दीनार्त परित्राण परायणे ।
  सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ॥१२॥
- हंस-युक्त-विमानस्थे ब्रह्माणी-रूप-धारिणि ।
  कौशाम्भःक्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ॥१३॥
- त्रिशूल-चन्द्राहि-धरे महा-वृष-भवाहिनि ।
  माहेश्वरी स्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ॥१४॥
- मयूर-कुक्कुट-वृते महाशक्ति धरेऽनघे ।
  कौमारी-रूप-संस्थाने नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ॥१५॥
- शङ्ख-चक्र-गदा-शाङ्र्ग गृहीत परमायुधे ।
  प्रसीद वैष्णवी-रूपे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ॥१६॥
- गृहीतो-ग्रमहा-चक्रे दंष्ट्रोद्धृत वसुंधरे ।
  वराह-रूपिणि शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ॥१७॥
- नृसिंह-रूपेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान् कृतोद्यमे ।
  त्रैलोक्य-त्राण-सहिते नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ॥१८॥
- किरीटिनि महावज्रे सहस्र-नयनो-ज्ज्वले ।
  वृत्र-प्राणहरे चैन्द्रि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ॥१९॥
- शिव-दूती-स्वरूपेण हत-दैत्य-महाबले ।
  घोररूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ॥२०॥
- दंष्ट्रा-कराल-वदने शिरोमाला विभूषणे ।
  चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ॥२१॥

- लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टि-स्वधे ध्रुवे ।
  महारात्रि महाऽविद्ये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ॥२२॥
- मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि ।
  नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ॥२३॥
- सर्व-स्वरूपे सर्वेशे सर्व-शक्ति-समन्विते ।
  भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ ॥२४॥
- एतत्ते वदनं सौम्यं लोचन-त्रय-भूषितम् ।
  पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥ ॥२५॥
- ज्वाला-कराल-मत्युग्र-मशेषा-सुर-सूदनम् ।
  त्रिशूलं पातु नो भीतेर्-भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥ ॥२६॥
- हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ।
  सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव ॥ ॥२७॥
- असुरा-सृग्वसा-पङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः ।
  शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम् ॥ ॥२८॥
- रोगा-नशेषा-नपहंसि तुष्टा
  रुष्टा तु कामान् सकला-नभीष्टान् ।
  त्वामा-श्रितानां न विपन्-नराणां
  त्वामा-श्रिता ह्या श्रयतां प्रयान्ति ॥ ॥२९॥ राई, काली मिर्च
- एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य
  धर्म-द्विषां देवि महा-सुराणाम् ।
  रूपै-रनेकैर्-बहुधाऽऽत्ममूर्तिं
  कृत्वाम्बिके तत्-प्रकरोति कान्या ॥ ॥३०॥
- विद्यासु शास्त्रेषु विवेक-दीपे-
  ष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या ।
  ममत्व-गर्तेऽति-महान्धकारे
  विभ्रामयत्येत-दतीव विश्वम् ॥ ॥३१॥
- रक्षांसि यत्रोग्र-विषाश्च नागा
  यत्रारयो दस्यु-बलानि यत्र ।
  दावानलो यत्र तथाब्धि-मध्ये
  तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम् ॥ ॥३२॥

- विश्वे-श्वरि त्वं परि-पासि विश्वं
  विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम् ।
  विश्वेश-वन्द्या भवती भवन्ति
  विश्वा-श्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः ॥ ॥३३॥

- देवि प्रसीद परि-पालय नोऽरि-भीते-
  र्नित्यं यथा-सुरवधा-दधुनैव सद्यः ।
  पापानि सर्व-जगतां प्रशमं नयाशु ,
  उत्पात-पाक-जनितांश्च महोप-सर्गान् ॥ ॥३४॥

- प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्ति-हारिणि ।
  त्रैलोक्य-वासिना-मीड्ये लोकानां वरदा भव ॥ ॥३५॥

- देव्युवाच ॥ ॥३६॥
- वरदाहं सुरगणा वरं यन्मनसेच्छथ ।
  तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगता-मुपकारकम् ॥ ॥३७॥

- देवा ऊचुः ॥ ॥३८॥
- सर्वा-बाधा-प्रशमनं त्रैलोक्यस्या खिलेश्वरि ।
  एवमेव त्वया कार्य-मस्मद्वैरि विनाशनम् ॥ ॥३९॥ काली मिर्च

- देव्युवाच ॥ ॥४०॥
- वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते अष्टा-विंशतिमे युगे ।
  शुम्भो निशुम्भश्-चैवान्या-वुत्पत्स्येते महासुरौ ॥ ॥४१॥ सरसौ

- नन्दगोपगृहे जाता यशोदा-गर्भ-सम्भवा ।
  ततस्तौ नाश-यिष्यामि विन्ध्याचल निवासिनी ॥ ॥४२॥

- पुनरप्यति-रौद्रेण रूपेण पृथिवी-तले ।
  अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांस्तु दानवान् ॥ ॥४३॥

- भक्षयन्-त्याश्च तानुग्रान् वैप्र-चित्तान्-महासुरान् ।
  रक्ता दन्ता भविष्यन्ति दाडिमी-कुसुमो-पमाः ॥ ॥४४॥ अनार

- ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलोके च मानवाः ।
  स्तुवन्तो व्याह-रिष्यन्ति सततं रक्त-दन्तिकाम् ॥ ॥४५॥ मजीठ

- भूयश्च शत-वार्षिक्या मना-वृष्ट्या मनम्भसि ।
  मुनिभिः संस्तुता भूमौ सम्भ-विष्याम्य-योनिजा ॥ ॥४६॥ नारंगी

- ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन् ।
  कीर्त-यिष्यन्ति मनुजाः शताक्षी-मिति मां ततः ॥ ॥४७॥ कमलगट्टा
- ततोऽह-मखिलं लोक-मात्मदेह-समुद्भवैः ।
  भरिष्यामि सुराः शाकै-रावृष्टेः प्राण-धारकैः ॥ ॥४८॥ सोआ, पालक
- शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि ।
  तत्रैव च वधिष्यामि दुर्ग-माख्यं महासुरम् ॥ ॥४९॥ सोआ, पालक
- दुर्गा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति ।
  पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं कृत्वा हिमाचले ॥ ॥५०॥
- रक्षांसि भक्ष-यिष्यामि मुनीनां त्राण-कारणात् ।
  तदा मां मुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्या-नम्र-मूर्तयः ॥ ॥५१॥
- भीमा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति ।
  यदा-रुणाख्यस्-त्रैलोक्ये महाबाधां करिष्यति ॥ ॥५२॥
- तदाहं भ्रामरं रूपं कृत्वाऽ संख्ये यषट्-पदम् ।
  त्रैलोक्यस्य हितार्थाय वधिष्यामि महासुरम् ॥ ॥५३॥
- भ्रामरीति च मां लोकास्-तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः ।
  इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति ॥ ॥५४॥ खीर, काली मिर्च
- तदा तदाव-तीर्याहं करिष्याम्यरि संक्षयम् ॥ॐ॥ ॥५५॥ सरसों

॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये देव्याः स्तुतिर्नामैकादशोऽध्यायः ॥११॥
॥ उवाच ४, अर्धश्लोकः १, श्लोकाः ५०, एवम् ५५, एवमादितः ॥६३०॥

- अस्याध्याये प्रथममन्त्रात् आरभ्य "असुरा सृग्व...२८" मन्त्रं यावत् पायसेन यवागुना वा आहुतयः देया ।
- सर्वस्वरूपे ...२४ मन्त्रात् असुरा सृग्व ...२८ मन्त्रं यावत् पञ्चभिर्मन्त्रैर्हवनं न करणीयम् तत्तत् परिवर्ते "ॐ ऐं ह्री क्लीं चामुंडायै विच्चे स्वाहा" इति मूलेन पञ्चाहुतयो देया ।
- अध्यायान्ते कर्पूरेण वा पायसेन वा शर्करया वा घृतेन" ॐ नमो देव्यै ... ॐ सांगायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै नारायण्यै देव्यै नमः स्वाहा । एकाहुतिः देया ।
  इति एकादश अध्याय हवन विधानम् ॥

॥ श्री दुर्गासप्तशती - द्वादशोऽध्यायः (१२) ॥

देवी-चरित्रों के पाठ का माहात्म्य

- **ध्यानम्** ॐ विद्युद्दाम समप्रभां मृगपतिस्-कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवाल-खेट-विलसद्-धस्ता-भिरा-सेविताम् ।
हस्तैश्चक्र-गदासि-खेट-विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणा-मनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥

- "ॐ" देव्युवाच ॥ ॥ १॥
- एभिः स्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः ।
तस्याहं सकलां बाधां नाश-यिष्याम्य-संशयम् ॥ ॥ २॥ अगर
- मधु-कैटभ-नाशं च महिषा-सुर-घातनम् ।
कीर्तयिष्यन्ति ये तद्वद् वधं शुम्भ-निशुम्भयोः ॥ ॥ ३॥
- अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैक-चेतसः ।
श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्य-मुत्तमम् ॥ ॥ ४॥
- न तेषां दुष्कृतं किञ्चिद् दुष्कृतोत्था न चापदः ।
भविष्यति न दारिद्र्यं न चैवेष्ट-वियोजनम् ॥ ॥ ५॥
- शत्रुतो न भयं तस्य दस्युतो वा न राजतः ।
न शस्त्रानलतोयौघात्-कदाचित्-सम्भविष्यति ॥ ॥ ६॥
- तस्मान्-ममैतन्-माहात्म्यं पठितव्यं समाहितैः ।
श्रोतव्यं च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं हि तत् ॥ ॥ ७॥
- उपसर्गान-शेषांस्तु महामारी-समुद्भवान् ।
तथा त्रिविध-मुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम ॥ ॥ ८॥
- यत्रैतत्-पठ्यते सम्यङ्नित्यमायतने मम ।
सदा न तद्-विमोक्ष्यामि सांनिध्यं तत्र मे स्थितम् ॥ ॥ ९॥
- बलिप्रदाने पूजाया-मग्निकार्ये महोत्सवे ।
सर्वं ममैतच्-चरित-मुच्चार्यं श्राव्यमेव च ॥ ॥१०॥ मेवा, पेडा

- जानताऽ जानता वापि बलिपूजां तथा कृताम् ।
  प्रतीच्छिष्याम्यहं प्रीत्या वह्नि-होमं तथा कृतम् ॥ ॥११॥
- शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी ।
  तस्यां ममैतन्-माहात्म्यं श्रुत्वा भक्ति-समन्वितः ॥ ॥१२॥
- सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो धन-धान्य-सुतान्वितः ।
  मनुष्यो मत्-प्रसादेन भविष्यति न संशयः ॥ ॥१३॥ इलायची
- श्रुत्वा ममैतन्-माहात्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः ।
  पराक्रमं च युद्धेषु जायते निर्भयः पुमान् ॥ ॥१४॥
- रिपवः संक्षयं यान्ति कल्याणं चोप-पद्यते ।
  नन्दते च कुलं पुंसां माहात्म्यं मम शृण्वताम् ॥ ॥१५॥
- शान्ति-कर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्न-दर्शने ।
  ग्रह-पीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम ॥ ॥१६॥
- उपसर्गाः शमं यान्ति ग्रह-पीडाश्चश दारुणाः ।
  दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्न-मुप-जायते ॥ ॥१७॥ भोजपत्र
- बाल-ग्रहाभि-भूतानां बालानां शान्ति-कारकम् ।
  संघातभेदे च नृणां मैत्री-करण-मुत्तमम् ॥ ॥१८॥
- दुर्वृत्ता-नाम-शेषाणां बलहानि-करं परम् ।
  रक्षो-भूत-पिशाचा-नां पठनादेव नाशनम् ॥ ॥१९॥
- सर्वं ममैतन्-माहात्म्यं मम सन्निधि कारकम् ।
  पशु-पुष्पार्घ्य-धूपैश्च गन्ध-दीपैस्-तथोत्तमैः ॥ ॥२०॥ लंवग, कर्पूर
- विप्राणां भोजनैर्होमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशम् ।
  अन्यैश्च विविधैर्भोगैः प्रदानैर्-वत्-सरेण या ॥ ॥२१॥ सर्वौषधि
- प्रीतिर्मे क्रियते सास्मिन् सकृत्-सुचरिते श्रुते ।
  श्रुतं हरति पापानि तथाऽऽ रोग्यं प्रयच्छति ॥ ॥२२॥
- रक्षां करोति भूतेभ्यो जन्मनां कीर्तनं मम ।
  युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्ट-दैत्य-निबर्हणम् ॥ ॥२३॥
- तस्मिञ्छ्रुते वैरिकृतं भयं पुंसां न जायते ।
  युष्माभिः स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मर्षिभिःकृताः ॥ ॥२४॥

- ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु प्रयच्छन्ति शुभां मतिम् ।
  अरण्ये प्रान्तरे वापि दावाग्नि-परिवारितः ॥ ॥२५॥
- दस्युभिर्वा वृतः शून्ये गृहीतो वापि शत्रुभिः ।
  सिंह-व्याघ्रा-नुयातो वा वने वा वन-हस्तिभिः ॥ ॥२६॥
- राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो वध्यो बन्ध-गतोऽपि वा ।
  आघूर्णितो वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे ॥ ॥२७॥
- पतत्सु चापि शस्त्रेषु संग्रामे भृश-दारुणे ।
  सर्वा-बाधासु घोरासु वेदनाभ्यर्-दितोऽपि वा ॥ ॥२८॥
- स्मरन्-ममैतच्-चरितं नरो मुच्येत संकटात् ।
  मम प्रभावात्-सिहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा ॥ ॥२९॥
- दूरादेव पलायन्ते स्मरतश्-चरितं मम ॥ ॥३०॥
- ऋषिरुवाच ॥ ॥३१॥
- इत्युक्त्वा सा भगवती चण्डिका चण्ड-विक्रमा ॥ ॥३२॥
- पश्यतामेव देवानां तत्रैवान्तर-धीयत ।
  तेऽपि देवा निरातङ्काः स्वाधिकारान् यथा पुरा ॥ ॥३३॥
- यज्ञ-भाग-भुजः सर्वे चक्रुर्विनि-हतारयः ।
  दैत्याश्च देव्या निहते शुम्भे देवरिपौ युधि ॥ ॥३४॥
- जगद्-विध्वंसिनि तस्मिन् महोग्रेऽतुल-विक्रमे।
  निशुम्भे च महावीर्ये शेषाः पाताल-मायुः ॥ ॥३५॥
- एवं भगवती देवी सा नित्यापि पुनः पुनः ।
  सम्भूय कुरुते भूप जगतः परिपालनम् ॥ ॥३६॥
- तयैतन्-मोह्यते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते ।
  सा याचिता च विज्ञानं तुष्टा ऋद्धिं प्रयच्छति ॥ ॥३७॥
- व्याप्तं तयैतत्-सकलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर ।
  महाकाल्या महाकाले महामारी स्वरूपया ॥ ॥३८॥
- सैव काले महामारी सैव सृष्टिर्भवत्यजा ।
  स्थितिं करोति भूतानां सैव काले सनातनी ॥ ॥३९॥ अनार

- **भवकाले नृणां सैव लक्ष्मीर्-वृद्धिप्रदा गृहे ।**
  सैवाभावे तथाऽलक्ष्मीर्-विनाशायो-पजायते ॥ **॥४०॥**

- **स्तुता सम्पूजिता पुष्पैर्-धूप-गन्धादि-भिस्तथा ।**
  ददाति वित्तं पुत्रांश्च मतिं धर्मे गतिं शुभाम् ॥ॐ॥ **॥४१॥** लाल पूष्प

॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये फलस्तुतिर्नाम द्वादशोऽध्यायः ॥१२॥
॥ उवाच २, अर्धश्लोकौ २, श्लोकाः ३७, एवम् ४१, एवमादितः ॥६७१॥

- अध्यायान्ते "अगर, केसर, कस्तूरी, रक्तपुष्पाणि" ॐ नमो देव्यै ... ॐ सांगायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै बालायै त्रिपुरसुन्दर्यै देव्यै नमः स्वाहा । एकाहुतिः देया । इति द्वादश अध्याय हवन विधानम् ॥

॥ श्री दुर्गासप्तशती - त्रयोदशोऽध्यायः (१३) ॥

सुरथ और वैश्य को देवी का वरदान

- **ध्यानम्** ॐ बालार्क-मण्डला-भासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ।
  पाशाङ्कुश-वराभीतीर्-धारयन्तीं शिवां भजे ॥

- "ॐ" ऋषिरुवाच ॥ ॥ १॥
- एतत्ते कथितं भूप देवी-माहात्म्य-मुत्तमम् ।
  एवं-प्रभावा सा देवी ययेदं धार्यते जगत् ॥ ॥ २॥
- विद्या तथैव क्रियते भगवद्-विष्णु-मायया ।
  तया त्वमेष वैश्यश्च तथैवान्ये विवेकिनः ॥ ॥ ३॥
- मोह्यन्ते मोहिताश्चैव मोह-मेष्यन्ति चापरे ।
  तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम् ॥ ॥ ४॥
- आराधिता सैव नृणां भोग-स्वर्गाप-वर्गदा ॥ ॥ ५॥
- मार्कण्डेय उवाच ॥ ॥ ६॥
- इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः ॥ ॥ ७॥
- प्रणिपत्य महाभागं तमृषिं शंसित-व्रतम् ।
  निर्विण्णोऽति-ममत्वेन राज्या-पहरणेन च ॥ ॥ ८॥
- जगाम सद्यस्-तपसे स च वैश्यो महामुने ।
  संदर्शनार्थ-मम्बाया नदी-पुलिन-संस्थितः ॥ ॥ ९॥
- स च वैश्यस्-तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन् ।
  तौ तस्मिन पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिं मही-मयीम् ॥ ॥१०॥
- अर्हणां चक्रतुस्-तस्याः पुष्प-धूपाग्नि-तर्पणैः ।
  निराहारौ यताहारौ तन्मनस्कौ समाहितौ ॥ ॥११॥
- ददतुस्तौ बलिं चैव निज-गात्रास्ृ-गुक्षितम् ।
  एवं समा-राधयतोस्त्रि-भिर्वर्षैर्यतात्मनोः ॥ ॥१२॥ गुड, लाल पुष्प
- परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका ॥ ॥१३॥
- देव्युवाच ॥ ॥१४॥

- यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुल-नन्दन ।
  मत्तस्तत्-प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददामि तत् ॥ ॥१५॥
- मार्कण्डेय उवाच ॥ ॥१६॥
- ततो वव्रे नृपो राज्य-मविभ्रंश्यन्य-जन्मनि ।
  अत्रैव च निजं राज्यं हत-शत्रु-बलं बलात् ॥ ॥१७॥ काली मिर्च
- सोऽपि वैश्यस्-ततो ज्ञानं वव्रे निर्विण्ण-मानसः ।
  ममेत्यहमिति प्राज्ञः सङ्ग-विच्युति-कारकम् ॥ ॥१८॥
- देव्युवाच ॥ ॥१९॥
- स्वल्पै-रहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान् ॥ ॥२०॥
- हत्वा रिपूनस्-खलितं तव तत्र भविष्यति ॥ ॥२१॥
- मृतश्च भूयः सम्प्राप्य जन्म देवादि-विवस्वतः ॥ ॥२२॥
- सावर्णिको नाम मनुर्भवान् भुवि भविष्यति ॥ ॥२३॥
- वैश्यवर्य त्वया यश्च वरोऽस्मत्तोऽ भिवाञ्छितः ॥ ॥२४॥
- तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यै तव ज्ञानं भविष्यति ॥ ॥२५॥
- मार्कण्डेय उवाच ॥ ॥२६॥
- इति दत्त्वा तयोर्देवी यथाभि लषितं वरम् ॥ ॥२७॥
- बभूवान्तर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्याम-भिष्टुता ।
  एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः ॥ ॥२८॥
- सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ॥ ॥२९॥ पान, सोपारी
- एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः ।
  सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ॥क्लीं ॐ॥

॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये सुरथवैश्ययोर्वरप्रदानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः॥१३॥

॥ उवाच ६, अर्धश्लोकाः ११, श्लोकाः १२, एवम् २९, एवमादितः ॥७००॥

॥ समस्ता उवाचमन्त्राः ५७, अर्धश्लोकाः ४२, श्लोतकाः ५३५, अवदानानि ॥६६॥

- अध्यायान्ते श्वेततिल केसर कर्पूर श्वेतपुष्प ॐ नमो देव्यै ... ॐ सांगायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रियै त्रिपुरसुन्दर्यै महावैष्णव्यै देव्यै नमः स्वाहा । एकाहुतिः देया । इति त्रयोदश अध्याय हवन विधानम् ॥

॥ उपसंहारः ॥

इस प्रकार सप्तशती का पाठ पूरा होने पर पहले नवार्ण-जप करके फिर देवीसूक्त के पाठ का विधान है ; अतः यहाँ भी नवार्ण-विधि उद्धृत की जाती है। सब कार्य पहले की ही भाँति होंगे।

- **विनियोगः** ॐ अस्य श्री नवार्ण मन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-रुद्रा ऋषयः। गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि। श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः। ऐं बीजम्। ह्रीं शक्तिः। क्लीं कीलकम्। श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

- **ऋष्यादिन्यासः**

1. ब्रह्म-विष्णु-रुद्र ऋषिभ्यो नमः। शिरसि।
2. गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः। मुखे।
3. महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताभ्यो नमः। हृदि।
4. ऐं बीजाय नमः। गुह्ये।
5. ह्रीं शक्तये नमः। पादयोः।
6. क्लीं कीलकाय नमः। नाभौ।
7. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।

- **करन्यासः**

1. ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
2. ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।
3. ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः।
4. ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः।
5. ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
6. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

- **हृदयादिन्यासः**

1. ॐ ऐं हृदयाय नमः।
2. ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा।
3. ॐ क्लीं शिखायै वषट्।
4. ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्।
5. ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्।
6. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।

- **अक्षर न्यासः**

1. ॐ ऐं नमः। शिखायाम्।
2. ॐ ह्रीं नमः। दक्षिणनेत्रे।
3. ॐ क्लीं नमः। वामनेत्रे।
4. ॐ चां नमः। दक्षिणकर्णे।
5. ॐ मुं नमः। वामकर्णे।
6. ॐ डां नमः। दक्षिणनासापुटे।
7. ॐ यैं नमः। वामनासापुटे।
8. ॐ विं नमः। मुखे।
9. ॐ च्चें नमः। गुह्ये।

- **दिङ्न्यासः** फिर प्रत्येक दिशा में चुटकी बजाते हुए न्यास करें-

1. ॐ ऐं प्राच्यै नमः।
2. ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः।
3. ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः।
4. ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः।
5. ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः।
6. ॐ क्लीं वायव्यै नमः।
7. ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः।
8. ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः।
9. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः।
10. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।

- ध्यानम्

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ॥ ॥ १॥

- **अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम् ।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥ ॥ २॥

- **घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥ ॥ ३॥

- माला प्रार्थना

फिर "ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः" इस मन्त्र से माला की पूजा करके प्रार्थना करें-

- **ॐ मां माले महामाये सर्व शक्ति स्वरूपिणि ।**
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥
- **ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे ।**
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये ॥
- ॐ अक्ष-मालाधि-पतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्व-मन्त्रार्थ-साधिनि साधय-साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा ।
- इसके बाद "ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे" इस मन्त्र का १०८ बार जप करें ।
- **गुह्याति गुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपम् ।**
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत् प्रसादान् महेश्वरि ॥

॥ सप्तशतीन्यासः ॥

तदनन्तर सप्तशती के विनियोग, न्यास और ध्यान करने चाहिये। न्यास की प्रणाली पूर्ववत् है-

- करन्यासः

1. ॐ ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
2. ॐ चं तर्जनीभ्यां नमः।
3. ॐ डिं मध्यमाभ्यां नमः।
4. ॐ कां अनामिकाभ्यां नमः।
5. ॐ यैं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
6. ॐ ह्रीं चण्डिकायै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

- हृदादिन्यासः

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ॥ हृदयाय नमः।

- **ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।**
  घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥ शिरसे स्वाहा।
- **ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।**
  भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ शिखायै वषट्।
- **ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।**
  यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥ कवचाय हुम्।
- **ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।**
  करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥ नेत्रत्रयाय वौषट्।
- **ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।**
  भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ अस्त्राय फट्।

- ध्यानम्

ॐ विद्युद्-दाम-समप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवाल-खेट-विलसद्धस्ता-भिरासे-विताम्।
हस्तैश्-चक्र-गदासि-खेट-विशिखांश्-चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणा-मनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥

॥ ऋग्वेदोक्तं देवी सूक्तम् ॥

- विनियोगः — ॐ अहमित्यष्टर्चस्य सूक्तस्य । वागाम्-भृणी ऋषिः । सच्चित्-सुखात्मकः सर्वगतः परमात्मा देवता । द्वितीयाया ऋचो जगती । शिष्टानां त्रिष्टुप् छन्दः । देवी माहात्म्य पाठे विनियोगः ।

- ध्यानम्

ॐ सिंहस्था शशि-शेखरा मरकत-प्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः
शङ्खं चक्र-धनुःशरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता ।
आमुक्ताङ्गदहारकङ्कणरणत्काञ्चीरणन्नूपुरा
दुर्गा दुर्गति-हारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्-कुण्डला ॥

- देवीसूक्तम्

ॐ अहं रुद्रेभिर्-वसुभिश्-चराम्य-हमादित्यै-रुत विश्वदेवैः ।
अहं मित्रा-वरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा ॥ ॥ १॥

- **अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम् ।**
  अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते ॥ ॥ २॥
- **अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् ।**
  तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्य्यावेशयन्तीम् ॥ ॥ ३॥
- **मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः, प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम् ।**
  अमन्तवो मां त उप क्षियन्ति श्रुधि, श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि ॥ ॥ ४॥
- **अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं, देवेभिरुत मानुषेभिः ।**
  यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि, तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम् ॥ ॥ ५॥
- **अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ ।**
  अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावा-पृथिवी आ विवेश ॥ ॥ ६॥
- **अहं सुवे पितर-मस्य मूर्धन्मम, योनिरप्स्वन्तः समुद्रे ।**
  ततो वि तिष्ठे भुवनानु विश्वो, - तामूं द्यां वर्ष्मणोप स्पृशामि ॥ ॥ ७॥
- **अहमेव वात इव प्रवाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा ।**
  परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना संबभूव ॥ ॥ ८॥

॥ इति ऋग्वेदोक्तं देवीसूक्तम् समाप्तम् ॥

* इसके बाद तन्त्रोक्त देवीसूक्त दिया गया है, उसका भी पाठ करना चाहिये ।

॥ अथ तन्त्रोक्तं देवीसूक्तम् ॥

- नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
  नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ ॥ १॥
- रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः ।
  ज्योत्स्नायै चेन्दु-रुपिण्यै सुखायै सततं नमः॥ ॥ २॥
- कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः।
  नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥ ॥ ३॥
- दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै ।
  ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥ ॥ ४॥
- अति-सौम्याति-रौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः ।
  नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥ ॥ ५॥
- या देवी सर्वभूतेषु विष्णु-मायेति शब्दिता ।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥ ६॥
- या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभि-धीयते ।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥ ७॥
- या देवी सर्वभूतेषु बुद्धि-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥ ८॥
- या देवी सर्वभूतेषु निद्रा-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥ ९॥
- या देवी सर्वभूतेषु क्षुधा-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥१०॥
- या देवी सर्वभूतेषु-च्छाया-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥११॥
- या देवी सर्वभूतेषु शक्ति-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥१२॥
- या देवी सर्वभूतेषु तृष्णा-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥१३॥
- या देवी सर्वभूतेषु क्षान्ति-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥१४॥
- या देवी सर्वभूतेषु जाति-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥१५॥

- या देवी सर्वभूतेषु लज्जा-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥१६॥
- या देवी सर्वभूतेषु शान्ति-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥१७॥
- या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धा-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥१८॥
- या देवी सर्वभूतेषु कान्ति-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥१९॥
- या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मी-रूपेण संस्थिता।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥२०॥
- या देवी सर्वभूतेषु वृत्ति-रूपेण संस्थिता।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥२१॥
- या देवी सर्वभूतेषु स्मृति-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥२२॥
- या देवी सर्वभूतेषु दया-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥२३॥
- या देवी सर्वभूतेषु तुष्टि-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥२४॥
- या देवी सर्वभूतेषु मातृ-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥२५॥
- या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्ति-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै नमस्त्स्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥२६॥
- इन्द्रियाणा-मधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या ।
  भूतेषु सततं तस्यै व्याप्ति-देव्यै नमो नमः ॥ ॥२७॥
- चिति-रूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत्ल।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥२८॥
- स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-, त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता ।
  करोतु सा नः शुभ-हेतुरीश्वरी, शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥ ॥२९॥
- या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै-, रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते ।
  या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः, सर्वापदो भक्ति-विनम्र-मूर्तिभिः ॥ ॥३०॥

॥ इति तन्त्रोक्तं देवीसूक्तम् समाप्तम् ॥

॥ प्राधानिकं रहस्यम् ॥

- विनियोगः ॐ अस्य श्री सप्तशती रहस्य त्रयस्य नारायण ऋषिरनुष्टुप्छन्दः । महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवता यथोक्त फलावाप्त्यर्थं जपे विनियोगः ।

- **राजोवाच**
- **भगवन्नवतारा मे चण्डिकायास्-त्वयोदिताः ।**
  एतेषां प्रकृतिं ब्रह्मन् प्रधानं वक्तुमर्हसि ॥ ॥ १॥
- **आराध्यं यन्मया देव्याः स्वरूपं येन च द्विज ।**
  विधिना ब्रूहि सकलं यथावत्-प्रणतस्य मे ॥ ॥ २॥
- **ऋषिरूवाच**
- **इदं रहस्यं परममनाख्येयं प्रचक्षते ।**
  भक्तोऽसीति न मे किञ्चित्-तवावाच्यं नराधिप ॥ ॥ ३॥
- **सर्वस्याद्या महालक्ष्मीस्त्रिगुणा परमेश्वरी ।**
  लक्ष्या-लक्ष्य स्वरूपा सा व्याप्य कृत्स्नं व्यवस्थिता ॥ ४॥
- **मातुलुङ्गं गदां खेटं पानपात्रं च बिभ्रती ।**
  नागं लिङ्गं च योनिं च बिभ्रती नृप मूर्धनि ॥ ॥ ५॥
- **तप्त-काञ्चन-वर्णाभा तप्त-काञ्चन-भूषणा ।**
  शून्यं तदखिलं स्वेन पूरयामास तेजसा ॥ ॥ ६॥
- **शून्यं तदखिलं लोकं विलोक्य परमेश्वरी ।**
  बभार परमं रूपं तमसा केवलेन हि ॥ ॥ ७॥
- **सा भिन्नाञ्जन-संकाशा दंष्ट्राङ्कित-वरानना ।**
  विशाल-लोचना नारी बभूव तनुमध्यमा ॥ ॥ ८॥
- **खड्ग-पात्र-शिरःखेटै-रलङ्कृत-चतुर्भुजा ।**
  कबन्धहारं शिरसा बिभ्राणा हि शिरःस्रजम् ॥ ॥ ९॥
- **सा प्रोवाच महालक्ष्मीं तामसी प्रमदोत्तमा ।**
  नाम कर्म च मे मातर्देहि तुभ्यं नमो नमः ॥ ॥१०॥

- तां प्रोवाच महालक्ष्मीस्-तामसीं प्रमदोत्तमाम् ।
  ददामि तव नामानि यानि कर्माणि तानि ते ॥ ॥११॥
- महामाया महाकाली महामारी क्षुधा तृषा ।
  निद्रा तृष्णा चैकवीरा कालरात्रिर्दुरत्यया ॥ ॥१२॥
- इमानि तव नामानि प्रतिपाद्यानि कर्मभिः ।
  एभिः कर्माणि ते ज्ञात्वा योऽधीते सोऽश्नुते सुखम् ॥ ॥१३॥
- तामित्युक्त्वा महालक्ष्मीः स्वरूपमपरं नृप ।
  सत्त्वा-ख्येनाति-शुद्धेन गुणेनेन्दुप्रभं दधौ ॥ ॥१४॥
- अक्षमालाङ्कुशधरा वीणा-पुस्तक-धारिणी ।
  सा बभूव वरा नारी नामान्यस्यै च सा ददौ ॥ ॥१५॥
- महाविद्या महावाणी भारती वाक् सरस्वती ।
  आर्या ब्राह्मी कामधेनुर्वेदगर्भा च धीश्वरी ॥ ॥१६॥
- अथोवाच महालक्ष्मीर्महाकालीं सरस्वतीम् ।
  युवां जनयतां देव्यौ मिथुने स्वानुरूपतः ॥ ॥१७॥
- इत्युक्त्वा ते महालक्ष्मीः ससर्ज मिथुनं स्वयम् ।
  हिरण्यगर्भौ रुचिरौ स्त्रीपुंसौ कमलासनौ ॥ ॥१८॥
- ब्रह्मन् विधे विरिञ्चेति धातरित्याह तं नरम् ।
  श्रीः पद्मे कमले लक्ष्मीत्याह माता च तां स्त्रियम् ॥ ॥१९॥
- महाकाली भारती च मिथुने सृजतः सह ।
  एतयोरपि रूपाणि नामानि च वदामि ते ॥ ॥२०॥
- नीलकण्ठं रक्तबाहुं श्वेताङ्गं चन्द्र-शेखरम् ।
  जनयामास पुरुषं महाकाली सितां स्त्रियम् ॥ ॥२१॥
- स रुद्रः शंकरः स्थाणुः कपर्दी च त्रिलोचनः ।
  त्रयी विद्या कामधेनुः सा स्त्री भाषाक्षरा स्वरा ॥ ॥२२॥
- सरस्वती स्त्रियं गौरीं कृष्णं च पुरुषं नृप ।
  जनयामास नामानि तयोरपि वदामि ते ॥ ॥२३॥
- विष्णुः कृष्णो हृषीकेशो वासुदेवो जनार्दनः ।
  उमा गौरी सती चण्डी सुन्दरी सुभगा शिवा ॥ ॥२४॥

- एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं प्रपेदिरे ।
  चक्षुष्मन्तो नु पश्यन्ति नेतरेऽतद्विदो जनाः ॥ ॥२५॥
- ब्रह्मणे प्रददौ पत्नीं महालक्ष्मीर्नृप त्रयीम् ।
  रुद्राय गौरीं वरदां वासुदेवाय च श्रियम् ॥ ॥२६॥
- स्वरया सह सम्भूय विरिञ्चोऽण्ड-मजीजनत् ।
  बिभेद भगवान् रुद्रस्तद् गौर्या सह वीर्यवान् ॥ ॥२७॥
- अण्डमध्ये प्रधानादि कार्य-जातम-भून्नृप ।
  महाभूतात्मकं सर्वं जगत्-स्थावर-जङ्गमम् ॥ ॥२८॥
- पुपोष पालयामास तल्लक्ष्म्या सह केशवः ।
  संजहार जगत्सर्वं सह गौर्या महेश्वरः ॥ ॥२९॥
- महालक्ष्मीर्महाराज सर्व-सत्त्व-मयीश्वरी ।
  निराकारा च साकारा सैव नानाभि-धानभृत् ॥ ॥३०॥
- नामान्तरैर्निरूप्यैषा नाम्ना नान्येन केनचित् ॥ॐ॥ ॥३१॥

॥ इति प्राधानिकं रहस्यं सम्पूर्णम् ॥

॥ वैकृतिकं रहस्यम् ॥

- **ऋषिरुवाच** ॐ त्रिगुणा तामसी देवी सात्त्विकी या त्रिधोदिता ।
  सा शर्वा चण्डिका दुर्गा भद्रा भगवतीर्यते ॥ ॥ १॥

- योगनिद्रा हरेरुक्ता महाकाली तमोगुणा ।
  मधु-कैटभ-नाशार्थं यां तुष्टावाम्-बुजासनः ॥ ॥ २॥

- दशवक्त्रा दशभुजा दशपादाञ्जनप्रभा ।
  विशालया राजमाना त्रिंश-ल्लोचन-मालया ॥ ॥ ३॥

- स्फुरद्दशनदंष्ट्रा सा भीम-रूपापि भूमिप ।
  रूप-सौभाग्य-कान्तीनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियः ॥ ॥ ४॥

- खड्ग-बाण-गदा-शूल-चक्र-शङ्ख-भुशुण्डिभृत् ।
  परिघं कार्मुकं शीर्षं निश्च्योतद्रुधिरं दधौ ॥ ॥ ५॥

- एषा सा वैष्णवी माया महाकाली दुरत्यया ।
  आराधिता वशीकुर्यात् पूजा-कर्तुश्-चराचरम् ॥ ॥ ६॥

- सर्व-देव-शरीरेभ्यो याऽऽविर्भूतामितप्रभा ।
  त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षान्-महिषमर्दिनी ॥ ॥ ७॥

- श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्-तनमण्डला ।
  रक्तमध्या रक्तपादा नील-जङ्घोरु-रुन्मदा ॥ ॥ ८॥

- सुचित्र-जघना चित्र-माल्याम्बर-विभूषणा ।
  चित्रानु-लेपना कान्ति रूप-सौभाग्य-शालिनी ॥ ॥ ९॥

- अष्टादश-भुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती ।
  आयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधःकरक्रमात् ॥ ॥१०॥

- अक्षमाला च कमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा ।
  चक्रं त्रिशूलं परशुः शङ्खो घण्टा च पाशकः ॥ ॥११॥

- शक्तिर्दण्डश्चर्म चापं पानपात्रं कमण्डलुः ।
  अलङ्कृत-भुजामेभि-रायुधैः कमला-सनाम् ॥ ॥१२॥

- सर्व-देव-मयी-मीशां महालक्ष्मी-मिमां नृप ।
  पूजयेत्-सर्वलोकानां स देवानां प्रभुर्भवेत् ॥ ॥१३॥

- गौरी-देहात्-समुद्भूता या सत्त्वैक-गुणा-श्रया ।
  साक्षात्-सरस्वती प्रोक्ता शुम्भा-सुर-निबर्हिणी ॥ ॥१४॥
- दधौ चाष्टभुजा बाण मुसले शूलचक्रभृत् ।
  शङ्खं घण्टां लाङ्गलं च कार्मुकं वसुधाधिप ॥ ॥१५॥
- एषा सम्पूजिता भक्त्या सर्वज्ञत्वं प्रयच्छति ।
  निशुम्भ-मथिनी देवी शुम्भा-सुर-निबर्हिणी ॥ ॥१६॥
- इत्युक्तानि स्वरूपाणि मूर्तीनां तव पार्थिव ।
  उपासनं जगन्मातु: पृथगासां निशामय ॥ ॥१७॥
- महालक्ष्मीर्यदा पूज्या महाकाली सरस्वती ।
  दक्षिणोत्तरयो: पूज्ये पृष्ठतो मिथुन-त्रयम् ॥ ॥१८॥
- विरञ्चि: स्वरया मध्ये रुद्रो गौर्या च दक्षिणे ।
  वामे लक्ष्म्या हृषीकेश: पुरतो देवता-त्रयम् ॥ ॥१९॥
- अष्टादश-भुजा मध्ये वामे चास्या दशानना ।
  दक्षिणेऽष्ट-भुजा लक्ष्मीर्- महतीति समर्चयेत् ॥ ॥२०॥
- अष्टादश-भुजा चैषा यदा पूज्या नराधिप ।
  दशानना चाष्टभुजा दक्षिणोत्तरयोस्तदा ॥ ॥२१॥
- कालमृत्यू च सम्पूज्यौ सर्वा-रिष्ट-प्रशान्तये ।
  यदा चाष्टभुजा पूज्या शुम्भा-सुर-निबर्हिणी ॥ ॥२२॥
- नवास्या: शक्तय: पूज्यास्- तदा रुद्र-विनायकौ ।
  नमो देव्या इति स्तोत्रैर् - महालक्ष्मीं समर्चयेत् ॥ ॥२३॥
- अवतार-त्रयार्चायां स्तोत्र-मन्त्रास्-तदाश्रया: ।
  अष्टादश-भुजा चैषा पूज्या महिषमर्दिनी ॥ ॥२४॥
- महालक्ष्मीर्-महाकाली सैव प्रोक्ता सरस्वती ।
  ईश्वरी पुण्य-पापानां सर्व-लोक-महेश्वरी ॥ ॥२५॥
- महिषान्तकरी येन पूजिता स जगत्प्रभु: ।
  पूजयेज्जगतां धात्रीं चण्डिकां भक्तवत्सलाम् ॥ ॥२६॥
- अर्घ्यादिभिर लङ्कारैर्-गन्ध-पुष्पैस्-तथाक्षतै: ।
  धूपैर्-दीपैश्च नैवेद्यैर्-नानाभक्ष्य समन्वितै: ॥ ॥२७॥

- रुधिराक्तेन बलिना मांसेन सुरया नृप ।
  (बलि-मांसादि-पूजेयं विप्रवर्ज्या मयेरिता ॥
  तेषां किल सुरामांसैर्नोक्ता पूजा नृप क्वचित्।)
  प्रणामाचमनीयेन चन्दनेन सुगन्धिना ॥ ॥२८॥

- सकर्पूरैश्च ताम्बूलैर्-भक्ति-भाव-समन्वितैः ।
  वाम-भागेऽ ग्रतो देव्याश्छिन्नशीर्षं महासुरम् ॥ ॥२९॥

- पूजयेन्महिषं येन प्राप्तं सायुज्य-मीशया ।
  दक्षिणे पुरतः सिंहं समग्रं धर्म-मीश्वरम् ॥ ॥३०॥

- वाहनं पूजयेद्देव्या धृतं येन चराचरम् ।
  कुर्याच्च स्तवनं धीमांस्-तस्या एकाग्र-मानसः ॥ ॥३१॥

- ततः कृताञ्जलिर्भूत्वा स्तुवीत चरितै-रिमैः ।
  एकेन वा मध्यमेन नैके-नेतर-योरिह ॥ ॥३२॥

- चरितार्धं तु न जपेज्जपञ्छिद्र-मवाप्नुयात् ।
  प्रदक्षिणा-नमस्कारान् कृत्वा मूर्ध्नि कृताञ्जलिः ॥ ॥३३॥

- क्षमापयेज्-जगद्धात्रीं मुहुर्मुहुरतन्द्रितः ।
  प्रतिश्लोकं च जुहुयात्-पायसं तिलसर्पिषा ॥ ॥३४॥

- जुहुयात्-स्तोत्र-मन्त्रैर्वा चण्डिकायै शुभं हविः ।
  भूयो नामपदैर्देवीं पूजयेत्-सुसमाहितः ॥ ॥३५॥

- प्रयतः प्राञ्जलिः प्रह्वः प्रणम्यारोप्य चात्मनि ।
  सुचिरं भावयेदीशां चण्डिकां तन्मयो भवेत् ॥ ॥३६॥

- एवं यः पूजयेद्-भक्त्या प्रत्यहं परमेश्वरीम् ।
  भुक्त्वा भोगान् यथाकामं देवी-सायुज्य-माप्नुयात् ॥ ॥३७॥

- यो न पूजयते नित्यं चण्डिकां भक्तवत्सलाम् ।
  भस्मी-कृत्यास्य पुण्यानि निर्दहेत्-परमेश्वरी ॥ ॥३८॥

- तस्मात्-पूजय भूपाल सर्व-लोक-महेश्वरीम् ।
  यथोक्तेन विधानेन चण्डिकां सुख-माप्स्यसि ॥ ॥३९॥

॥ इति वैकृतिकं रहस्यं सम्पूर्णम् ॥

॥ मूर्ति रहस्यम् ॥

- **ऋषिरुवाच** ॐ नन्दा भगवती नाम या भविष्यति नन्दजा ।
  स्तुता सा पूजिता भक्त्या वशी-कुर्याज्जगत्त्रयम् ॥ ॥ १॥

- कनकोत्तम-कान्तिः सा सुकान्ति-कनकाम्बरा ।
  देवी कनक-वर्णाभा कनकोत्तम-भूषणा ॥ ॥ २॥

- कमलाङ्कुश पाशाब्जै-रलङ्कृत-चतुर्भुजा ।
  इन्दिरा कमला लक्ष्मीः सा श्री रुक्माम्बुजासना ॥ ॥ ३॥

- या रक्तदन्तिका नाम देवी प्रोक्ता मयानघ ।
  तस्याः स्वरूपं वक्ष्यामि शृणु सर्व-भयापहम् ॥ ॥ ४॥

- रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्त-सर्वाङ्ग-भूषणा ।
  रक्तायुधा रक्तनेत्रा रक्त-केशाति-भीषणा ॥ ॥ ५॥

- रक्ततीक्ष्ण-नखा रक्त-दशना रक्त-दन्तिका ।
  पतिं नारी-वानु-रक्ता देवी भक्तं भजेज्जनम् ॥ ॥ ६॥

- वसुधेव विशाला सा सुमेरु-युगलस्तनी ।
  दीर्घौ लम्बा-वतिस्थूलौ तावतीव मनोहरौ ॥ ॥ ७॥

- कर्कशा-वति-कान्तौ तौ सर्वानन्द-पयोनिधी ।
  भक्तान् सम्पाययेद्देवी सर्वकामदुघौ स्तनौ ॥ ॥ ८॥

- खड्गं पात्रं च मुसलं लाङ्गलं च बिभर्ति सा ।
  आख्याता रक्त-चामुण्डा देवी योगेश्वरीति च ॥ ॥ ९॥

- अनया व्याप्तमखिलं जगत्-स्थावर-जङ्गमम् ।
  इमां यः पूजयेद्-भक्त्या स व्याप्नोति चराचरम् ॥ ॥१०॥

- (भुक्त्वा भोगान् यथाकामं देवीसा-युज्य-माप्नुयात्।)

- अधीते य इमं नित्यं रक्तदन्त्या वपुःस्तवम् ।
  तं सा परिचरेद्देवी पतिं प्रियमिवाङ्गना ॥ ॥११॥

- शाकम्भरी नीलवर्णा नीलोत्पल-विलोचना ।
  गम्भीर-नाभिस्त्रिवली-विभूषित-तनूदरी ॥ ॥१२॥

- सुकर्कशसमोत्तुङ्गवृत्तपीनघनस्तनी ।
  मुष्टिं शिली-मुखापूर्णं कमलं कमलालया ॥ ॥१३॥

- पुष्प-पल्लव-मूलादि-फलाढ्यं शाक-सञ्चयम् ।
  काम्यानन्तर-सैर्युक्तं क्षुत्तृण्मृत्यु-भयापहम् ॥ ॥१४॥
- कार्मुकं च स्फुरत्-कान्ति बिभ्रती परमेश्वरी ।
  शाकम्भरी शताक्षी सा सैव दुर्गा प्रकीर्तिता ॥ ॥१५॥
- विशोका दुष्ट-दमनी शमनी दुरिता-पदाम् ।
  उमा गौरी सती चण्डी कालिका सा च पार्वती ॥ ॥१६॥
- शाकम्भरीं स्तुवन् ध्यायञ्जपन् सम्पूजयन्नमन् ।
  अक्षय्यमश्नुते शीघ्रमन्नपानामृतं फलम् ॥ ॥१७॥
- भीमापि नीलवर्णा सा दंष्ट्रा-दशन-भासुरा ।
  विशाल-लोचना नारी वृत्त-पीन-पयोधरा ॥ ॥१८॥
- चन्द्रहासं च डमरुं शिरः पात्रं च बिभ्रती ।
  एकवीरा कालरात्रिः सैवोक्ता कामदा स्तुता ॥ ॥१९॥
- तजो-मण्डल-दुर्धर्षा भ्रामरी चित्र-कान्तिभृत् ।
  चित्रानुलेपना देवी चित्रा-भरण-भूषिता ॥ ॥२०॥
- चित्र-भ्रमरपाणिः सा महामारीति गीयते ।
  इत्येता मूर्तयो देव्या याः ख्याता वसुधाधिप ॥ ॥२१॥
- जगन्मातुश्-चण्डिकायाः कीर्तिताः कामधेनवः ।
  इदं रहस्यं परमं न वाच्यं कस्यचित्त्वया ॥ ॥२२॥
- व्याख्यानं दिव्यमूर्ती-नामभीष्ट-फल-दायकम् ।
  तस्मात् सर्व-प्रयत्नेन देवीं जप निरन्तरम् ॥ ॥२३॥
- सप्त-जन्मार्जितैर्घोरैर्- ब्रह्म-हत्या-समैरपि ।
  पाठमात्रेण मन्त्राणां मुच्यते सर्वकिल्बिषैः ॥ ॥२४॥
- देव्या ध्यानं मया ख्यातं गुह्याद् गुह्यतरं महत् ।
  तस्मात् सर्व-प्रयत्नेन सर्व-काम-फल-प्रदम् ॥ ॥२५॥
- (एतस्यास्त्वं प्रसादेन सर्वमान्यो भविष्यसि ।
  सर्वरूपमयी देवी सर्वं देवीमयं जगत् ।
  अतोऽहं विश्वेरूपां तां नमामि परमेश्वरीम्।)

॥ इति मूर्तिरहस्यं सम्पूर्णम् ॥

॥ क्षमा-प्रार्थना ॥

- अपराध सहस्त्राणि क्रियन्तेऽ हर्निशं मया ।
  दासोऽ यमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वारि ॥ ॥ १॥

- आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
  पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वारि ॥ ॥ २॥

- मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ।
  यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ ॥ ३॥

- अपराध-शतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत् ।
  यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः ॥ ॥ ४॥

- सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके ।
  इदानीम-नुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरू ॥ ॥ ५॥

- अज्ञानाद्-विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यून-मधिकं कृतम् ।
  तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ ॥ ६॥

- कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदा-नन्द-विग्रहे ।
  गृहाणार्चा-मिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि ॥ ॥ ७॥

- गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं गुहाणास्मत्-कृतं जपम् ।
  सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्-प्रसादात्-सुरेश्वरि ॥ ॥ ८॥

॥ श्री दुर्गार्पणमस्तु ॥

॥ श्री दुर्गामानस-पूजा ॥

- उद्यच्चन्दन-कुङ्कुमारुण-पयोधाराभिराप्लावितां
  नानानर्घ्यमणि-प्रवाल-घटितां दत्तां गृहाणाम्बिके ।
  आमृष्टां सुर-सुन्दरी-भिरभितो हस्ताम्बुजैर्भक्तितो
  मातः सुन्दरि भक्त-कल्प-लतिके श्री पादुकामादरात् ॥ ॥ १॥

- देवेन्द्रादि-भिरर्चितं सुरगणै-रादाय सिंहासनं
  चञ्चत्काञ्चन-संचयाभि-रचितं चारु-प्रभा-भास्वरम् ।
  एतच्चम्पक-केतकी-परिमलं तैलं महानिर्मलं
  गन्धोद्वर्तनमादरेण तरुणीदत्तं गृहाणाम्बिके ॥ ॥ २॥

- पश्चाद्देवि गृहाण शम्भु-गृहिणि श्री सुन्दरि प्रायशो
  गन्ध-द्रव्य-समूहनिर्भरतरं धात्रीफलं निर्मलम् ।
  तत्केशान् परिशोध्य कङ्कतिकया मन्दाकिनी-स्रोतसि
  स्नात्वा प्रोज्ज्वल-गन्धकं भवतु हे श्रीसुन्दरि त्वन्मुदे ॥ ॥ ३॥

- सुराधिपति-कामिनी-करसरो-जनालीधृतां
  स-चन्दन स-कुङ्कुमा गुरुभरेण विभ्राजिताम् ।
  महा-परिमलोज्ज्वलां सरस-शुद्ध-कस्तूरिकां
  गृहाण वरदायिनि त्रिपुर-सुन्दरि श्रीप्रदे ॥ ॥ ४॥

- गन्धर्वा-मरकिन्नरप्रियतमासंतान-हस्ताम्बुज-
  प्रस्तारैर्ध्रियमाण-मुत्तमतरं काश्मीरजापिञ्जरम् ।
  मातर्भास्वर-भानु-मण्डल लसत्-कान्ति-प्रदानोज्ज्वलं
  चैतन्निर्मल-मातनोतु वसनं श्री सुन्दरि त्वन्मुदम् ॥ ॥ ५॥

- स्वर्णा-कल्पित-कुण्डले श्रुतियुगे हस्ताम्बुजे मुद्रिका
  मध्ये सारसना नितम्ब-फलके मञ्जीरमङ्घ्रिद्वये ।
  हारो वक्षसि कङ्कणौ क्वणरणत्कारौ करद्वन्द्वके
  विन्यस्तं मुकुटं शिरस्य-नुदिनं दत्तोन्मदं स्तूयताम् ॥ ॥ ६॥

- ग्रीवायां धृत-कान्ति-कान्त-पटलं ग्रैवेयकं सुन्दरं
  सिन्दूरं विल-सल्ललाट-फलके सौन्दर्य-मुद्राधरम् ।
  राजत्कज्जल-मुज्ज्वलोत्-पलदल श्रीमोचने लोचने
  तद्दिव्यौषधि-निर्मितं रचयतु श्रीशाम्भवि श्रीप्रदे ॥ ॥ ७॥

- अमन्दतर-मन्दरोन्मथित-दुग्ध-सिन्धूद्भवं
  निशाकरकरोपमं त्रिपुर-सुन्दरि श्रीप्रदे ।
  गृहाण मुखमीक्षतुं मुकुरबिम्बमाविद्रुमै-
  र्विनिर्मितमघच्छिदे रतिकराम्बुजस्थायिनम् ॥ ॥ ८॥

- कस्तूरी-द्रवचन्दना-गुरुसुधा-धाराभिराप्लावितं
  चञ्चच्चम्पक-पाटलादि-सुरभि-द्रव्यैः सुगन्धी-कृतम् ।
  देवस्त्री-गण-मस्तकस्थित-महारत्नादि-कुम्भव्रजै-
  रम्भःशाम्भवि संभ्रमेण विमलं दत्तं गृहाणाम्बिके ॥ ॥ ९॥

- कह्लारोत्पलनाग-केसर-सरो-जाख्यावली-मालती-
  मल्ली-कैरव-केतकादि-कुसुमै रक्ताश्वामारादिभिः ।
  पुष्पैर्माल्य-भरेण वै सुरभिणा नानारसस्रोतसा
  ताम्राम्भोज-निवासिनीं भगवतीं श्रीचण्डिकां पूजये ॥ ॥१०॥

- मांसी-गुग्गुल-चन्दनागुरुरजः कर्पूर-शैलेयजै-
  र्माध्वीकैः सह कुङ्कुमैः सुरचितैः सर्पिर्भिरामिश्रितैः ।
  सौरभ्यस्थिति-मन्दिरे मणिमये पात्रे भवेत् प्रीतये
  धूपोऽयं सुरकामिनी-विरचितः श्रीचण्डिके त्वन्मुदे ॥ ॥११॥

- घृत-द्रव-परिस्फुरद्रुचिररत्ननयष्ट्यान्वितो
  महातिमिरनाशनः सुर-नितम्बिनी-निर्मितः ।
  सुवर्ण-चषकस्थितः सघनसारवर्त्यान्वित-
  स्तव त्रिपुर-सुन्दरि स्फुरति देवि दीपो मुदे ॥ ॥१२॥

- जाती-सौरभ-निर्भरं रुचिकरं शाल्योदनं निर्मलं
  युक्तं हिङ्गु-मरीच-जीर-सुरभि-द्रव्यान्वितैर्व्यञ्जनैः ।
  पक्वान्नेन सपायसेन मधुना दध्याज्यसम्मिश्रितं
  नैवेद्यं सुरका-मिनी-विरचितं श्रीचण्डिके त्वन्मुदे ॥ ॥१३॥

- लवङ्ग-कलिकोज्ज्वलं बहुल-नागवल्ली-दलं
  सजाति-फल-कोमलं सघनसार-पूगीफलम् ।
  सुधा-मधुरिमा-कुलं रुचिर-रत्नमपात्रस्थितं
  गृहाण मुख-पङ्कजे स्फुरितमम्ब ताम्बूलकम् ॥ ॥१४॥

- शरत्प्रभव-चन्द्रमः स्फुरित-चन्द्रिका-सुन्दरं
  गलत्सुरतरङ्गिणी-ललित-मौक्तिकाडम्बरम् ।
  गृहाण नवकाञ्चन-प्रभव-दण्ड-खण्डोज्ज्वलं
  महात्रिपुर-सुन्दरि प्रकटमातपत्रं महत् ॥ ॥१५॥

- मातस्त्वन्मुदमातनोतु सुभगस्त्रीभिः सदाऽऽन्दोलितं
  शुभ्रं चामरमिन्दु-कुन्द-सदृशं प्रस्वेददुःखापहम् ।
  सद्योऽगस्त्य-वसिष्ठ-नारद-शुक-व्यासादि-वाल्मीकिभिः
  स्वे चित्ते क्रियमाण एव कुरुतां शर्माणि वेदध्वनिः ॥ ॥१६॥

- स्वर्गाङ्गणे वेणु-मृदङ्ग-शङ्ख-भेरी-निनादै-रुप-गीयमाना ।
  कोलाहलैराकलिता तवास्तु विद्याधरी-नृत्यकला सुखाय ॥ ॥१७॥

- देवि भक्ति-रसभावितवृत्ते प्रीयतां यदि कुतोऽपि लभ्यते ।
  तत्र लौल्यमपि सत्फलमेकं जन्म-कोटिभिरपीह न लभ्यम् ॥ ॥१८॥

- एतैः षोडशभिः पद्यैरुपचारोपकल्पितैः ।
  यः परां देवतां स्तौति स तेषां फलमाप्नुयात् ॥ ॥१९॥

॥ इति दुर्गातन्त्रे दुर्गामानसपूजा समाप्तम् ॥

॥ अथ दुर्गाद्वात्रिंशन्नाममाला ॥

कोई शत्रुओं से पीड़ीत हो अथवा दुर्भेद्य बन्धन में पड़ा हो, यदि राजा क्रोध में भरकर वध के लिये अथवा और किसी कठोर दण्ड के लिये आज्ञा दे दे या युद्ध में शत्रुओं द्वारा मनुष्य घिर जाय अथवा वन में व्याघ्र आदि हिंसक जन्तुओं के चंगुलमें फँस जाय, तो इन बत्तीस नामों का एक सौ आठ बार पाठमात्र करने से वह सम्पूर्ण भयों से मुक्त हो जाता है।

- **दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गापद्विनिवारिणी।**
  दुर्गमच्छेदिनी दुर्गसाधिनी दुर्गनाशिनी ॥ **॥ १॥**
- **दुर्गतोद्धारिणी दुर्गनिहन्त्री दुर्गमापहा।**
  दुर्गमज्ञानदा दुर्ग-दैत्य-लोक-दवा-नला ॥ **॥ २॥**
- **दुर्गमा दुर्गमा-लोका दुर्गमात्म-स्वरूपिणी।**
  दुर्गमार्गप्रदा दुर्गमविद्या दुर्गमाश्रिता ॥ **॥ ३॥**
- **दुर्गम-ज्ञान-संस्थाना दुर्गम-ध्यान-भासिनी।**
  दुर्गमोहा दुर्गमगा दुर्गमार्थ-स्वरूपिणी ॥ **॥ ४॥**
- **दुर्गमा-सुर-संहन्त्री दुर्गमा-युध-धारिणी।**
  दुर्गमाङ्गी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमेश्वारी ॥ **॥ ५॥**
- **दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्गभा दुर्गदारिणी।**
  नामावलिमिमां यस्तु दुर्गाया मम मानवः ॥ **॥ ६॥**
- **पठेत् सर्वभयान्मुक्तो भविष्यति न संशयः ॥**

1. दुर्गा
2. दुर्गतिशमनी
3. दुर्गापद्वीनिवारिणी
4. दुर्गमच्छेदिनी
5. दुर्गसाधिनी
6. दुर्गनाशिनी
7. दुर्गतोद्धारिणी
8. दुर्गहंत्री
9. दुर्गमापहा
10. दुर्गमज्ञानदा
11. दुर्गदैत्यलोकदवानला
12. दुर्गमा
13. दुर्गमालोका
14. दुर्गमात्मस्वरूपिणी
15. दुर्गमार्गप्रदा
16. दुर्गमविद्या
17. दुर्गमाश्रिता
18. दुर्गमज्ञानसंस्थाना
19. दुर्गमध्यानभासिनी
20. दुर्गमगा
21. दुर्गमगा
22. दुर्गमार्थस्वरूपिणी
23. दुर्गमासुरसंहन्त्री
24. दुर्गमायुधधारिणी
25. दुर्गमाङ्गी
26. दुर्गमता
27. दुर्गम्या
28. दुर्गमेश्वरी
29. दुर्गमीमा
30. दुर्गभामा
31. दुर्गभा
32. दुर्गदारिणी

॥ इति दुर्गा द्वात्रिंशन् नाम माला सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ देव्यपराधक्षमापन स्तोत्रम् ॥

- न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
  न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः ।
  न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
  परं जाने मातस्-त्वदनु-सरणं क्लेश-हरणम् ॥ ॥ १॥

- विधेर-ज्ञानेन द्रविण-विरहेणा-लसतया
  विधेया-शक्यत्वात्-तव चरणयोर्या च्युतिर-भूत् ।
  तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलो-द्धारिणि शिवे
  कुपुत्रो जायेत क्वचि-दपि कुमाता न भवति ॥ ॥ २॥

- पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
  परं तेषां मध्ये विरल-तरलोऽहं तव सुतः ।
  मदीयोऽयं त्यागः समुचित-मिदं नो तव शिवे
  कुपुत्रो जायेत क्वचि-दपि कुमाता न भवति ॥ ॥ ३॥

- जगन्-मातर्मातस्-तव चरण-सेवा न रचिता
  न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।
  तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
  कुपुत्रो जायेत क्वचि-दपि कुमाता न भवति ॥ ॥ ४॥

- परित्यक्ता देवा विविध-विध-सेवा-कुल-तया
  मया पञ्चा-शीते-रधिक-मप-नीते तु वयसि ।
  इदानीं चेन्मातस्-तव यदि कृपा नापि भविता
  निरालम्बो लम्बो-दर-जननि कं यामि शरणम् ॥ ॥ ५॥

- श्वापाको जल्पाको भवति मधु-पाको-पम-गिरा
  निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटि-कनकैः ।
  तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
  जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥ ॥ ६॥

- चिता-भस्मा-लेपो गरल-मशनं दिक्-पट-धरो
  जटाधारी कण्ठे भुजग-पतिहारी पशुपतिः ।
  कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
  भवानि त्वत्-पाणि-ग्रहण-परि-पाटी-फलमिदम् ॥ ॥ ७॥

- न मोक्षस्या-काङ्क्षा भव-विभव-वाञ्छापि च न मे
  न विज्ञाना-पेक्षा शशि-मुखि सुखेच्छापि न पुनः ।
  अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
  मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ॥ ॥ ८॥

- नाराधि-तासि विधिना विविधो-पचारैः
  किं रुक्ष-चिन्त-नपरैर्न कृतं वचोभिः ।
  श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
  धत्से कृपा-मुचितमम्-ब परं तवैव ॥ ॥ ९॥

- आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं
  करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि ।
  नैतच्-छठत्वं मम भाव-येथाः
  क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥ ॥१०॥

- जगदम्ब विचित्र-मत्र किं
  परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि ।
  अपराध-परम्-परा-परं
  न हि माता समुपेक्षते सुतम् ॥ ॥११॥

- मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि ।
  एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ॥ ॥१२॥

॥ इति श्री शङ्कराचार्य विरचितं देव्यपराध क्षमापन स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

॥ सिद्धकुञ्जिका स्तोत्रम् ॥

- **शिव उवाच** शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुञ्जिका-स्तोत्र-मुत्तमम् ।
  येन मन्त्र-प्रभावेण चण्डी-जापः शुभो भवेत् ॥ ॥ १॥

  - न कवचं नार्गला-स्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम् ।
    न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम् ॥ ॥ २॥
  - कुञ्जिका-पाठ-मात्रेण दुर्गा-पाठ-फलं लभेत् ।
    अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम् ॥ ॥ ३॥
  - गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति ।
    मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भ-नोच्चाट-नादिकम् ।
    पाठ-मात्रेण संसिद्ध्येत् कुञ्जिका-स्तोत्र-मुत्तमम् ॥ ॥ ४॥

- **अथ मन्त्रः** ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥
  - ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय-ज्वालय ज्वल-ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल
    ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा ॥ ॥ इति मन्त्रः ॥
  - नमस्ते रूद्र-रूपिण्यै नमस्ते मधु-मर्दिनि ।
    नमः कैटभ-हारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि ॥ ॥ १॥
  - नमस्ते शुम्भ-हन्त्र्यै च निशुम्भा-सुर-घातिनि ।
    जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरूष्व मे ॥ ॥ २॥
  - ऐंकारी सृष्टि-रूपायै ह्रींकारी प्रति-पालिका ।
    क्लीं-कारी काम-रूपिण्यै बीज-रूपे नमोऽस्तु ते ॥ ॥ ३॥
  - चामुण्डा चण्ड-घाती च यैकारी वरदायिनी ।
    विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्र-रूपिणि ॥ ॥ ४॥
  - धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वाग-धीश्वरी।
    क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु ॥ ॥ ५॥
  - हुं हुं हुंकार-रूपिण्यै जं जं जं जम्भ-नादिनी ।
    भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः ॥ ॥ ६॥

- **अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं।**
  धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा ॥ ७॥

- **पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा।**
  सां सीं सूं सप्तशती देव्या मन्त्र-सिद्धिं कुरुष्व मे ॥ ॥ ८॥

- **इदं तु कुञ्जिका-स्तोत्रं मन्त्र-जागर्ति-हेतवे।**
  अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति ॥
  यस्तु कुञ्जिकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत्।
  न तस्य जायते सिद्धि-ररण्ये रोदनं यथा ॥

॥ इति श्री रुद्रयामले गौरी तन्त्रे शिव-पार्वती संवादे कुञ्जिका स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

॥ॐ तत्सत्॥

॥ सप्तशती के कुछ सिद्ध सम्पुट-मन्त्र ॥

श्री मार्कण्डेयराणान्तर्गत देवीमाहात्म्य में 'श्लोक', 'अर्धश्लोक ' और 'उवाच ' आदि मिलाकर ७०० मन्त्र हैं। यह माहात्म्य दुर्गासप्तशती के नाम से प्रसिद्ध है। सप्तशती अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष - चारों पुरुषार्थों को प्रदान करने वाली है। जो पुरुष जिस भाव और जिस कामना से श्रद्धा एवं विधि के साथ सप्तशती का पारायण करता है , उसे उसी भावना और कामना के अनुसार निश्चय ही फल -सिद्धि होती है। इस बात का अनुभव अगणित पुरुषों को प्रत्यक्ष हो चुका है। यहाँ हम कुछ ऐसे चुने हुए मन्त्रों का उल्लेख करते हैं , जिनका सम्पुट देकर विधिवत् पारायण करने से विभिन्न पुरुषार्थों की व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से सिद्धि होती है। इनमें अधिकांश सप्तशती के ही मन्त्र हैं और कुछ बाहर के भी हैं –

- **शत्रुनाश हेतु .....**
  - **मम वैरिवशं यातः कान् भोगानुपलप्स्यते।**
    ये ममानुगता नित्यं प्रसाद-धन-भोजनैः ॥॥ (अ.1, श्लोक.14)
  - **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥**
  - **ॐ दुं दुर्गायै सर्वाकर्णणं कुरु कुरु ॥**
- **राज्य / सर्वजन वशीकरण हेतु .....**
  - **ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता ॥** (अ.1, श्लोक.45)
  - **महामायां हरेश्चैषा तया संमोह्यते जगत्।**
    ज्ञानिनामपि चेतांसि देवि भगवती हि सा ॥ (अ.1, श्लोक.55)
- **सम्मोहन हेतु .....**
  - **ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवि भगवती हि सा।**
    बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥ (अ.1, श्लोक.55,56)
- **सर्वजन सम्मोहन हेतु .....**
  - **बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।**
    तया विसृज्यते विश्वं जगदेतच्चराचरम् ॥ (अ.1, श्लोक.56)
- **बन्धन मुक्त हेतु .....**
  - **सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये।**
    सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी ॥ (अ.1, श्लोक.57)
- **निर्बाध रुप से कार्य सम्पन्नता हेतु .....**
  - **त्वयैतत् धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् ॥** (अ.1, श्लोक.75)

- **दुर्जन सम्मोहन हेतु .....**
  - कारितास्ते यतोतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत् ।
    सा त्वमित्थं प्रभावै स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता ॥ (अ.1, श्लोक.85)

- **सम्पत्तिवर्धक हेतु .....**
  - इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः ।
    चकार कोपं शम्भुश्च भ्रुकुटि-कुटिला-ननौ ॥ (अ.2, श्लोक.9)

- **मारण प्रयोग हेतु .....**
  - एवमुक्त्वा समुत्पत्य सा रुढा तं महासुरम् ।
    पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत् ॥ (अ.3, श्लोक.40)

- **सामूहिक कल्याण हेतु .....**
  - देव्या यया ततमिदं जगदात्म-शक्त्या,
    निश्शेष-देव-गण-शक्ति समूह मूर्त्या ।
    तामम्बिका मखिल देव महर्षि पूज्यां,
    भक्त्या नता: स्म विदधातु शुभानि सा नः ॥ (अ.4, श्लोक.3)

- **विश्व के अशुभ तथा भय का विनाश करने हेतु .....**
  - यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो,
    ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तु मलं बलं च ।
    सा चण्डिका-खिल-जगत्-परिपालनाय,
    नाशाय चाशुभ-भयस्य मतिं करोतु ॥ (अ.4, श्लोक.4)

- **विश्व की रक्षा हेतु .....**
  - या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्व-लक्ष्मीः,
    पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ।
    श्रद्धा सतां कुलजन प्रभवस्य लज्जा,
    तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ॥ (अ.4, श्लोक.5)

- **सुख की बृद्धि हेतु .....**
  - शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधान,
    मुद्गीथरम्य-पदपाठवतां च साम्नाम् ।
    देवी त्रयी भगवती भव-भावनाय,
    वार्ता च सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री ॥ (अ.4, श्लोक.10)

- **प्रभावशाली वाक्शक्ति हेतु .....**
  - मेधासि देवि विदिता-खिल-शास्त्र-सारा,
    दुर्गासि दुर्ग-भव-सागर-नौरसगां ।
    श्री कैटभारि-हृदयैक-कृताधिवासा,
    गौरी त्वमेव शशिमौलि-कृतप्रतिष्ठा ॥ (अ.4, श्लोक.11)

- **सर्वविध अभ्युदय हेतु .....**
  - ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां,
    तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्ग: ।
    धन्यास्त एव निभृतात्मज-भृत्य-दारा,
    येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ॥ (अ.4, श्लोक.15)

- **सफलता वर्धक हेतु .....**
  - धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्मा,
    ण्यत्यादृत: प्रतिदिनं करोति ।
    स्वर्गं प्रयाति च ततो भवती प्रसादात्,
    लोकत्रयेपि फलदा ननु देवि तेन ॥ (अ.4, श्लोक.16)

- **दारिद्र-दु:खादि एवं सर्व आपत्ति नाश हेतु .....**
  - दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तो:,
    स्वस्थै: स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
    दारिद्र्य-दु:ख-भयहारिणि का त्वदन्या,
    सर्वोपकार-करणाय सदाऽर्द्रचित्ता ॥ (अ.4, श्लोक.17)

- **रक्षा एवं अपमृत्यु नाश हेतु .....**
  - शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ।
    घण्टा स्वनेन न: पाहि चापज्यानि:स्वनेन च ॥ (अ.4, श्लोक.24)

- **दिग-बन्धन हेतु .....**
  - प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ।
    भ्रामणेनात्म शूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ (अ.4, श्लोक.25)

- **अर्थोपार्जन तथा सर्वकार्य की सिद्धि हेतु .....**
  - भगवत्या कृतं सर्वं न किञ्चिद वशिष्यते ॥ (अ.4, श्लोक.34)

- **वित्त, समृद्धि, वैभव एवं दर्शन हेतु .....**
  - यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि ॥
  - संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः ।
    यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने ॥
  - तस्य वित्तर्द्धिविभवैर्धन-दारादि-सम्पदाम् ।
    वृद्धयेऽस्मत् प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके ॥ (अ.4, श्लोक.35,36,37)
- **विपत्तिनाश और शुभ की प्राप्ति हेतु .....**
  - करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी ।
    शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥ (अ.5, श्लोक.81)
- **विद्या लाभ हेतु .....**
  - इत्युक्त्का सा तदा देवी गम्भीरान्तः स्मिता जगौ ।
    दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं थार्यते जगत् ॥ (अ.5, श्लोक.116)
- **शत्रुओं द्वारा कृत प्रयोगों का निष्फलीकरण हेतु .....**
  - ततो निशुम्भः सम्प्राप्य चेतनामात्तकार्मुक ।
    आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा ॥ (अ.9, श्लोक.29)
- **विश्वव्यापी विपत्तियों के नाश एवं समस्त कार्य सिद्धि हेतु .....**
  - देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद,
    प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।
    प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं,
    त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥ (अ.11, श्लोक.3)
- **विद्यालाभ एवं समस्त स्त्रियों में मातृभाव की प्राप्ति हेतु .....**
  - विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः,
    स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु ।
    त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्,
    का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्ति : ॥ (अ.11, श्लोक.6)
- **स्वर्ग, मोक्ष और मुक्ति की प्राप्ति के लिये .....**
  - त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या,
    विश्वस्य बीजं परमासि माया ।
    सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्,
    त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः॥ (अ.11, श्लोक.5)

- **स्वर्ग तथा मोक्ष प्राप्ति हेतु .....**
  - सर्वभूता यदा देवि स्वर्ग-मुक्ति-प्रदायिनी ।
    त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तय: ॥ (अ.11, श्लोक.7)
  - सर्वस्य बुद्धिरुपेण जनस्य हृदि संस्थिते।
    स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोस्तुऽते ॥ (अ.11, श्लोक.8)

- **सब प्रकार के कल्याण हेतु .....**
  - सर्व-मङ्गल-मङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ-साधिके ।
    शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ (अ.11, श्लोक.10)

- **शक्ति (प्रशंसा कारक) प्राप्ति हेतु .....**
  - सृष्टि-स्थिति-विनाशानां शक्ति भूते सनातनि ।
    गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ (अ.11, श्लोक.11)

- **समस्त कार्यों की सिद्धि हेतु .....**
  - शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायणे ।
    सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ (अ.11, श्लोक.12)

- **भय नाश हेतु .....**
  - सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्व-शक्ति-समन्विते ।
    भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तुते ॥ (अ.11, श्लोक.24)
  - एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्,
    पातु न: सर्वभीतिभ्य: कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥
    ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम्,
    त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥ (अ.11, श्लोक.25,26)

- **बालकों के रोग एवं ग्रह शांन्ति हेतु .....**
  - हिनस्ति दैत्य-तेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ।
    सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽन: सुतानिव ॥ (अ.11, श्लोक.27)

- **रोग नाश के लिये .....**
  - रोगानशेषा-नपहंसि तुष्टा,
    रुष्टा तु कामान् सकला-नभीष्टान् ।
    त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां,
    त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥ (अ.11, श्लोक.29)

- **शास्त्रार्थ विजय हेतु .....**
  - विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपे, ष्वाद्येषु च का त्वदन्या ।
    ममत्वगर्तेऽति महान्धकारे, विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम् ॥ (अ.11, श्लोक.31)

- **विविध उपद्रवों के शमनार्थ हेतु .....**
  - रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा, यत्रारयो दस्युबलानि यत्र ।
    दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये, तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम् ॥ (अ.11, श्लोक.32)

- **विश्व के अभ्युदय हेतु .....**
  - विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं,
    विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम् ।
    विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति,
    विश्वाश्रया ये त्वयि भक्ति नम्रा: ॥ (अ.11, श्लोक.33)

- **विश्व के पाप-ताप निवारण के लिये .....**
  - देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीते-
    र्नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्य: ।
    पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु,
    उत्पात-पाक-जनितांश्च महोपसर्गान् ॥ (अ.11, श्लोक.34)

- **प्रसन्नता की प्राप्ति हेतु .....**
  - प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि ।
    त्रैलोक्यवासिनामीडये लोकानां वरदा भव ॥ (अ.11, श्लोक.35)

- **सर्वाबाधा प्रशमनार्थ हेतु .....**
  - सर्वाबाधा-प्रशमनं त्रैलोक्यस्या-खिलेश्वरि ।
    एवमेव त्वया कार्यमस्मद् वैरिविनाशनम् ॥ (अ.11, श्लोक.39)

- **संतान प्राप्ति हेतु .....**
  - नन्दगोपगृहे जाता यशोदागर्भ सम्भवा ।
    ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचलनिवासिनी ॥ (अ.11, श्लोक.42)
  - पुत्रान देहि धनम् देहि सर्वान कामश्च देहि में ।
    रुपम् देहि जयम् देहि यशो देहि द्विशो जही ॥
  - देवकीसुत गोविन्द, वासुदेव जगत्पये ।
    देहि मे तनयं कृष्ण, त्वामहं शरणं गत: ॥ (हरिवंश पुराण)

- **मानसिक विषमता हेतु .....**
  - पुनरप्यतिरौद्रेण रुपेण पृथिवीतले ।
    अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांस्तु दानवान ॥ (अ.11, श्लोक.43)
- **अचानक आये हुए संकट को दूर करने हेतु .....**
  - इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति ।
    तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम् ॥ (अ.11, श्लोक.54,55)
- **देवमुख स्तम्भन हेतु .....**
  - उपसर्गा नशेषांस्तु महामारी-समुद्भवान् ।
    तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम ॥ (अ.12, श्लोक.8)
- **बाधामुक्त होकर धन-पुत्रादि की प्राप्ति हेतु .....**
  - सर्वाबाधा-विनिर्मुक्तो धन-धान्य-सुतान्वित: ।
    मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशय: ॥ (अ.12, श्लोक.13)
- **दुख: स्वप नाश हेतु .....**
  - उपसर्गा समं यान्ति ग्रहपीडाश्च दारुणा: ।
    दुख: स्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते ॥ (अ.12, श्लोक.17)
- **बन्दी को जेल से छुड़ाने हेतु .....**
  - राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो वध्यो बन्धगतोऽपि वा ।
    आघूर्णितो वा वातेन स्थित: पोते महार्णवे ॥ (अ.12, श्लोक.27)
- **शत्रुमुख स्तम्भन एवं पुत्रोत्पत्ति हेतु .....**
  - स्मरन् ममैतच्चरितं नरो मुच्येत संकटात् ।
    मम प्रभावात् सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा ॥ (अ.12, श्लोक.29)
- **देवी की सन्तुष्टि हेतु .....**
  - स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन् ।
    तौ तस्मिन् पुलिने देव्या: कृत्वा मूर्तिं महीमयीम् ॥ (अ.13, श्लोक.10)
- **विविध फल प्राप्ती हेतु .....**
  - परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका ॥ (अ.13, श्लोक.13)
- **स्वराज्य प्राप्ति हेतु .....**
  - ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि ।
    अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात् ॥ (अ.13, श्लोक.17)

- **इच्छित फल प्राप्ती हेतु .....**
  - एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः ॥ (अ.13, श्लोक.28)
- **महामारी के नाश हेतु .....**
  - जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ।
    दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥ (अ.स्तो., श्लोक.1)
- **पापनाश तथा भक्ति की प्राप्ति हेतु .....**
  - नतेभ्यः सर्वदा भक्तया चण्डिके दुरितापहे ।
    रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ (अ.स्तो., श्लोक.9)
- **आरोग्य और सौभाग्य की प्राप्ति के लिये .....**
  - देहि सौभाग्य-मारोग्यं देहि मे परमं सुखम् ।
    रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ (अ.स्तो., श्लोक.12)
- **मोक्ष की प्राप्ति हेतु .....**
  - विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम् ।
    रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ (अ.स्तो., श्लोक.14)
- **सुलक्षणा पत्नी की प्राप्ति हेतु .....**
  - पत्नीं मनोरमां देहि मनो-वृत्तानु-सारिणीम् ।
    तारिणीं दुर्गसंसार-सागरस्य कुलोद्भवाम् ॥ (अ.स्तो., श्लोक.24)
- **सकल कामना सिद्धि हेतु .....**
  - यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ।
    परमैश्वर्य मतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान् ॥ (दुर्गा क. श्लोक.44,45)
- **स्वप्न का शुभ अशुभ फल जानने हेतु .....**
  - दुर्गे देवि नमस्तुभ्यं सर्व-कामार्थ-साधिके ।
    मम सिद्धिम सिद्धिं वा स्वप्ने सर्वं प्रदर्शय ॥
- **अपमृत्यु विनाश हेतु .....**
  - ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिंम् पुष्टिवर्धनम् ।
    उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ (शु.य. अ.3, मन्त्र.60)
  - ॐ हौं जूं सः ॐ भूः भुवःस्वः-
    ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्-
    उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्-
    ॐ स्वःभुवः भूःॐ सःजूं हौं ॐ॥ (शु.य. अ.3, मन्त्र.60)

- **इच्छित पति प्राप्ति हेतु .....**
  - **कात्यायनी महामाये महायोगिन्यधीश्वरि।**
    नंद गोप सुतं देहि पति में कुरुते नमः॥ (श्रीमद्भागवत)

- **धनवृद्धि हेतु .....**
  - **कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।**
    पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम्॥ (श्रीसूक्तम्, श्लोक.4)
  - **श्री सूक्त प्रयोग** 1600 पाठ दशांश हवन
  - **श्री कनकधारा स्तोत्र** यह पाठ करवाने से घर, ऑफिस, व्यापार स्थल में उतरोत्तर वृद्धि होती रहती है।

- **ऋण परिहारार्थ हेतु .....**
  - **अनृणा अस्मिन्ननृणाः परस्मिन् तृतीय लोके अनृणाः स्याम।**
    ये देवयानाः पितृयाणाश्च लोकाः सर्वान्पथो अनृणा आक्षियेम॥ (अथ.का.6, सू.117,म.3)

॥ श्री दुर्गादेवी जी की आरती ॥

- जगजननी जय ! जय !! माँ , जगजननी जय ! जय !! माँ
  भयहारिणि भवतारिणि , भवभामिनि जय जय ॥ जगजननी जय ! जय !! माँ ... ।
- तू ही सत-चित-सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा ।
  सत्य सनातन सुन्दर पर शिव-सुरभूपा ॥ ॥ १॥ जगजननी जय ! जय !! माँ ... ।
- आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी ।
  अमल अनन्त अगोचर अज आनँदराशी ॥ ॥ २॥ जगजननी जय ! जय !! माँ ... ।
- अविकारी , अघहारी , अकल , कलाधारी ।
  कर्ता विधि , भर्ता हरि , हर सँहारकारी ॥ ॥ ३॥ जगजननी जय ! जय !! माँ ... ।
- तू विधिवधू , रमा , तू उमा , महामाया ।
  मूल प्रकृति विद्या तू , तू जननी जाया ॥ ॥ ४॥ जगजननी जय ! जय !! माँ ... ।
- राम , कृष्ण तू , सीता , ब्रजरानी राधा ।
  तू वांछाकल्पद्रूम , हारिणि सब बाधा ॥ ॥ ५॥ जगजननी जय ! जय !! माँ ... ।
- दश विद्या , नव दुर्गा , नानाशस्त्रकरा ।
  अष्टमातृका , योगिनि , नव नव रूप धरा ॥ ॥ ६॥ जगजननी जय ! जय !! माँ ... ।
- तू परधामनिवासिनि , महाविलासिनि तू ।
  तू ही श्मशानविहारिणि , ताण्डवलासिनि तू ॥ ॥ ७॥ जगजननी जय ! जय !! माँ ... ।
- सुर – मुनि - मोहिनि सौम्या तू शोभाऽऽधारा ।
  विवसन विकट स्वरूपा , प्रलयमयी धारा ॥ ॥ ८॥ जगजननी जय ! जय !! माँ ... ।
- तू ही स्नेह - सुधामयी , तू अति गरलमना ।
  रत्न - विभूषित तू ही , तू ही अस्थि-तना ॥ ॥ ९॥ जगजननी जय ! जय !! माँ ... ।
- मूलाधारनिवासिनि , इह-पर-सिद्धिप्रदे ।
  कालातीता काली , कमला तू वरदे ॥ ॥१०॥ जगजननी जय ! जय !! माँ ... ।
- शक्ति शक्तिधर तू ही नित्य अभेदमयी ।
  भेदप्रदर्शिनि वाणी विमले ! वेदत्रयी ॥ ॥११॥ जगजननी जय ! जय !! माँ ... ।
- हम अति दीन दुखी मा ! विपत-जाल घेरे ।
  हैं कपूत अति कपटी पर बालक तेरे ॥ ॥१२॥ जगजननी जय ! जय !! माँ ... ।
- निज स्वभाववश जननी ! दया दृष्टि किजै ।
  करुणा कर करुणामयी ! चरण-शरण दीजै ॥ ॥१३॥ जगजननी जय ! जय !! माँ ... ।

॥ श्री अम्बेंजी की आरती ॥

- जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी ।
  तुमको निसदिन ध्यावत, हरि ब्रम्हा शिवरी ॥ ॥ १॥ जय अम्बे गौरी ..... ।
- मांग सिंदुर विराजत, टीको मृगमद को ।
  उज्जवल से दोऊ नैना, चन्द्रवदन नीको ॥ ॥ २॥ जय अम्बे गौरी ..... ।
- कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजे ।
  रक्त-पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजे ॥ ॥ ३॥ जय अम्बे गौरी ..... ।
- केहरि वाहन राजत, खडग खप्पर धारी ।
  सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दु:ख हारी ॥ ॥ ४॥ जय अम्बे गौरी ..... ।
- कानन कुंडल शोभित, नासाग्रे मोती ।
  कोटिक चंद्र दिवाकर, राजत सम ज्योति ॥ ॥ ५॥ जय अम्बे गौरी ..... ।
- शुंभ निशुम्भु बिदारे, महिषासुर धाती ।
  धूम्र विलोचन नैना, निशदिन मदमाती ॥ ॥ ६॥ जय अम्बे गौरी ..... ।
- चंड मुंड संहारे, शोणित बीज हरे ।
  मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ॥ ॥ ७॥ जय अम्बे गौरी ..... ।
- ब्रम्हाणी रुद्राणी, तुम कमलारानी ।
  आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ॥ ॥ ८॥ जय अम्बे गौरी ..... ।
- चौसंठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरुँ ।
  बाजत ताल मृदंगा, अरु बाजत डमरुँ ॥ ॥ ९॥ जय अम्बे गौरी ..... ।
- तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता ।
  भक्तनकी दु:खहर्ता, सुख सम्पत्ति कर्ता ॥ ॥ १०॥ जय अम्बे गौरी ..... ।
- भुजा चार अति शोभित, वर मुद्रा धारी ।
  मनवांच्छित फल पावत, सेवत नर नारी ॥ ॥ ११॥ जय अम्बे गौरी ..... ।
- कंचन थाल विराजत, अगर कपुर बात्ती ।
  श्रीमाल केतु में राजत, कोटि रतन ज्योती ॥ ॥ १२॥ जय अम्बे गौरी ..... ।
- या अम्बेजी की आरती, जो कोई नर गावे ।
  कहत शिवानंद स्वामी, सुख संपत्ति पावे ॥ ॥ १३॥ जय अम्बे गौरी ..... ।
- जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी ।
  तुमको निसदिन ध्यावत, हरि ब्रम्हा शिवरी ॥ ॥ १४॥ जय अम्बे गौरी ..... ।

॥ दुर्गा जी की आरती ॥

- अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली,
  तेरे ही गुण गावें भारती, ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती

- तेरे भक्त जनो पर माता भीर पड़ी है भारी ।
  दानव दल पर टूट पड़ो माँ करके सिंह सवारी ॥
  सौ-सौ सिहों से है बलशाली, अष्ट भुजाओं वाली, दुष्टों को तू ही ललकारती ।
  ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती ..... ।

- माँ-बेटे का है इस जग में बड़ा ही निर्मल नाता ।
  पूत-कपूत सुने है पर ना माता सुनी कुमाता ॥
  सब पे करूणा दर्शाने वाली, अमृत बरसाने वाली, दुखियों के दुखड़े निवारती ।
  ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती ..... ।

- नहीं मांगते धन और दौलत, न चांदी न सोना ।
  हम तो माँगें माँ तेरे चरणों में छोटा सा कोना ॥
  सबकी बिगड़ी बनाने वाली, लाज बचाने वाली, सतियों के सत को संवारती ।
  ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती ..... ।

- चरण शरण मे खडे तुम्हारी, ले पूजा की थाली ।
  वरद हस्त सर पर रख दो, मॉ सकंट हरने वाली ॥
  मॉ भर दो भक्ति रस प्याली,अष्ट भुजाओ वाली, भक्तो के कारज तू ही सारती ।
  ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती ..... ।

॥ श्री दुर्गाष्टोत्तरशत नाम स्तोत्रम् ॥

- ईश्वर उवाच

शतनाम प्रवक्ष्यामि श्रृणुष्व कमलानने ।
यस्य प्रसाद-मात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सती ॥ ॥ १॥

- ॐ सती साध्वी भवप्रीता भवानी भवमोचनी ।
आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूल-धारिणी ॥ ॥ २॥
- पिनाक-धारिणी चित्रा चण्डघण्टा महातपा: ।
मनो बुद्धि-रहंकारा चित्तरूपा चिता चिति: ॥ ॥ ३॥
- सर्व-मन्त्र-मयी सत्ता सत्या-नन्द-स्वरूपिणी ।
अनन्ता भाविनी भाव्या भव्याभव्या सदागति: ॥ ॥ ४॥
- शाम्भवी देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया सदा ।
सर्वविद्या दक्ष-कन्या दक्ष-यज्ञ-विनाशिनी ॥ ॥ ५॥
- अपर्णा-नेकवर्णा च पाटला पाटलावती ।
पट्टाम्बर-परीधाना कल-मञ्जीर-रञ्जिनी ॥ ॥ ६॥
- अमेय-विक्रमा क्रूरा सुन्दरी सुर-सुन्दरी ।
वनदुर्गा च मातङ्गी मतङ्ग-मुनि-पूजिता ॥ ॥ ७॥
- ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा ।
चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषा-कृति: ॥ ॥ ८॥
- विमलोत्-कर्षिणी ज्ञाना क्रिया नित्या च बुद्धिदा ।
बहुला बहुलप्रेमा सर्व-वाहन-वाहना ॥ ॥ ९॥
- निशुम्भ-शुम्भ-हननी महिषासुर-मर्दिनी ।
मधुकैटभ-हन्त्री च चण्ड-मुण्ड-विनाशिनी ॥ ॥१०॥
- सर्वा-सुर-विनाशा च सर्वदा-नव-घातिनी ।
सर्व-शास्त्र-मयी सत्या सर्वास्त्र-धारिणी तथा ॥ ॥११॥
- अनेक-शस्त्र-हस्ता च अनेकास्त्रस्य धारिणी ।
कुमारी चैक-कन्या च कैशोरी युवती यति: ॥ ॥१२॥
- अप्रौढ़ा चैव प्रौढ़ा च वृद्ध-माता बलप्रदा ।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ॥ ॥१३॥

- अग्नि-ज्वाला रौद्र-मुखी कालरात्रिस्-तपस्विनी ।
  नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी ॥ ॥१४॥
- शिवदूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी ।
  कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी ॥ ॥१५॥
- य इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानाम शताष्टकम् ।
  ना साध्यं विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वति ॥ ॥१६॥
- धनं धान्यं सुतं जायां हयं हस्तिनमेव च ।
  चतुर्वर्गं तथा चान्ते लभेन्मुक्तिं च शाश्वतीम् ॥ ॥१७॥
- कुमारीं पूजयित्वा तु ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम् ।
  पूजयेत् परया भक्त्या पठेन्-नाम-शताष्टकम् ॥ ॥१८॥
- तस्य सिद्धिर्भवेद् देवि सर्वै: सुरवरैरपि ।
  राजानो दासतां यान्ति राज्य-श्रिय-मवाप्नुयात् ॥ ॥१९॥
- गोरोचनालक्त-ककुङ्कुमेन
  सिन्दूर-कर्पूर-मधु-त्रयेण ।
  विलिख्यं यन्त्रं विधिना विधिज्ञो
  भवेत् सदा धारयते पुरारि: ॥ ॥२०॥
- भौमावास्यानिशामग्रे चन्द्रे शतभिषां गते ।
  विलिख्य प्रपठेत् स्तोत्रं स भवेत् सम्पदां पदम् ॥ ॥२१॥

॥ इति श्रीविश्वसारतन्त्रे दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ श्री दुर्गाष्टोत्तरशत नाम ॥

1. ॐ सतीनमः ।
2. ॐ साध्वी नमः ।
3. ॐ भवप्रीता नमः ।
4. ॐ भवानीनमः ।
5. ॐ भवमोचनी नमः ।
6. ॐ आर्यानमः ।
7. ॐ दुर्गानमः ।
8. ॐ जयानमः ।
9. ॐ आद्यानमः ।
10. ॐ त्रिनेत्रा नमः ।
11. ॐ शूलधारिणीनमः ।
12. ॐ पिनाकधारिणीनमः ।
13. ॐ चित्रानमः ।
14. ॐ चण्डघण्टा नमः ।
15. ॐ महातपा नमः ।
16. ॐ मन नमः ।
17. ॐ बुद्धि नमः ।
18. ॐ अहंकारा नमः ।
19. ॐ चित्तरूपानमः ।
20. ॐ चिता नमः ।
21. ॐ चिति नमः ।
22. ॐ सर्वमन्त्रमयी नमः ।
23. ॐ सत्ता नमः ।
24. ॐ सत्यानन्दस्वरूपिणी नमः।
25. ॐ अनन्ता नमः ।
26. ॐ भाविनी नमः ।
27. ॐ भाव्या नमः ।
28. ॐ भव्या नमः ।
29. ॐ अभव्या नमः ।
30. ॐ सदागति नमः ।
31. ॐ शाम्भवी नमः ।
32. ॐ देवमाता नमः ।
33. ॐ चिन्ता नमः ।
34. ॐ रत्नप्रिया नमः ।
35. ॐ सर्वविद्या नमः ।
36. ॐ दक्षकन्या नमः ।
37. ॐ दक्षयज्ञविनाशिनी नमः ।
38. ॐ अपर्णा नमः ।
39. ॐ अनेकवर्णा नमः ।
40. ॐ पाटला नमः ।
41. ॐ पाटलावती नमः ।
42. ॐ पट्टाम्बरपरीधाना नमः ।
43. ॐ कलमंजीररंजिनी नमः ।
44. ॐ अमेयविक्रमा नमः ।
45. ॐ क्रूरा नमः ।
46. ॐ सुन्दरी नमः ।
47. ॐ सुरसुन्दरी नमः ।
48. ॐ वनदुर्गा नमः ।
49. ॐ मातंगी नमः ।
50. ॐ मतंगमुनिपूजिता नमः ।
51. ॐ ब्राह्मी नमः ।
52. ॐ माहेश्वरी नमः ।
53. ॐ ऐन्द्री नमः ।
54. ॐ कौमारी नमः ।
55. ॐ वैष्णवी नमः ।
56. ॐ चामुण्डा नमः ।
57. ॐ वाराही नमः ।
58. ॐ लक्ष्मी नमः ।
59. ॐ पुरुषाकृति नमः ।
60. ॐ विमला नमः ।
61. ॐ उत्कर्षिणी नमः ।
62. ॐ ज्ञाना नमः ।
63. ॐ क्रिया नमः ।
64. ॐ नित्या नमः ।
65. ॐ बुद्धिदा नमः ।
66. ॐ बहुला नमः ।
67. ॐ बहुलप्रेमा नमः ।
68. ॐ सर्ववाहनवाहना नमः ।
69. ॐ निशुम्भ-शुम्भहननी नमः ।
70. ॐ महिषासुरमर्दिनी नमः ।
71. ॐ मधुकैटभहन्त्री नमः ।
72. ॐ चण्डमुण्डविनाशिनी नमः।
73. ॐ सर्वासुरविनाशा नमः ।
74. ॐ सर्वदानवघातिनी नमः ।
75. ॐ सर्वशास्त्रमयी नमः ।
76. ॐ सत्या नमः ।
77. ॐ सर्वशास्त्रधारिणी नमः ।
78. ॐ अनेकशस्त्रहस्ता नमः ।
79. ॐ अनेकास्त्रधारिणी नमः ।
80. ॐ कुमारी नमः ।
81. ॐ एककन्या नमः ।
82. ॐ कैशोरी नमः ।
83. ॐ युवती नमः ।
84. ॐ यति नमः ।
85. ॐ अप्रौढ़ा नमः ।
86. ॐ प्रौढ़ा नमः ।
87. ॐ वृद्धमाता नमः ।
88. ॐ बलप्रदा नमः ।
89. ॐ महोदरी नमः ।
90. ॐ मुक्तकेशी
91. ॐ घोररूपा नमः ।
92. ॐ महाबला नमः ।
93. ॐ अग्निज्वाला नमः ।
94. ॐ रौद्रमुखी नमः ।
95. ॐ कालरात्रि नमः ।
96. ॐ तपस्विनी नमः ।
97. ॐ नारायणी नमः ।
98. ॐ भद्रकाली नमः ।
99. ॐ विष्णुमाया नमः ।
100. ॐ जलोदरी नमः ।
101. ॐ शिवदूती नमः ।
102. ॐ कराली नमः ।
103. ॐ अनन्ता नमः ।
104. ॐ परमेश्वरी नमः ।
105. ॐ कात्यायनी नमः ।
106. ॐ सावित्री नमः ।
107. ॐ प्रत्यक्षा नमः ।
108. ॐ ब्रह्मवादिनी नमः ।

॥ सप्तश्लोकी दुर्गा ॥

- **शिव उवाच** देवि त्वं भक्तसुलभे सर्वकार्यविधायिनी ।
  कलौ हि कार्यसिद्ध्यर्थमुपायं ब्रूहि यत्नतः ॥

- **देव्युवाच** शृणु देव प्रवक्ष्यामि कलौ सर्वेष्टसाधनम् ।
  मया तवैव स्नेहेनाप्यम्बास्तुतिः प्रकाश्यते ॥

- **विनयोग** ॐ अस्य श्रीदुर्गासप्तश्लोकीस्तोत्रमहामन्त्रस्य नारायण ऋषिः । अनुष्टुभादीनि छन्दांसि । श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः । श्रीदूर्गाप्रीत्यर्थं सप्तश्लोकी दुर्गापाठे विनियोगः ॥

  - ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ।
    बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥ ॥ १॥

  - दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः,
    स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
    दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या,
    सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता ॥ ॥ २॥

  - सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
    शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ३॥

  - शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
    सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ॥ ४॥

  - सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
    भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ ॥ ५॥

  - रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् ।
    त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥ ६॥

  - सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ।
    एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरि विनाशनम् ॥ ॥ ७॥

॥ इति सप्तश्लोकी दुर्गा सम्पूर्णा ॥

॥ महिषासुरमर्दिनि स्तोत्रम् ॥

- अयि गिरिनंदिनि नंदितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दिनुते,
  गिरिवर विंध्य शिरोधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते ।
  भगवति हे शितिकण्ठ-कुटुंबिनि भूरि-कुटुंबिनि भूरि कृते,
  जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ॥१॥

- सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखम-र्षिणि हर्षरते,
  त्रिभुवनपोषिणि शंकरतोषिणि किल्बिषमोषिणि घोषरते ।
  दनुज-निरोषिणि दितिसुत-रोषिणि दुर्मद-शोषिणि सिन्धुसुते,
  जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ॥२॥

- अयि जगदंब मदंब कदंब वनप्रिय वासिनि हासरते,
  शिखरि शिरोमणि तुङ्ग हिमालय श्रृंग निजालय मध्यगते ।
  मधु-मधुरे मधु-कैटभ-भञ्जिनि कैटभ भंञ्जिनि रासरते,
  जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ॥३॥

- अयि शतखण्ड विखण्डित रुण्ड वितुण्डित शुण्ड गजाधिपते,
  रिपु गज गण्ड विदारण चण्ड पराक्रम शुण्ड मृगाधिपते ।
  निज भुज दण्ड निपातित खण्ड विपातित मुण्ड भटाधिपते,
  जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ॥४॥

- अयि रण दुर्मद शत्रु वधोदित दुर्धर निर्जर शक्तिभृते,
  चतुर विचार धुरीण महाशिव दूतकृत प्रमथाधिपते ।
  दुरित दुरीह दुराशय दुर्मति दानवदूत कृतांतमते,
  जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ॥५॥

- अयि शरणागत वैरि वधूवर वीर वराभय दायकरे,
  त्रिभुवन मस्तक शूल विरोधि शिरोधि कृतामल शूलकरे ।
  दुमिदुमि तामर दुंदुभिनाद महो मुखरीकृत तिग्मकरे,
  जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ॥६॥

- अयि निज हुँकृति - मात्र निराकृत - धूम्र विलोचन - धूम्र शते,
  समर विशोषित शोणित बीज समुद्भव शोणित बीज लते ।
  शिव शिव शुंभ निशुंभ महाहव तर्पित भूत पिशाचरते,
  जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ॥७॥

- धनुरनु-संग रणक्षण-संग परिस्फुर-दंग नटत्कटके,
  कनक-पिशंग पृषत्क-निषंग रसद्भट-श्रृंग हतावटुके।
  कृत-चतुरङ्ग बलक्षिति-रङ्ग घटद्बहुरङ्ग रटद्बटुके,
  जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ ॥८॥

- सुरललना ततथेयि तथेयि तथाभि नयोत्तर नृत्यरते,
  हास विलास हुलास मयि प्रणतार्तजनेऽ मित प्रेमभरे।
  धिमिकिट धिक्कट धिकट धिमि ध्वनि घोर मृदंग निनादरते,
  जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ ॥९॥

- जय जय जप्य जयेजय शब्द परस्तुति तत्पर विश्वनुते,
  झण झण झिञ्जिमि झिंकृत नूपुर सिंजित मोहित भूतपते।
  नटित नटार्ध नटीनट नायक नाटित नाट्य सुगानरते,
  जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ ॥१०॥

- अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोहर कान्तियुते,
  श्रित रजनी रजनी रजनी रजनीकर वक्त्रवृते।
  सुनयन विभ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमराधिपते,
  जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ ॥११॥

- सहित महाहव मल्लम तल्लिक मल्लित रल्लक मल्लरते,
  विरचित वल्लिक पल्लिक मल्लिक झिल्लिक भिल्लिक वर्ग वृते।
  सितकृत-फुल्ल समुल्ल-सितारुण तल्लज पल्लव सल्ललिते,
  जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ ॥१२॥

- अविरल गण्ड गलन्मद मेदुर मत्त-मतङ्गज राजपते,
  त्रिभुवन भूषण भूत-कलानिधि रूप-पयोनिधि राजसुते।
  अयि सुद तीजन लालसमानस मोहन-मन्मथ राजसुते,
  जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ ॥१३॥

- कमल-दलामल कोमल-कांति कलाकलितामल भाललते,
  सकल-विलास कलानिलयक्रम केलि-चलत्कल हंस कुले।
  अलिकुल-सङ्कुल कुवलय-मण्डल मौलिमिलद्ध कुलालि कुले,
  जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ ॥१४॥

- कर-मुरली-रव वीजित कूजित लज्जित कोकिल मञ्जुमते,
  मिलित-पुलिन्द मनोहर-गुञ्जित रंजितशैल निकुञ्जगते ।
  निजगुण भूत-महाशबरीगण सद्गुण-संभृत केलितले,
  जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ॥१५॥

- कटितट-पीत दुकूल-विचित्र मयूखतिरस्कृत चंद्र रुचे,
  प्रणत-सुरासुर मौलिमणिस्फुर दंशुल सन्नख चंद्र रुचे ।
  जित-कनकाचल मौलिपदोर्जित निर्भर-कुंजर कुंभकुचे,
  जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ॥१६॥

- विजित सहस्रकरैक सहस्रकरैक सहस्रकरैकनुते,
  कृत-सुरतारक सङ्गरतारक सङ्गरतारक सूनुसुते ।
  सुरथ-समाधि समानसमाधि समाधिसमाधि सुजातरते,
  जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ॥१७॥

- पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं सु शिवे,
  अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत् ।
  तव पदमेव परंपदमित्यनुशीलयतो मम किं न शिवे,
  जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ॥१८॥

- कनकलसत्कल सिन्धु जलैरनु सिञ्चिनुते गुण रङ्गभुवं,
  भजति स किं न शचीकुच-कुंभ तटी-परिरंभ सुखानुभवम् ।
  तव चरणं शरणं करवाणि नतामरवाणि निवासि शिवं,
  जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ॥१९॥

- तव विमलेन्दुकुलं वदनेन्दुमलं सकलं ननु कूलयते,
  किमु पुरुहूत पुरीन्दुमुखी सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते ।
  मम तु मतं शिवनामधने भवती कृपया किमुन क्रियते,
  जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ॥२०॥

- अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे,
  अयि जगतो जननी कृपयासि यथासि तथाऽनुमितासिरते ।
  यदुचितमत्र भवत्युररि कुरुतादुरुतापमपाकुरुते,
  जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ॥२१॥

॥ इति महिषासुरमर्दिनी स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री भवान्यष्टकम् ॥

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता,
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता ।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव,
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानी ॥ १ ॥

भवाब्धावपारे महादुःखभीरू,
पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः ।
कुसंसारपाशप्रबध्दः सदाहं,
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानी ॥ २ ॥

न जानामि दानं न च ध्यानयोगं,
न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम् ।
न जानामि पुजां न च न्यासयोगम्,
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानी ॥ ३ ॥

न जानामि पुण्यं न जानामि तिर्थं,
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित् ।
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मातः,
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानी ॥ ४ ॥

कुकर्मी कुसङ्गी कुबुध्दीः कुदासः,
कुलाचारहीनः कदाचारलीनः ।
कुदृष्टीः कुवाक्यप्रबन्धः सदाहं,
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानी ॥ ५ ॥

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं,
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित् ।
न जानामि चान्यत् सदाहं शरण्ये,
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानी ॥ ६ ॥

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे,
जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये ।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि,
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानी ॥ ७ ॥

अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो,
महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः ।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रनष्टः सदाहं,
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानी ॥ ८ ॥

॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्य विरचिता भवान्यष्टकम् सम्पूर्णम् ॥

॥ शतचण्डी प्रयोग: ॥

- **शतचण्डीविधानं तु प्रवक्ष्ये प्रीतये नृणाम् ।**
  नृणोपद्रव आमन्ने दुर्भिक्षे भूमिकम्पने ॥ ॥ १ ॥
- **अतिवृष्ट्यामनावृष्टौ परचक्रभये क्षये ।**
  सर्वे विघ्ना विनश्यन्ति शतचण्डीविधौ कृते ॥ ॥ २ ॥

- मन्त्रमहोदधि-वर्णित-शतचण्डी प्रयोग-साधक के कल्याण के लिए शतचण्डी विधान का वर्णन करते हैं । राज्योपद्रव, दुर्भिक्ष, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि और शत्रु कृत चक्रभय आदि समस्त विघ्न शतचण्डी विधान से नष्ट होते हैं ।

- **रोगाणां वैरिणां नाशौ धन-पुत्र-समृद्धय: ।**
  शङ्करस्य भवान्या वा प्रासाद निकटे शुभम् ॥ ॥ ३ ॥
- **मण्डपं द्वारवेद्याढ्यं कुर्यात् स-ध्वजतोरणम् ।**
  तत्र कुण्डं प्रकुर्वीत प्रतीच्यां मध्यतोऽपि वा ॥ ॥ ४ ॥

- इसी प्रकार रोग, शत्रु आदि भी नष्ट होते हैं । शिव अथवा दुर्गा-मन्दिर में, ध्वजा, तोरण आदि से सुसज्जित मण्डप एवं द्वार का निर्माण करें । तथा पश्चिम की ओर अथवा मध्य भाग में कुण्ड का निर्माण करें ।

- **स्नात्वा नित्यक्रियां कृत्वा वृणुयाद् दशवाडवान् ।**
  जितेन्द्रियान् सदाचारान् कुलीनान् सत्यवादिन: ॥ ॥ ५ ॥
- **व्युत्पन्नांश्चण्डिकापाठरतान् लज्जा-दयावत: ।**
  मधुपर्कविधानेन स्वर्ण-वस्त्रादि-दानत: ॥ ॥ ६ ॥

- साधक को चाहिए कि स्नान आदि नित्य क्रिया से निवृत्त होकर जतन्द्रिय, सदाचारी, कुलीन, सत्यवादी, व्युत्पन्न देवी के नित्य पाठ में तत्पर एवं लज्जा, दयावान् ऐसे दश ब्राह्मणों का मधुपर्क विधान या स्वर्ण, वस्त्र आदि से सत्कृत कर वरण करें ।

- **जपार्थमासनं मालां दद्यात्तेभ्योऽपि भोजनम् ।**
  ते हविष्यान्नमश्नन्तो मन्त्रार्थगतमानसा:॥ ॥ ७ ॥
- **भूमौ शयाना: प्रत्येकं जपेयुश्चण्डिकास्तवम् ।**
  मार्कण्डेय पुराणोक्तं दशकृत्व: सचेतस: ॥ ॥ ८ ॥

- उन वृणीत ब्राह्मणों को आसन एवं जप के लिए रुद्राक्ष की माला तथा भोजन प्रदान करे। वृणीत ब्राह्मणों को चाहिए कि वे हविष्यात्र ही भोजन करें। अपने अन्त:करण में निरन्तर चण्डी (दुर्गा) मन्त्रार्थ का चिन्तन करते हुए भूमि पर शयन करें । इस प्रकार मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत दुर्गा सप्तशती का पाठ करें तथा दस हजार जापक नित्य नवार्ण मन्त्र का जप करें, या प्रत्येक ब्राह्मण प्रतिदिन दस हजार जप करें ।

- **अष्टमी-नवमी-चतुर्दशी-पौर्णमासीषु यथा शतावृत्तिसमाप्ति-र्भवति तथाऽऽरम्भः कर्तव्य इति साम्प्रदायिकाः ।**

- साथ ही अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी और पूर्णिमा तिथि में शतावृत्ति पाठ समाप्त हो ऐसी व्यवस्था करें ।

- **नवार्णं चण्डिका मन्त्रं जपेयुश्चाऽयुतं पृथक् ।**
  यजमानः पूजयेच्च कन्यानां नवकं शुभम् ॥ ॥ ९ ॥
- **द्विवर्षाद्या दशाब्दान्ताः कुमारीः परिपूजयेत् ।**
  नाधिकाङ्गी न हीनाङ्गीं कुष्ठिनीं च व्रणाङ्कितम् ॥ १०॥
- **अन्धां काणां केकरां च कुरूपां रोम युक्तनुम् ।**
  दासी-जातां रोग-युक्तां दुष्टां कन्यां न पूजयेत् ॥ ॥ ११॥

- तत्पश्चात् यजमान दो वर्ष से लेकर दस वर्ष पर्यन्त नव कुमारिकाओं का पूजन करे । वे कुमारियाँ अधिक अंग, हीन अंग, कोढ़ी, फोड़ा- फुन्सी युक्त, अन्धी, कानी, खुजली वाली, कुरूप, अधिक रोएँ वाला, दासी से उत्पन्न, रोगी और दुष्ट स्वभाव वाली न हो, ऐसी कन्याओं का पूजन न करें ।

- **विप्रां सर्व्वेष्टसंसिद्ध्यै यशसे क्षत्रियोद्भवाम् ।**
  वैश्यजां धन लाभाय पुत्राप्त्यै शूद्रजां यजेत् ॥ ॥ १२॥

- समस्त कार्य की सिद्धि के लिए ब्राह्मण कुमारिकाओं का, यश के लिए, क्षत्रिय कुमारिकाओं का धन-प्राप्ति के लिए, वैश्य कुमारिकाओं का, और पुत्र-प्राप्ति के निमित्त शूद्र कुमारिकाओं का पूजन करें ।

- **द्विवर्षा सा कुमार्य्युक्ता त्रिमूर्तिर्हायनत्रिका ।**
  चतुरब्दा तु कल्याणी पञ्चवर्षा तु रोहिणी ॥ ॥ १३॥
- **षडब्दा कालिका प्रोक्ता चाण्डका सप्तहायनी ।**
  अष्टवर्षा शाम्भवी स्याद् दुर्गा तु नवहायनी ॥ ॥ १४॥
- **सुभद्रा दशवर्षोक्ता नाम मन्त्रैः प्रपूजयेत् ।**
  तासामावाहने मन्त्रः प्रोच्यते शङ्करोदितः ॥ ॥ १५॥
- **मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातृणां रूपधारिणीम् ।**
  नवदुर्गात्मिकां साक्षात् कन्यामावाहयाम्यहम् ॥ ॥ १६॥

- दो वर्ष की कन्या 'कुमारी', तीन वर्ष की 'त्रिमूर्ति', चार वर्ष की 'कल्याणी', पाँच वर्ष की 'रोहिणी', छह वर्ष की 'कालिका', सात वर्ष की 'चण्डिका', आठ वर्ष की 'शाम्भवी' नव वर्ष की 'दुर्गा' तथा दस वर्ष की कन्या का नाम 'सुभद्रा' है । इन नवों कन्याओं का शङ्कर द्वारा कथित आवाहन आदि के मन्त्रों से 'मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मीं०' से लेकर कन्यामावाहयाम्यहम्' तक पढ़कर पूजन करें ।

- **कुमारिकादि कन्यानां पूजा मन्त्रान् ब्रुवेऽधुना ।**
- इसके बाद कुमारि का पूजन आदि मन्त्रों का वर्णन करते हुए कहते हैं, जो इस प्रकार है-

- **कन्या पूजन मन्त्रा:** **जगत्पूज्ये! जगद्वन्द्ये ! सर्व्वशक्ति स्वरूपिणि ।**
  पूजां गृहाण कौमारि ! जगन्मातर्नमोऽस्तु ते ॥ **॥ १७॥** **कुमारी**
  - उपरोक्त मंत्र पढ़कर कुमारी का पूजन करें ।
  - **त्रिपुरां त्रिपुराधारां त्रिवर्ग ज्ञान रूपिणीम् ।**
    त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्त्तिं पूजयाम्यहम् ॥ **॥ १८॥** **त्रिमुर्ति**
  - उपरोक्त मंत्र पढ़कर त्रिमूर्ति कुमारी का गन्ध, अक्षत और पुष्पादि द्वारा अर्चना करें ।
  - **कालात्मिकां कलातीतां कारुण्यहृदयां शिवाम् ।**
    कल्याण जननीं देवीं कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥ **॥ १९॥** **कल्याणी**
  - **अणिमादि गुणा-धारा मकाराद्यक्षरात्मिकाम् ।**
    अनन्त-शक्तिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम् ॥ **॥ २०॥** **रोहिणी**
  - **कामचारां शुभां कान्तां कालचक्र-स्वरूपिणीम् ।**
    कामदां करुणोदारां कालिकां पूजयाम्यहम् ॥ **॥ २१॥** **कालिका**
  - उपरोक्त मंत्र पढ़कर कल्याणी, रोहिणी तथा कालिका का पूजन करें ।
  - **चण्डवीरां चण्डमायां चण्ड-मुण्ड-प्रभञ्जिनीम् ।**
    पूजयामि सदा देवीं चण्डिकां चण्डविक्रमाम् ॥ **॥ २२॥** **चण्डिका**
  - **सदानन्दकरीं शान्तां सर्वदेव नमस्कृताम् ।**
    सर्वभूतात्मिकां लक्ष्मीं शाम्भविं पूजयाम्यहम् ॥ **॥ २३॥** **शाम्भवी**
  - **दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भव-दुख-विनाशिनीम् ।**
    पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गार्त्ति-नाशिनीम् ॥ **॥ २४॥** **दुर्गा**
  - **सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुख-सौभाग्य-दायिनीम् ।**
    सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम् ॥ **॥ २५॥** **सुभद्रा**
  - **एतैर्मन्त्रै: पुराणोक्तैस्तां तां कन्यां समर्चयेत् ।**
    गन्धै: पुष्पैर्भक्ष्य-भोज्यैर्वस्त्रैराभरणैरपि ॥ **॥ २६॥**
  - उपरोक्त मंत्र उच्चारण कर चण्डिका, शाम्भवी, दुर्गा तथा सुभद्रा आदि नव कुमारिकाओं को गन्ध, पुष्प, वस्त्र, आभुषण आदि समर्पित करें ।
  - **वेद्यां विरचिते रम्ये सर्व्वतो भद्रमण्डले ।**
    घटं संस्थाप्य विधिना तत्रा वाह्यार्च्चयोच्छिवाम् ॥ **॥ २७॥**
  - सर्वतोभद्र मण्डल में विधि-विधान से घट स्थापन कर दुर्गा का आवाहन एवं पूजन करें ।
  - **तदग्रे कन्यकाश्चापि पूजयेद् ब्राह्मणानपि ।**
    उपचारैस्तु विविधै: पूर्व्वोक्ता वरणान्यपि ॥ **॥ २८॥**
  - उस मण्डल के आगे विविध उपचारों से ब्राह्मणों एवं कन्याओं का पूजन करें ।

- **होमद्रव्याणि** **एवं चतुर्दिनं कृत्वा पञ्चमे होम-माचरेत् ।**
  पायसान्नै-स्त्रिमध्वक्तै-र्द्राक्षारम्भा-फलादिभिः ॥ ॥ २९॥
  - **मातुलाङ्गैरिक्षुखण्डैर्नारिकेलयुतैस्तिलैः ।**
    जातिफलैराम्रफलैरन्यैर्मधुर-वस्तुभिः ॥ ॥ ३०॥
  - **सप्तशत्या दशावृत्त्या प्रतिश्लोकं हुतं चरेत् ।**
    अयुतं च नवार्णेन स्थापितेऽग्नौ विधानतः ॥ ॥ ३१॥
- इस प्रकार चार दिन पर्यन्त पूजन कर पाँचवे दिन से पायस (खीर), त्रिमधु, दाख, केला, मातुलिङ्ग, इक्षुखण्ड (ऊँख के टुकड़े), नारियल, तिल, जातीफल एवं आम का फल आदि मधुर वस्तुओं से शतचण्डी प्रयोग में सप्तशती के दस पाठ का हवन करे, और दस हजार नवार्ण मन्त्र का हवन करें ।
  - **कृत्वाऽऽ वरण देवानां होमं तन्नाममन्त्रतः ।**
    कृत्वा पूर्णाहुतिं सम्यग् देवमग्निं विसृज्य च ॥ ॥ ३२॥
  - **अभिषिञ्चेच्च यष्टारं विप्रौघः कलशोदकैः ।**
    निष्कं सुवर्णमथ वा प्रत्येकं दक्षिणां दिशेत् ॥ ॥ ३३॥
  - **भोजयेच्च शतं विप्रान् भक्ष्य-भोज्यैः पृथग्विधैः ।**
    तेभ्योऽपि दक्षिणां दत्त्वा गृह्णीयादाशिषस्तथा ॥ ॥ ३४॥
- तथा उन-उन नाम मन्त्रों से आवाहित देवताओ का हवन कर पूर्णाहुति करना चाहिए । तत्पश्चात अग्नि का विसर्जन और ब्राह्मण लोग कलश के जल से यजमान का अभिषेक करे । यजमान को चाहीए कि अनेक स्वादिष्ट व्यंजनों द्वारा सौ ब्राह्मणों को भोजन कराये, तथ उन्हें दक्षिणा प्रदान कर, उन ब्राह्मणों से आशीर्वाद ग्रहण करें ।
  - **एवं कृते जगद्वश्यं सर्वे नश्यन्त्युपद्रवाः ।**
    राज्यं धनं यशः पुत्रान्निष्टमन्यं लभेत सः ॥ ॥ ३५॥
- इस प्रकार शतचण्डी प्रयोग करने वाला मनुष्य राज्य, धन, यश, पुत्र, आदि समस्त मनचाही वस्तुओं को प्राप्त करता है, तथा उसके समस्त उपद्रव वगैरह नष्ट होते है ।

॥ इति मन्त्र महोदधि वर्णित शतचण्डी प्रयोगः समाप्तः ॥

॥ नवचण्डी-शतचण्डी-सहस्रचण्डी-लक्षचण्डी हवन प्रयोगः ॥

ततः पाठ समाप्तौ कृतायां पाठदशांशं-हवनं, तद्दशांश-तर्पणं, तद्दशांश-मार्जनं मार्जनदशांश-ब्राह्मण भोजनं च कुर्यात्।

यजमानः आचम्य, प्राणानायम्य। **ॐ अपवित्रः पवित्रो वा०** इति आत्मानं हवन-पूजन-सामग्रीं च सम्प्रोक्ष्य। हस्ते अक्षत पुष्पाणि गृहीत्वा, **आ नो भद्रा०** - **सुमुखश्चैकदन्तश्च०** इत्यादि, मङ्गल मन्त्रान् पठेत्।

ततो हस्ते जला-ऽक्षत-पुष्प-द्रव्याण्यादाय, सङ्कल्पं कुर्यात् । तद्यथा-देशकालौ सङ्कीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्मा सपत्नीकोऽहं मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयु-आरोग्य-विपुल-पुत्र-पौत्रा- द्यन वच्छिन्न-सन्ततिवृद्धि -स्थिरलक्ष्मी- कीर्तिलाभ-शत्रुपराजय- सद भीष्ट सिद्ध्यर्थं श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती देवता- प्रित्यर्थं कृतस्य शतचण्डी- (नवचण्डी-सहस्रचण्डी-लक्षचण्डी वा) पाठ साङ्गता सिद्ध्यर्थं तद्दशांश-हवन, तद्दशांश-तर्पण, तद्दशांश-मार्जन, तद्दशांश-ब्राह्मण भोजनं च करिष्ये। तदङ्गत्वेन स्वस्ति- पुण्याहवाचन- मातृका-पूजनं वसोर्द्धारा पूजनम् आयुष्यमन्त्र जपम् आचार्यादि-वरणानि च करिष्ये तत्राऽऽदौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं गणेशाऽम्बिकयोः पूजनमहं करिष्ये।

तदनन्तरं गणेशपूजनादारभ्य पूर्णाहुतिपर्यन्तं सर्वं कार्यं कुर्यात्। प्रधान हवने तु सप्तशती - प्रतिश्लोके स्वाहान्तहोमः। चर्वाज्य द्रव्येण कुर्यादिति विशेषः तर्पणे- 'दुर्गा तर्पयामि। मार्जे-दुर्गा मार्जयामि'।

अत्र नवचण्डयां नवब्राह्मणाः । शतचण्डयां दश । सहस्र-चण्डयां शतम्। लक्षचण्डयां सहस्रम्। केचिदत्र ग्रहजपार्थ- मेकमृत्विजं वरयन्ति।

॥ इति नवचण्डी-शतचण्डी-सहस्रचण्डी-लक्षचण्डी-हवनप्रयोगः समाप्तः ॥

॥ सप्तशती-मन्त्र-हवन-विधानम् ॥

- **शून्यागारे शवस्याऽग्रे श्मशाने च चतुष्पथे ।**
  देवीमन्त्रं जपेद् यस्तु समः सिद्ध्यति साधकः । ॥ १ ॥

- शून्यगृह, शव के आगे, श्मशान और चौराहे पर जो साधक देवी-मन्त्र का जप करता है, उसे वर्ष भर में निश्चय ही सिद्धि प्राप्त होती है ।

- **सूर्योदयं समारभ्य पुनः सूर्योदयान्तरम् ।**
  तावज्जप्त्वा निरातङ्कः सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् । ॥ २ ॥

- जो सूर्योदय से लेकर पुनः सूर्योदय पर्यन्त अर्थात् अहर्निश जप करता है वह समस्त भयों से रहित एवं समस्त सिद्धियाँ प्राप्त करता है ।

- **अर्धरात्रेऽपि मध्याह्ने पुरश्चरणमारभेत् ।**
  सूर्योदयात् समारभ्य यावत्सूर्योदयान्तरम् । ॥ ३ ॥
- **तावज्जप्त्वा निरातङ्को मन्त्रः कल्पद्रुमो भवेत् ।**
  प्रातः कालं सभारभ्य जपेन्मन्त्रं दिनाधि । ॥ ४ ॥

- अर्धरात्रि एवं मध्याह्न में भी जप-पुरश्चरण आरम्भ करे । इसी प्रकार अखण्ड (रात-दिन) जप करने से तथा प्रातःकाल से लेकर सायंकाल तक जप करने से भी साधक समस्त भयो से मुक्त होता है, तथा वह मन्त्र कल्पवृक्ष के समान सभी मनोरथों को पूर्ण करता है ।

- **देवी-रहस्ये मारीचकल्पतन्त्रे च**

- **गर्ज गर्जे ति मन्त्रेण सुरां दद्यात् प्रयत्नतः ।**
  अथवा माक्षिकं दद्यात् विशेषेण सुरेश्वरि । ॥ १ ॥

- हवन के समय **गर्ज गर्ज क्षणं मूढ** ! इस मन्त्र से सुरा (मद्य) या माक्षिक (मधु) का हवन करे ।

- **शूलेने ति चतुर्मन्त्रैर्नाऽहुतिं कश्चिदाचरेत् ।**
  यदि मोहाच्चरेद् वाऽपि तस्य नाशो न संशयः । ॥ २ ॥
- **महालक्ष्मी त्यनेनैव चतुर्धा हवनं चरेत् ।**
  एवं स्तुता सुरैर्दिव्यै र्मन्त्रेणाऽनेन साधकः । ॥ ३ ॥
- **गन्ध-पुष्पाणि संदद्यात् पूजयेज्जगदम्बिकाम् ।**
  ततः कोरपं च मन्त्रेण मसिं दद्यान् महेश्वरि । ॥ ४ ॥

- शक्रादि-स्तुति स्थित **शूलेन पाहि नो देवि०** से **तैरस्मान् रक्ष सर्वतः** पर्यन्त चार मन्त्रों से शाकल की आहुति न दे । यदि कोई साधक मोह वश शाकल की आहुति देता है तो निश्चय ही वह नष्ट हो जाता है, इसमें संशय नहीं । चारों श्लोकों का पाठ कर **ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा** इस मन्त्र से चार आहुति प्रदान करे । साधक **एवं स्तुता सुरेर्दिव्यैः०** इस मन्त्र से गन्ध, पुष्प की आहुति देकर देवी का पूजन करे । हे महेश्वरि ! **ततः कोपं चकारोच्चै०** इस मन्त्र से मसी (कपूर युक्त कज्जल) का हवन करे ।

- **मुखेन काली मन्त्रान्ते रक्तं दद्यात् पशोरपि ।**
  अथवा कपिकाष्ठं च विकल्पेनैव होमयेत् । ॥ ५ ॥

- **मुखेन काली जगृहे०** मन्त्र से अज (बकरा) या महिष (भैंसा) के रक्त से अथवा इनका रक्त न मिलने पर कपिकाष्ठ से हवन करे ।

- **भक्षयन्त्याश्च मनुना दाडिमीकुसुमेन च ।**
  ततोऽहमि ति मन्त्रेण शाकं दद्यात्तथोत्तमम् । ॥ ६ ॥

- **भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान्०** इस मन्त्र से अनार या उसके पुष्प से हवन करे । इसी प्रकार **ततोऽहमखिलं लोके०** इस मन्त्र से शाक (सोआ पालक, चौराई) द्वारा हवन करे ।

- **तदा तदे ति मन्त्रेण सिद्धार्थीनपि होमयेत् ॥**
  तदन्ते हवनं कुर्यात् प्रति श्लोकेन पायसैः । ॥ ७ ॥

- **इत्यं यदा यदा बाधा०** मन्त्र से खीर का हवन करे, एवं एकादश अध्याय के समस्त श्लोकों से भी खीर-मिश्रित शाकल का हवन करे ।

- **छागं तु प्रथमे दद्यात् द्वितीये माहिषं तथा ।**
  तृतीये कारणेनैव सर्वकामार्थसिद्धये । ॥ ८ ॥

- साधक को चाहिए कि प्रथम अध्याय के अन्त में छाग (बकरा) का मांस, द्वितीय अध्याय में महिष (भैंस) का मांस तृतीय अध्याय में भी समस्त अभीष्ट (इच्छित) सिद्धि प्राप्ति के लिए पूर्वोक्त महिष के मांस का हवन करे ।

- **चतुर्थे तूर्यमांसेन लक्ष्मी कामार्थ सिद्धये ।**
  पञ्चमे शशमांसेन मोहनार्थं महेश्वरि । ॥ ९ ॥

- हे महेश्वरि ! लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए चतुर्थ अध्याय में तूर्य (सूखा) मांस तथा मोहन प्रयोग के लिए पंचम अध्याय में शश (खरगोश) के मांस का हवन करे ।

- **षष्ठे च सप्तमे देवि ! खड्गेनैव हुनेत्तथा ।**
  अष्टमे तु महेशानि ! वन्य वाराहकेण च । ॥ १०॥

- हे देवि ! छठे और सातवें अध्याय में खड्ग (गैंडे) के मांस का हवन करे । हे महेश्वरि ! जंगली सूअर के मांस से आठवें अध्याय में हवन करे ।

- **नवमे मार्जार मांसेन दशमे गोधया तथा ।**
  रौद्रे कुक्कुटमांसेन सर्वकामार्थसिद्धये । ॥ ११॥

- समस्त कामना सिद्धि के लिए मार्जार (बिल्ली) के मांस, दशवें अध्याय में गोधा (गोह) के मांस और ग्यारहवें अध्याय में कुक्कुट (मुर्गा) के मांस से हवन करे ।

- **आदित्ये तु महेशानि जम्बुकेन तथैव च ।**
  त्रयोदशेऽश्वमांसेन विधिना साधकोत्तमः । ॥ १२॥

- **इदं रहस्यं परमं न वाच्यं कस्यचित्त्वया ।**
  अभक्ताय न दातव्यं न देयं यस्य कस्यचित् । ॥ १३॥

- हे महेश्वरि ! बारहवें अध्याय में जम्बुक (सियार) का मांस तथा तेरहवें अध्याय में अश्व (घोड़ा) के मांस से हवन करे। साधक इस मांस-हवन के परमतत्त्व को अत्यन्त गुप्त रखें अर्थात् नास्तिक एवं अनाधिकारी से कभी न प्रकट करे। यह मारीचकल्प तन्त्र का अनुभूत प्रयोग केवल परमशाक्तों के लिए ही है।

- **प्रथमे मधुना कुर्याद् द्वितीये गुग्गुलेन च ।**
  तृतीये च प्रकर्तव्यं माहिषेण घृतेन च । ॥ १ ॥

- जो साधक मांस आदि से घृणा करते हैं, उनके लिए- प्रथम अध्याय में मधु से, द्वितीय अध्याय में गुग्गुल से, और तृतीय अध्याय में भैंस के घी से हवन करे।

- **शक्रादीनां स्तुतौ कुर्याद् गन्धा-ऽक्षत- समन्वितैः ।**
  कदली वेक्षुदण्डैश्च बाणषष्ठे च सप्तमे । ॥ २ ॥

- शक्रादि स्तुति वाले चौथे अध्याय में मिले हुए गन्ध, अक्षत से, पाँचवे, छठें एवं सातवें अध्याय में पके केले के टुकड़े या ईख के टुकड़े से हवन करे।

- **रक्तबीजवधे कुर्याद् रक्तचन्दन-मिश्रितम् ।**
  कुर्याद् होमं प्रयत्नेन नानाद्रव्यैः समन्वितम् । ॥ ३ ॥

- रक्तबीज वध रूप आठवे अध्याय में नाना सुगन्धित युक्त लाल चन्दन के चूरे से हवन करे।

- **नवमे दशमे चैव नारायणिस्तुतौ तथा ।**
  गन्ध-पुष्पैः प्रकर्तव्यं पायसेन समन्वितम् । ॥ ४ ॥

- नवम, दशम तथा नारायणि-स्तुतिरूप एकादश अध्याय में पायस (खीर) युक्त गन्ध, पुष्प से हवन करे।

- **शतपत्रैश्च कर्तव्यं गोरोचन-समन्वितम् ।**
  द्वादशे त्रयोदशे च कर्तव्यं तु यथाविधिः । ॥ ५ ॥
- **पंक्षखाद्येन कर्तव्यं रहस्यादि यथाक्रमम् ।**
  एतत्क्रमेण कर्तव्यं द्रव्यं चैव मनोहरम् । ॥ ६ ॥

- द्वादश एवं त्रयोदश अध्याय में गोरोचन मिश्रित शतपत्र (गेंदे के पत्तों) से हवन करे। हवन के समय गरिष्ठ (अधिक) भोजन न करे। हवन के अनन्तर तीनों रहस्यों का यथा विधि पाठ करे और पूजन में सुन्दर एवं उत्तमोत्तम सामग्री भगवती को समर्पित करे।

- **आद्यन्ते च प्रकर्तव्यं पायसं शर्करान्वितम् ।**
  नील-व्रीहि-यवश्चैव होतस्यं च घृताप्लुतम् ।
  अन्यथा कुरुते यस्तु तत्सर्वं निष्फलं भवेत् । ॥ ७ ॥

- आदि और अन्त में नवार्ण मन्त्र जप से शर्करा मिश्रित खीर और घृत मिश्रित तिल, चावल एवं यव (शाकल) से हवन करे। इसके विपरीत जो साधक हवन करता है, उसके समस्त कार्य निष्फल होते हैं।

॥ इति देवीरहस्य-मारीचकल्पतन्त्रोक्तं सप्तशती-मन्त्र -हवन-विधानं समाप्तम् ॥

॥ दुर्गासप्तशती-सम्पुट-पाठ-विधिः ॥

- संपुट तीन प्रकार से लगाए जाते हैं।
- **उदय सम्पुट** **मन्त्रमादौ पुनः श्लोकमन्ते मन्त्रं पुनः पठेत्।**
  पुनर्मन्त्रं पुनः श्लोकं क्रमोऽय मुदये शुभः।
  उदयोत्कर्षलाभाय सम्पुटोऽयमुदाहृतः ॥
  - जिस मन्त्र का सम्पुट पाठ करना हो, उसे पहले पढ़ें, पश्चात् सप्तशती का श्लोक पढ़े। पुनः सम्पुटित मन्त्र का दो बार पाठ कर सप्तशती का श्लोक पढ़े।
  - उदय और उत्कर्ष की प्राप्ति के लिए इस सम्पुट पाठ का प्रयोग होता है।
  - इस सम्पूट का प्रयोग वर्तमान समय में विद्वद्गण द्वारा होता है।
  - उदाहरण **ॐ एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः।**
  - **ऐं मार्कन्डेय उवाच।**
  - **एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः।** दो बार मन्त्र का पाठ करें।

- **अस्त सम्पुट** **मन्त्रमादौ पुनः श्लोकमन्ते मन्त्रविपर्ययम्।**
  - **पुनर्मत्रं पुनः श्लोकं पुनर्मन्त्रविपर्ययम् ॥**
  - **मारणोच्चाटने बन्धे सम्पुटोऽय मुदाहृतः।**
  - पहले सम्पुट मन्त्र का पाठ फिर सप्तशती श्लोक का पाठ तत्पश्चात् सम्पुटित मन्त्र का विपरित पाठ पश्चात् सम्पुटित मन्त्र का सीधा पाठ, तदनन्तर सम्पुटित मन्त्र का पुनः उल्टा पाठ किया जाये तो उसे अस्त सम्पुटित कहते हैं ॥५॥
  - मारण, उच्चाटन एवं कारागार के बन्धन से मुक्ती हेतु इस सम्पुट पाठ का प्रयोग होता है।
  - अस्त सम्पुट तो परमतान्त्रिक दीक्षित साधक को ही करने का अधिकार है अन्य को नहीं।
  - उदाहरण **ॐ एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः।**
  - **ऐं मार्कन्डेय उवाच।**
  - **क्षत्रियर्षभःसुरथःलब्ध्वा वरं देव्या एवं ॐ।**

- **अर्द्ध सम्पुट** कामना मंत्र को सिर्फ एक बार पहले या अंत मे पढ़ा जाता है।
  - उदाहरण **ॐ एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः।**
  - **ऐं मार्कन्डेय उवाच।** अथवा
  - **ॐ ऐं मार्कन्डेय उवाच।**
  - **एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः।**

॥ इति रुद्र यामल तंत्रादि श्री शिव-पार्वती संवादे दुर्गासप्तशती-सम्पुट-पाठविधिः समाप्तः ॥